



भारत सरकार
भारत मौसम विज्ञान विभाग

संस्करण : 19

वर्ष : 2014

मौसम-मंजूषा

भारत मौसम विज्ञान विभाग

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

मौसम भवन, लोदी रोड

नई दिल्ली - 110003



भारत सरकार
भारत मौसम विज्ञान विभाग

अंक-19

वर्ष:2014

मौसम-मंजूषा

भारत मौसम विज्ञान विभाग
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
मौसम भवन, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003

(आवरण पृष्ठ - 12 अक्टूबर 2013 को उपग्रह से प्राप्त 'पेलिन' चक्रवात का चित्र।
श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी द्वारा डिजाइन किया गया।)

मौसम मंजूषा

भारत मौसम विज्ञान विभाग की
विभागीय हिंदी गृह पत्रिका

प्रमुख संरक्षक

डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़
मौसम विज्ञान के महानिदेशक

संरक्षक

श्री अशोक कुमार शर्मा
मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार)

संपादक

सुश्री रेवा शर्मा
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

सह संपादक

श्रीमती सरिता जोशी
हिंदी अधिकारी

टंकण सहयोग

श्री उमाशंकर
उच्च श्रेणी लिपिक

पत्र व्यवहार का पता

संपादक - 'मौसम मंजूषा', भारत मौसम विज्ञान विभाग
हिंदी अनुभाग, कक्ष सं- 612, उपग्रह मौसम भवन
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

मुद्रक

विभागीय मुद्रणालय, पुणे

(मौसम मंजूषा में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकार के हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)



महानिदेशक
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003

महानिदेशक महोदय की कलम से

एक बार फिर मौसम की मंजूषा में आपके हाथों में सौंप रहा हूँ। मौसम मंजूषा में जहाँ रचनाकारों द्वारा प्रस्तुत सुंदर लेख, कविताएँ हिंदी भाषा में उनकी अभिव्यक्ति का माध्यम बन रही हैं वहीं विभिन्न वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर हिंदी में लेख लिखने का जो क्रम प्रारंभ हुआ है, वह प्रशंसनीय है।

हमारी भाषा में हमारी मिट्टी की सुगंध बसती है। भाषा हमारी संस्कृति की संवाहक, संचारक और संप्रेषक होती है। हमारे विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने जिस उत्साह से हिंदी में लेखन कार्य किया है यह वास्तव में बहुत ही गर्व की बात है। मुझे खुशी इस बात की है कि इसके माध्यम से हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य हमें उपलब्ध हो रहा है एवं संचित भी हो रहा है।

मुझे विश्वास है कि आगे भी अधिक से अधिक लेखक हिंदी में लेखन कार्य से जुड़ेंगे। मैं मौसम- मंजूषा के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

लक्ष्मण सिंह

(लक्ष्मण सिंह राठौड़)



मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक
(प्रशासन एवं भंडार)
मौसम भवन, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003

संदेश

हिंदी दिवस के सुअवसर पर मौसम मंजूषा का 19^{वाँ} अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। मुझे इस बात की खुशी है कि विभाग में हिंदी में लेखन कार्य में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। पूरे भारत में फैले मौसम विभाग के विभिन्न कार्यालयों में लोग हिंदी में लेखन कार्य कर रहे हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी लेखों के साथ-साथ समाज के अन्य पहलुओं पर भी लिख रहे हैं। इससे यह पता चलता है कि आपमें राजभाषा हिंदी में लिखने और कार्य करने की क्षमता है। सभी रचनाकारों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके प्रयास से विभागीय हिंदी गृह पत्रिका मौसम-मंजूषा का नया अंक सामने आया है। मेरी कामना है कि आप लोग इसी प्रकार लिखते रहें। यह दूसरों को भी प्रोत्साहन देने का कार्य करेगा।

एक बार फिर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

अशोक कुमार शर्मा

(अशोक कुमार शर्मा)



संपादकीय

मौसम मंजूषा के पिछले अंक से लेकर इस अंक के दरमियान भारत मौसम विज्ञान विभाग के समक्ष जो चुनौतियाँ आईं उनकी हम बात करें तो यही कि निसन्देह उनका सामना साहस के साथ किया गया, जो उपलब्धियाँ हुईं उन्हें राष्ट्र को समर्पित किया गया। प्रकृति के साथ तालमेल बिठा कर चलना कोई सहज काम तो है नहीं, सो पूरी ताकत के साथ प्रकृति के नरम गरम मिजाज़ को समझते हुए आगे चलते रहे। आमतौर पर एक चक्रवात के बाद दूसरे चक्रवात के आने के बीच कुछ अंतराल रहता है। एक चक्रवात के तुरंत बाद वैसी स्थितियाँ नहीं बनती हैं पर पेलिन चक्रवात के बाद तीन चार चक्रवात एक के बाद एक करके आए। विशेष रूप से तूफानी गति से आगे बढ़ते हुए प्रचंड चक्रवात पेलिन (चक्रवाती तूफान) की एक एक हरकत पर पैनी नज़र बनाए रखी, परिणामतः अन्य ऐजेसियों के साथ बेहतर समन्वय हो पाया और बहुमूल्य जानों की रक्षा हुई। यह सब मौसम विज्ञानी की पैनी नज़र और समय पर पहुँचाई गई स्टीक जानकारी की वजह से संभव हो पाया। शायद ऐसी ही किसी स्थिति में पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी का कवि हृदय पुकार उठा होगा, और संदेश दिया होगा:-

बाधाएं आती हैं आएं, घिरें प्रलय की घोर घटाएं
पाँवों के नीचे यदि ज्वाला, निज हाथों में हंसते हंसते
आग लगाकर चलना होगा, कदम मिलाकर चलना होगा ।

इनसैट 3 डी के जरिए भारत मौसम विज्ञान विभाग ने इस दिशा में एक कदम और आगे बढ़ाया। मौसम के पूर्वानुमान से संबंधित तमाम महत्वपूर्ण जानकारियाँ और भी मुस्तैदी से अब मिलने लगी हैं। विकास के पथ पर राष्ट्र को अग्रसर करता, अपने सभी दायित्वों का निर्वाह भली भाँति करता हुआ भारत मौसम विज्ञान विभाग आगे बढ़ रहा है। फिर बात चाहे राष्ट्र की भाषा की ही क्यों न हो। भारत मौसम विज्ञान विभाग के स्थापना दिवस 2014 के अवसर पर *निबंध सागर* के दूसरे अंक का विमोचन माननीय मंत्री महोदय श्री जयपाल रेड्डी जी द्वारा किया गया। *राजभाषा बुलेटिन* नाम से हिंदी न्यूज लैटर का दूसरा अंक भी तैयार किया गया। काव्य

विशेषांक *मौसमी बयार* निकाला। विभाग में राजभाषा के प्रचार प्रसार का सबसे बड़ा उदाहरण मौसम मंजूषा का है। उत्तर, दक्षिण, पूर्व पश्चिम चारों दिशाओं से इस मौसम की मंजूषा को सजाने वाले रचनाकारों के हाथ लेखनी लिए हिंदी में तरह-तरह के लेख रच रहे हैं। *भूकंपीय मानचित्रों का सूक्ष्म वर्गीकरण एवं उपयोगिता*, *उष्णकटिबंधीय चक्रवात* जैसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेख तो शामिल हैं ही साथ ही *पानी से जदोजहद* करते हुए, मानव की बेबस स्थिति बताते हुए भविष्य में आने वाले खतरे से आगाह किया गया है। इस बार पाठकों के लिए एक नया स्तंभ *हमारी साहित्यिक धरोहर* भी आरंभ किया गया है जिसमें हिंदी साहित्य के कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचंद की कहानी प्रस्तुत की गई है। संस्मरण *पग-पग आगे चलता रहा* है तो नाटक भी शामिल किया गया है। कविता तो मौसम की शान रही ही है हमेशा। मौसम की मंजूषा है तो इसमें *झंझावात* भी होंगे, *बिजली* के साथ साथ *बारिश* भी रहेगी; साथ में होंगे *यादों के व्यापारी*। साथ ही साथ *जैसलमेर के मौसम* से रूबरू कराती कविता भी है। विभाग के लिए यह गौरव की बात है कि अब हमारे विभाग के लोग कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने लगे हैं। काफी लोगों ने तो अपनी रचनाएं यूनिकोड फॉन्ट में स्वयं टाइप करके इस पत्रिका के लिए उपलब्ध कराई हैं। फोनेटिक की-बोर्ड के जरिए बहुत ही आसानी से अधिकारी, कर्मचारी काम करने लगे हैं। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसी विषय से जुड़ा सरिता जोशी का लेख *कम्प्यूटर और हिंदी-सुविधाएँ व उपयोग* और लोगों को भी कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। इच्छाशक्ति की ही आवश्यकता है संभावनाएं असीमित हैं। भारत वर्ष को स्वतंत्र कराने में जिन लोगों ने संघर्ष किया अपने प्राण न्योछावर किए वे लोग भले ही देश के भिन्न भिन्न प्रांतों से थे किंतु भारत वर्ष की वाणी, भारत वर्ष की भाषा हिंदी को ही उन्होंने सर माथे पर बिठाया। आज जिस स्वतंत्र भारत में हम सांस ले रहे हैं, इसके लिए इस भाव को दिलो दिमाग में रखते हुए, उन्हें शत शतनमन करते हुए, देश की भाषा हिंदी की शान को बनाए रखना, उसे महिमामंडित करना अब हमारा कर्तव्य है। मौसम मंजूषा इसी दिशा में एक छोटा सा कदम है। नए प्रयोग में साथ मौसम मंजूषा का यह अंक आपके समक्ष है। मौसम की इस मंजूषा में भाँति- भाँति के फूलों की खुशबू आपको महकाएगी, इसी आशा के साथ।

हार्दिक शुभकामनाएँ



(रेवा शर्मा)

अनुक्रमणिका

• वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार		❖ हम कहाँ आ गए	72
❖ भूकम्पीय मानचित्र	11	▪ आसिया आसिफ भट्ट	
▪ अतीन्द्र कुमार शुक्ल		❖ क्या नहीं हूँ मैं	73
❖ नेनो विज्ञान व तकनीक	17	▪ तुलसी राम कार्की	
▪ पोषण लाल देवाँगन		❖ अच्छा है मौन रहूँ	75
❖ उष्णकटिबंधीय चक्रवात	20	▪ जिगा कौल	
▪ राम हरि शर्मा		❖ जीवन में निरंतरता	76
❖ ईश्वरीय कण : हिग्ज बोसोन	30	▪ सुनंदा गाबा	
▪ अशोक कुमार कश्यप		❖ 'मौसम मंजूषा' को सम्मान	78
❖ रेडार बनाम स्टेल्थ		• भाषायी बयार	
▪ रमेश सोहन लाल चौरिशी	34	❖ आइए हिंदी शब्दकोश देखें	79
• मुलाकात		▪ कल्पना श्रीवास्तव	
❖ डॉ. वाई. ई. ए. राज से संवाद	37	❖ कम्प्यूटर और हिंदी	83
▪ रेवा शर्मा, सरिता जोशी		▪ सरिता जोशी	
• साहित्यिक बहार		• सामान्य लेख	
❖ सुहाग की साड़ी	44	❖ पानी की जद्दोजहद	89
▪ मुंशी प्रेमचंद		▪ संजय ओनील शाँ	
• यादों के झरोखे से		❖ महिला सशक्तिकरण	92
❖ कैसे बदलते हैं मौसम	52	▪ एम. आर. कालवे	
▪ आर. के. दत्ता		❖ विकास या विनाश	97
❖ मौसम विभाग- बहुउद्देशीय संस्था	55	▪ पूनम सिंह	
▪ विक्रम सेन		❖ दहेज - जिम्मेदार कौन ?	99
• काव्य फुहार		▪ दिनेश कुशवाहा	
❖ बिजली, मृगतृष्णा, बेमौसम की बारिश, मौसम, कर्णधार, बारिश, वक्त.....	58	• संस्मरण	
▪ ओमप्रकाश सिंह		❖ पग-पग आगे चलता रहा	101
❖ यादों का व्यापारी	64	▪ विक्रम सेन	
▪ देवेंद्र प्रधान		• रहस्य रोमाँच	
❖ जैसलमेर का मौसम	65	❖ ईस्टर द्वीप	104
▪ कालूराम शर्मा		▪ रेवा शर्मा	
❖ कुछ तो गड़बड़झाला है..	67	• नाटक	
▪ आनन्द कुमार शर्मा		❖ यमलोक में जन-आंदोलन	107
❖ संभल जा	68	▪ जुगेन्द्र सिंह	
▪ सुषमा सिंह		❖ हिंदी पखवाड़ा -2013 की रिपोर्ट	113
❖ नानी की कहानी	70	❖ हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी-रिपोर्ट	137
▪ विजय घई		❖ खास खबर	139
		❖ आपकी पाती मिली	145

भारत मौसम विज्ञान विभाग का 139^{वाँ} स्थापना दिवस समारोह- महानिदेशक महोदय के भाषण से लिए गए मुख्य अंश

139^{वाँ} स्थापना दिवस पर आपका हार्दिक स्वागत, अभिनन्दन एवं शुभकामनाएं



वर्ष 2013 की भारत मौसम विज्ञान विभाग की उल्लेखनीय

उपलब्धियों की बात करते हुए मैं यह कहना चाहूँगा कि एक सोच विकसित हुई है, न केवल मौसम विभाग में, बल्कि सभी संस्थानों में जो अंतर विभागीय, तालमेल है उस में बहुत जबरदस्त इजाफा हुआ है। जो बेहतर सुविधाएं हम दे पाए और बेहतर प्रोत्साहन हमें मिला, उसी की परिणति है कि पूर्वानुमान और सेवाओं में गुणात्मक सुधार हुआ।

मान्यवर! मैं विभाग द्वारा दी जा रही सेवाओं के बारे में भी थोड़ा सा विस्तार से कहना चाहूँगा; कि न केवल पूर्वानुमान के क्षेत्र में बल्कि सूचनाओं के आदान-प्रदान का विस्तारण किया गया। जो अन्य विभाग सेवा देते हैं, उनके साथ मिलकर हमने सेवाओं में भी गुणात्मक सुधार किया है। अभी हम 205 नगरों के लिए तात्कालिक अनुमान दे रहे हैं। 200 नगरों के लिए पाँच दिन का पूर्वानुमान और 87 पर्यटन स्थलों के लिए अलग से ऐसी सूचना दी जाती है ताकि पर्यटक उसका लाभ उठा सकें। सेना और अर्द्ध सैनिक बलों के विभिन्न प्रकल्पों के लिए हम उचित समय पर उनको जानकारी देते रहते हैं।

मैं उल्लेख करना चाहूँगा कि जम्मू कश्मीर में होने वाली श्री अमरनाथ जी यात्रा का जो बहुत कठिन यात्रा है। जम्मू कश्मीर सरकार के सहयोग से हम बहुत सटीक जानकारी देते हैं बल्कि हमने पूरी व्यवस्था स्थापित की है, जिसमें उनको वास्तविक समय के आधार पर सूचना दी जाती है ताकि किसी प्रकार की जान-माल की क्षति न हो। गत वर्ष हमने चार धाम की यात्रा और कुंभ मेले के लिए भी इस तरह का पूर्वानुमान देना शुरू किया।

तीन विशेष सेवाएं नागरिक उड्डयन, कृषि मौसम और जल मौसम के क्षेत्र में हमने बहुत सुधार किया। खास तौर पर नए उत्पाद लिए। कृषि मौसम विज्ञान के क्षेत्र में इसरो और स्पेस एप्लिकेशन सेंटर के सहयोग से बहुत नए उत्पाद बनाए। प्रौद्योगिक फसल उत्पाद पूर्वानुमान किए एवं कृषि विभाग को उपलब्ध कराए जिस पर आगे कार्रवाई होती है। जल मौसम विज्ञान (हाइड्रोमीटरियोलॉजी) में सब-रिवर बेसिन पर दामोदर, सतलुज, व्यास इत्यादि नदियों के लिए हमने मात्रात्मक वर्षण पूर्वानुमान (क्वांटिटेटिव प्रिसिपिटेशन फोरकास्ट) देना शुरू किया।

मान्यवर! आपने नोट किया होगा कि नागरिक उड्डयन के क्षेत्र में फिलहाल हम 74 हवाई अड्डों के लिए अपनी सेवाएं देते हैं। गत वर्ष कोहरे के बावजूद सटीक प्रेक्षण और सटीक पूर्वानुमान सेवा की वजह से दिए गए पूर्वानुमान के कारण कोहरे की वजह से हवाई जहाजों के रास्ते कम से कम बदले गए यानि कम से कम डायवर्जन हुए। पर्यावरणीय मूल्यांकन प्रभाव (एनवॉयरमेंटल एसेसमेंट इम्पैक्ट) बहुत बड़ी गतिविधि है। इसके अंतर्गत थर्मल पॉवर, इंडस्ट्रियल, कोल माइनिंग और बाकी माइनिंग आदि के लिए 1700 प्रोजेक्टों का आकलन किया गया।

वायु गुणवत्ता निगरानी पूर्वानुमान (एयर क्वालिटी मॉनीटरिंग फोरकास्ट) सेवा भी प्रदान की जाती है। अभी हम दिल्ली और पुणे के लिए यह सेवा दे रहे हैं। इस सेवा में हम और भी सुधार करेंगे। जहाँ तक मूलभूत प्रणाली विकास (इन्फ्रास्ट्रक्चर सिस्टम डेवलपमेंट) का सवाल है हमने अपने ऑब्जर्विंग सिस्टम अर्थात् प्रेक्षणीय प्रणाली को चुस्त दुरुस्त किया। अभी माननीय मंत्री महोदय ने 3 डी पर आधारित, इनसैट 3 डी मौसम विज्ञानिक आँकड़ा प्रसंस्करण प्रणाली (मीटियोरोलॉजिकल डाटा रिसीविंग प्रोसेसिंग सिस्टम) को देश को समर्पित किया। इनसैट 3 डी के लॉच के पश्चात इस प्रणाली को प्रचालन में लाया गया।

में यहाँ पर अंतरिक्ष विभाग और इसरो के सभी इंजीनीयर्स और वैज्ञानिकों को धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके साथ हमने कंधे से कंधा मिलाकर काम किया और बहुत ही कम समय में इसे ऑपरेशनलाइज कर दिया। इसके अलावा हमने 16 जी पी एस आधारित उपरितन वायु प्रणाली स्थापित की।

इस समय हमारे 16 डापलर रेडार काम कर ही रहे हैं। भोपाल में डॉपलर रेडार स्थापित कर दिया है। बाकी 03 रेडार कराईकल, पारादीप और गोवा में लगाने का काम तेजी से चल रहा है। मान्यवर! गुणवत्ता और क्वालिटी कंट्रोल बेहतर रखने के लिए पिछले वर्ष 05 अनुभागों का ISO सर्टिफिकेशन किया गया। बाकी अनुभागों को करने का कार्य जारी है। संचार व्यवस्था हमारी रीढ़ है और उसको चुस्त दुरुस्त करने के लिए पुणे में VIS कपलेट सिस्टम, जो दिल्ली में लगे सिस्टम का ही मिरर इमेज है, उसे स्थापित किया।

भूकम्प विज्ञान में हमने भूकंपीय आपदा (सिस्मिक हैज़र्ड), सूक्ष्मवर्गीकरण मानचित्र

(माइक्रोजोनेशन मैप), दिल्ली और राजधानी परिसर में 1:10.000 स्केल पर कार्य पूरा किया। एकीकृत राष्ट्रीय भूकंपीय एवं जी पी एस संजाल आँकड़ा केंद्र (इंटीग्रेटेड नैशनल सिस्मिक एंड जी पी एस नेटवर्क डाटा सेंटर) की स्थापना की।

खास तौर पर मैं यह कहना चाहूँगा कि भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम सेवा तो प्रदान करता ही है लेकिन प्रचालनात्मक शोध (ऑपरेशनल रिसर्च) पर भी उसका पूरा ध्यान रहता है। मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि गत वर्ष 108 शोध पत्र लिखे गए। हमारे वैज्ञानिकों के ये शोध पत्र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में प्रकाशित हुए। साथ ही दर्जनों वैज्ञानिक रिपोर्टें, मोनोग्राफ, पुस्तकें लिखीं गईं जिसमें से कुछ का विमोचन माननीय मंत्री जी से अभी कराएंगे। गत वर्ष हमारे लिए एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने का वर्ष रहा जिसमें खास तौर पर WMO की विभिन्न कमेटियों में और रिजनल एसोसिएशन में भी हमारे 14 मौसम विज्ञानियों को अध्यक्ष, कोऑर्डिनेटर, एक्सपर्ट मैनबर के रूप में चुना गया।

थोड़ा सा प्रकाश मैं भविष्य की योजनाओं पर भी डालना चाहूँगा। जैसा कि विदित है कि इस बार करीब 12 सौ करोड़ रूपए की पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने समेकित योजना बनाई है जिसमें हम अपनी प्रेक्षण प्रणाली को और चुस्त दुरुस्त बनाएंगे। खास तौर पर हम पहाड़ी क्षेत्रों के लिए कार्य कर रहे हैं।

पर्वतीय मौसम और जलवायु निगरानी और पूर्वानुमान के लिए एकीकृत हिमालयी मौसम विज्ञान कार्यक्रम (इंटीग्रेटेड हिमालयन मीटीयोरोलॉजी प्रोग्राम) बनाया गया। पहाड़ी क्षेत्रों में नेटवर्क कमजोर था। अतः पहाड़ी क्षेत्रों में प्रेक्षण प्रणाली (ऑब्जरविंग सिस्टम) को चुस्त दुरुस्त किया जा रहा है। विशेष रूप से पूर्वोत्तर राज्यों के लिए अलग से काम किया जा रहा है जो प्रगति पर है।

कृषि मौसम सेवा पर नए सिरे से कार्य कर रहे हैं। ग्रामीण कृषि मौसम सेवा को ब्लॉक स्तर पर ले जा रहे हैं। अभी तक जिला स्तर पर सेवा दे रहे हैं। नए सिरे से इसे ब्लॉक लेवल पर पूर्वानुमान देने के लिए तैयारी कर रहे हैं। उसके लिए हमने तैयारी कर ली है। कुल मिलाकर हमारा यह लक्ष्य है कि ज्यादा प्रयास मौसम पूर्वानुमान के विकास में ही करना है।

हमें मध्यम अवधि पूर्वानुमान को तो बेहतर करना ही है साथ ही विस्तारित पूर्वानुमान (एक्सटेंडेड रेंज फोरकास्ट) को और व्यवस्थित करके ऋतु पूर्वानुमान (सीजनल फोरकास्ट) को युग्मित पूर्वानुमान प्रणाली गतिकीय निदर्श (कपल्ड फोरकास्ट सिस्टम डायनमिकल मॉडल) के माध्यम से पूरा करने की योजना भी है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके निर्देश में और सचिव महोदय के मार्गदर्शन में हम यह कार्य पूरा कर पाएंगे।

जय हिंद

भूकम्पीय मानचित्रों का सूक्ष्म वर्गीकरण एवं उपयोगिता

वैज्ञानिक व
तकनीकी
बौछार

-डॉ अतीन्द्र कुमार शुक्ल
वैज्ञानिक “एफ” (सेवानिवृत्त)
प्रमुख-भूकंप विज्ञान केंद्र/
रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

भारतीय भूभाग विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील है। उन आपदाओं में चक्रवात, बाढ़, सूखा, एवं भूकम्प मुख्य प्राकृतिक आपदाएं हैं। करीब 59 प्रतिशत भूभाग भूकंप, 8 प्रतिशत भूभाग चक्रवात एवं 5 प्रतिशत भूभाग बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील है। इस समय उपलब्ध आकड़ों के अनुसार इन सभी आपदाओं में भूकंप द्वारा जान-माल का नुकसान सबसे ज्यादा हुआ है। 1993 में लातूर (महाराष्ट्र) में आए भूकंप से करीब 10,000 लोग मारे गए तथा 1997 में जबलपुर (मध्य प्रदेश) में आए भूकंप से 39 लोग मारे गए तथा करीब 8267 भवनों को नुकसान हुआ। इसी प्रकार जनवरी 2001 में भुज (गुजरात) में आए भूकंप से करीब 13805 लोग मारे गए तथा करीब 1205,198 भवनों को क्षति पहुँची।

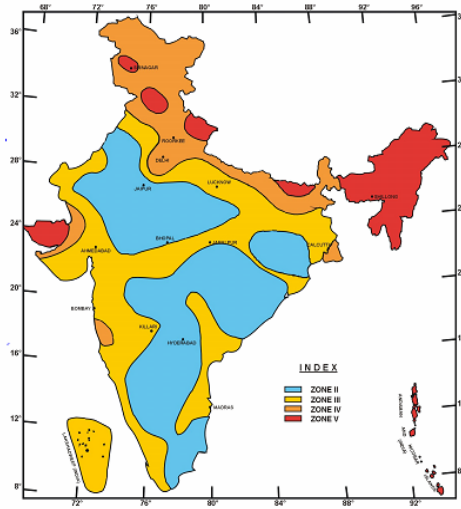
भूकंप की दृष्टि से पूरा हिमालय क्षेत्र 8.0 परिमाण (Magnitude) के भूकंप के प्रति संवेदनशील माना जाता है। पिछली सदी में इस भूभाग में पाँच भूकंप 8.0 से ज्यादा परिमाण के आए हैं। पिछले कुछ दशकों की अगर बात करें तो भारत एवं उसके आस पास के भूभाग में तो, 6 भूकंप 6.0 परिमाण या उससे ज्यादा के भूकंप में भारतीय भूभाग को जान माल का काफी नुकसान हुआ। इन भूकंपों की वजह से इन क्षेत्रों में रहने वाले लोग हमेशा भय में रहते प्रतीत होते हैं जिससे हमारे देश की प्रगति भी प्रभावित होती है।

यद्यपि भूकम्पीय घटना लगातार नहीं होती हैं, किन्तु अचानक आए भूकंप से काफी मात्रा में ऊर्जा उत्सर्जित होने की वजह से कुछ ही क्षणों में जान माल का काफी नुकसान हो जाता है। भूकंप से उत्सर्जित ऊर्जा भूकम्पीय तरंगों के माध्यम से चारों तरफ प्रवाहित होती है, जो भूभाग को त्वरण गति एवं विस्थापन प्रदान करने में सक्षम होती है। भूभाग के इस प्रकार से गतिमान होने की वजह से धरातल पर स्थित भवनों में भी त्वरण गति एवं विस्थापन होता है और अगर भवन इस त्वरण गति एवं विस्थापन को सहने में सक्षम नहीं हुए तो उनके ध्वस्त होने की संभावना बनती है, तथा उन भवनों में रहने वाले लोगों की क्षति एवं मृत्यु होने की आशंका हो जाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है, भूकंप से कोई जान का नुकसान नहीं होता है बल्कि भूकंप के प्रभाव से भवनों को होने वाली क्षति तथा उनके ध्वस्त हो जाने से नुकसान होता है। यह भी विदित ही है कि अभी तक

ऐसी कोई विधा ज्ञात नहीं हो सकी है, जिससे भूकंप की सटीक भविष्यवाणी एवं पूर्वानुमान सूचना प्रणाली विकसित की जा सके। अतः स्पष्ट है कि अगर हमारे भवन इस भूकंप के प्रभाव को सहने में सक्षम हो सकें, तो लोगों की जान का नुकसान काफी हद तक रोका जा सकता है।

अतः इन बताई गई बातों को ध्यान में रखते हुए, भूकंप मानचित्रों के निर्माण का प्रादुर्भाव हुआ और उनके अनुसार भवन निर्माण हेतु कारक तय किए गए। इन मानचित्रों में पहले आए भूकंपों और विभिन्न क्षेत्रों में इनका प्रभाव, विभिन्न भू-भागों में उपस्थित भूकंप पैदा करने में सक्षम अप्रभंश, एवं भौगोलिक परिस्थिति आदि का ध्यान रखते हुए भारतीय भूभाग को विभिन्न परिक्षेत्रों या अंचलों में बाँटा जाता है। विभिन्न परिक्षेत्रों में भूकंप के संभावित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए हर परिक्षेत्र के लिए एक परिक्षेत्र फैक्टर निर्धारित किया जाता है, जिसका भवन बनाते समय उपयोग किया जाता है। इस परिक्षेत्र फैक्टर को ध्यान में रख कर बनाए गए भवन भूकंप-रोधी भवन की श्रेणी में आते हैं, तथा उम्मीद की जाती है कि ऐसे भवन भूकंप के आने पर उसके प्रभाव या झटकों को सहने में सक्षम होंगे और कम से कम उन्हें इतना नुकसान नहीं होगा कि वे ध्वस्त हों एवं इन भवनों में रहने वालों की जान को नुकसान हो।

हमारे देश में ऐसा पहला भूकम्पीय मानचित्र 1935 में भारतीय भूसर्वेक्षण विभाग के द्वारा बनाया गया था। इस मानचित्र के अनुसार भारतीय भू-भाग को संवेदनशीलता के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया था। जैसा कि ऊपर पहले भी उल्लेख किया गया है कि ऐसे मानचित्र, पहले आए भूकंप, उनके द्वारा हुई क्षति तथा ज्ञात अप्रभंशों के आधार पर बनाए जाते हैं। अतः जब भी कोई बड़े परिमाण का भूकंप आता है, एवं अन्य कोई नयी जानकारी जैसे नए अप्रभंश ज्ञात होते हैं, इन मानचित्रों की पुनः समीक्षा की जाती है तथा नए मानचित्र का प्रादुर्भाव होता है। वर्तमान में यह कार्य भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा विभिन्न विभागों से प्राप्त आँकड़ों जैसे कि भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा प्रदत्त भूकम्पीय आकड़े, भू सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रदत्त अप्रभंश एवं पहले आए भूकंपों द्वारा हुए नुकसान इत्यादि से संबंधित आँकड़ों को संगठित करके किया जाता है। विभिन्न विभागों के सहयोग से ऐसा मानचित्र बनाने का एवं इससे भवन निर्माण हेतु कोड के रूप में विकसित करने का सर्वप्रथम प्रयास 1962 में भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा किया गया जिसे भूकंप डिजाइन कोड 131893: 1962 में प्रकाशित किया गया। इस मानचित्र की पुनः 1966, 1970, 1984 एवं 2002 में समीक्षा की गई, जिसके फलस्वरूप वर्तमान में भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित मानचित्र IS 1093 (भाग-1): 2002 जिसे चित्र-1 में दिखाया गया है, प्रचलन में है। इस मानचित्र के अनुसार भारतीय भूभाग को चार परिक्षेत्रों (परिक्षेत्र II, III, IV एवं V) में इनकी भूकम्पीय संवेदना के आधार पर बाँटा गया है।



चित्र-1: भूकम्पीय जोनिंग मानचित्र (IS 1093 (भाग-1): 2002)

परिक्षेत्र v में आने वाले भूभाग सबसे ज्यादा संवेदनशील हैं, जहाँ भूकम्पों की आवृत्ति एवं सम्भावित भूकम्प का परिमाण ज्यादा होता है। इसी प्रकार परिक्षेत्र-ii के भूकम्प की आवृत्ति एवं संभावित भूकम्प का परिमाण सबसे कम होता है। विभिन्न परिक्षेत्रों में आने वाले मुख्य भू-भाग निम्नलिखित हैं।

परिक्षेत्र-V: इस परिक्षेत्र में भारत का करीब 12 प्रतिशत भूभाग जिससे जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, गुजरात के कच्छ आदि के कुछ भाग एवं पूरा उत्तर-पूर्वी भाग, अण्डमान निकोबार केंद्र शासित क्षेत्र आते हैं। इस परिक्षेत्र के लिए परिक्षेत्र फैक्टर 0.36 दिया गया है, जिसे इस क्षेत्र में भूकम्प रोधी भवनों को बनाते समय भूकंप द्वारा संभावित बल की गणना के निर्धारण में किया जाता है।

परिक्षेत्र-IV: इस परिक्षेत्र में भारत का करीब 18% भूभाग, जिसमें जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, बिहार, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, गुजरात, उत्तर प्रदेश के कुछ भाग एवं राष्ट्रीय राजधानी परिक्षेत्र का क्षेत्र आता है। इस परिक्षेत्र का परिक्षेत्र फैक्टर 0.24 दिया गया है, जिसे इस क्षेत्र में भूकंप रोधी भवनों को बनाते समय भूकंप द्वारा संभावित बल की गणना के निर्धारण में किया जाता है।

परिक्षेत्र-III: इस परिक्षेत्र में भारत का करीब 27 प्रतिशत भूभाग जिसमें कश्मीर, पश्चिमी हिमालय के कुछ भाग सम्मिलित हैं। इस परिक्षेत्र का परिक्षेत्र फैक्टर 0.16 निर्धारित किया गया है, जिसका उपयोग इस क्षेत्र में भूकंप रोधी भवनों के बनाते समय भूकंप द्वारा संभावित बल की गणना के निर्धारण में किया जाता है।

परिक्षेत्र-II: इस परिक्षेत्र में भारत का करीब 43 प्रतिशत बाकी का भूभाग आता है। इस परिक्षेत्र के लिए 0.10 परिक्षेत्र फैक्टर निर्धारित किया गया है, जिसका उपयोग इस क्षेत्र में भूकम्परोधी भवनों के निर्माण में भूकंप द्वारा संभावित बल की गणना में किया जाता है।

इस समय जो प्रचलित भूकम्पीय मानचित्र हैं उनकी अपनी कुछ सीमाएं हैं। जैसे वर्तमान मानचित्र इसकी जानकारी नहीं देता है कि किसी भूभाग में भूकंप के आने या उसमें प्रभावित बल की भविष्य में क्या संभाव्यता (probability) है। पहले आए भूकम्पों में ऐसा देखा गया है कि जिस मिट्टी की सतह पर भवन निर्माण किया गया है उसकी प्रकृति का बहुत ज्यादा प्रभाव भवन पर पड़ता है। भूकंप से आने वाली तरंगें जब इस मिट्टी की सतह से गुजरती हैं तो ऐसा देखा गया है कि इनका परिमाण बढ़ जाता है, जिससे कुछ तरंगें अधिक प्रभावशाली हो जाती हैं। जैसा कि 2001 में आए भूकंप जिसका केंद्र बिन्दु कच्छ क्षेत्र में था किन्तु इसका प्रभाव करीब 150-200 कि.मी. दूर अहमदाबाद शहर में देखा गया, जहाँ कुछ खास जगहों पर बने भवन ध्वस्त हो गए जबकि कच्छ से अहमदाबाद के बीच में कुछ जगहों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अहमदाबाद शहर में किसी एक क्षेत्र में भी कुछ भवनों इमारतों आदि को नुकसान नहीं पहुँचा जबकि उसी तकनीकी प्रक्रिया से बनाए गए पास के भवन ध्वस्त हो गए। ऐसा ही प्रभाव 1997 में आए जबलपुर के भूकंप एवं विश्व में आए अन्य भूकंपों में देखा गया है। अतः भवन के बल का निर्धारण करते वक्त यह आवश्यक है कि भवन के नीचे की मिट्टी खासकर करीब 30-40 मीटर की सतह पर ध्यान रखा जाए। चूँकि वर्तमान में प्रचलित मानचित्र रीजनल स्केल में बना है एवं काफी बड़े भूभाग को मात्र कुछ भागों में ही बाँटता है। अतः यह मानचित्र स्थानीय मिट्टी की सतह का प्रभाव सीधे तौर पर समाहित करने में सक्षम नहीं है। यद्यपि कुछ सामान्य उपाय इसके प्रभाव को समाहित करने हेतु, निर्धारित वर्तमान कोड में दिए गए हैं।

वर्तमान मानचित्र की पहली सीमा को दूर करने के लिए संभावित सम्भाव्यता (probability) के आधार पर रीजनल स्केल पर मानचित्र बनाने का प्रयास जारी है। स्थानीय मिट्टी के सतह की प्रकृति जो विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग तरह की होती है, जैसे कि अगर उदाहरण के तौर पर दिल्ली के भूभाग की बात करें तो कहीं पर पथरीली सतह परिलक्षित होती है और कहीं पर मिट्टी की सतह करीब 300 मीटर से भी ज्यादा देखी जा सकती है। अगर इसका और सूक्ष्म विश्लेषण किया जाए तो, राष्ट्रपति भवन जो पथरीली सतह पर निर्मित है, किन्तु कुछेक कि.मी. की दूरी पर स्थित इंडिया गेट 100 मीटर से ज्यादा मिट्टी की सतह पर स्थित है। अतः इन दोनों स्थानों पर बने भवनों पर भूकंप का प्रभाव अलग होगा। इन उदाहरणों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे मानचित्र बनाए जाएं जो इस प्रकार की मिट्टी की सतह के परिवर्तन को समाहित कर सके। ऐसा भूकंप मानचित्रों के सूक्ष्म वर्गीकरण से संभव हो सकता है। हमारे देश में इस कार्य की अभी शुरुआत ही हुई है। भूकम्पीय मानचित्रों के सूक्ष्म वर्गीकरण जो किसी आबादी वाले क्षेत्र, शहर के लिए बनाए जाते हैं, वर्तमान में प्रचलित भूकम्पीय मानचित्र की सीमाओं का दूर करने में सक्षम होंगे। इस प्रकार के मानचित्र विभिन्न प्रकार की संभावित सम्भाव्यता

(probability) एवं स्थानीय मिट्टी की सतह के विभिन्न गुणों का अध्ययन करके बनाए जाते हैं। संभावित सम्भाव्यता (probability) के अध्ययन हेतु कई सौ वर्षों में आए भूकंप के आँकड़े, उस शहर को प्रभावित करने वाले भूकंपीय अप्रभंश उनकी प्रकृति आदि को ध्यान में रखकर सांख्यिकीय गणना के आधार पर किया जाता है।

स्थानीय मिट्टी की सतह की प्रकृति के अध्ययन हेतु, काफी पास-पास विभिन्न प्रकार के जियोटेक्निकल, जियोफिजिकल, सिस्मोलॉजिकल जाँच करके आँकड़े इकट्ठे किए जाते हैं, जिनके आधार पर स्थानीय मिट्टी की सतह की बनावट, प्रकृति, इत्यादि का अध्ययन कर हर स्थानीय जगह का एक स्थानीय सतही मिट्टी का गणितीय मॉडल तैयार किया जाता है। इस माडल के आधार पर गणितीय विधि द्वारा इसमें से गुजरने वाली भूकंपीय तरंगें कैसे प्रभावित होंगी, का अध्ययन कर यह पता लगाया जाता है कि जब ये तरंगें सतह पर पहुँच कर भवनों से सम्पर्क करने की स्थिति में होंगी तो इनकी ऊर्जा, किसी खास आवृत्ति में कितनी बढ़ गयी होगी। इसके अलावा हर मिट्टी की सतह की अपनी प्रदत्त आवृत्ति होती है, इसी प्रकार भवन की भी अपनी आवृत्ति होती है। मिट्टी की सतह की आवृत्ति एवं उसमें स्थित भवन की आवृत्ति एक होने पर अनुनाद की स्थिति पैदा हो जाती है, जिससे तरंगों का परिमाण और ज्यादा बढ़ जाता है। सूक्ष्म वर्गीकरण इस प्रकृति का भी ज्ञान कराता है। इस अनुनाद की स्थिति को भी भवन निर्माण करते समय ध्यान में रखना आवश्यक है। ऐसी स्थिति भी हो सकती है कि किसी स्थान पर एक मंजिल भवन में अनुनाद की स्थिति सम्भव हो जिसकी वजह से इस विशिष्ट स्थान पर एक मंजिला भवन बनाना सुरक्षित नहीं होगा, किंतु अगर इसी स्थान पर बहु मंजिल भवन बनाया जाए तो वह ज्यादा सुरक्षित होगा। इसके अलावा भी कई ऐसे अवयव हैं जो सूक्ष्म वर्गीकरण मानचित्र में प्रदत्त किए जाते हैं, जिनका उपयोग कर इन्जीनियर्स, वास्तुविद, एक अच्छा भूकंप रोधी भवन निर्माण कर सकते हैं।

इन सूक्ष्म वर्गीकरण मानचित्रों का उपयोग भूमि के उपयोग के पूर्व निर्धारण में भी किया जाता है। जैसे अति विशिष्ट प्रयोग में लाए जाने वाले भवन जैसे कि स्कूल, चिकित्सालय, इत्यादि के भवनों के बनाए जाने की जगह पूर्व निर्धारित की जा सकती है। इन मानचित्रों का उपयोग वर्तमान में बनी इमारतों पर भविष्य में आने वाले भूकंप का क्या प्रभाव होगा, की गणना करने और अगर ये भवन मानदण्ड पर सही नहीं उतरते तो उनमें सुधार करके उपयोग किया जा सकता है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग इस कार्य में पिछले कई वर्षों, खास कर वर्ष 2004 में भूकंप जोखिम मूल्यांकन केंद्र की स्थापना के बाद से संलग्न है। साथ ही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का भूकंप सूक्ष्म वर्गीकरण मानचित्र, विभिन्न विभागों के पास उपलब्ध आँकड़े एवं सहयोग से 1:50000 स्केल में 2005 में पूरा किया जा चुका है, जिनका अनावरण तत्कालीन माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा अक्टूबर 2005 में किया गया। तदुपरांत एक बहुत ही दुरुह कार्य भारत वर्ष में पहली बार इसी क्षेत्र का 1:10000 स्केल में बनाने का कार्य शुरू किया गया जो अब पूरा होने जा रहा है। इस कार्य के लिए इस स्केल पर बेस मैप एवं भूगर्भीय मैप क्रमशः सर्वेक्षण विभाग एवं भूगर्भीय सर्वेक्षण के सहयोग से बनाये गए हैं। तदुपरांत भूगर्भीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए करीब 500 स्थानों पर विभिन्न प्रकार के परीक्षण किए गए हैं, जिनमें 449 स्थानों पर कम से कम 30 मीटर की गहराई तक 1.5 मीटर के अन्तराल में मिट्टी के नमूने एकत्र करके उन की प्रकृति का प्रयोगशाला में अध्ययन करना शामिल हैं। इन सभी परीक्षाओं के आधार राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र हेतु करीब 40 प्रकार के मानचित्र बनाए गए हैं। इन मानचित्रों का उपयोग, इस क्षेत्र के लिए नए भवन कोड बनाने, वर्तमान में स्थित भवनों के भविष्य में संभावित भूकंप का प्रभाव एवं उनमें सुधार करने तथा भूमि का विभिन्न कार्यों हेतु सुचारु रूप से निर्धारण कार्यों के लिए किया जाएगा।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के अलावा भूकंपीय मानचित्रों का सूक्ष्मीकरण का कार्य भारतीय भूगर्भीय सर्वेक्षण विभाग तथा विभिन्न प्रौद्योगिक संस्थानों जैसे आई आई टी खड़गपुर, रुड़की, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरु के द्वारा भी किया जा रहा है। भारत मौसम विज्ञान विभाग का भूकंप जोखिम मूल्यांकन केंद्र उन स्थानों द्वारा किए जा रहे सूक्ष्मीकरण के कार्यों में भी सहयोग प्रदान कर रहा है। अभी तक, जबलपुर, गुवाहाटी, बंगलुरु सिक्किम आदि के भूकंपीय मानचित्रों के सूक्ष्मीकरण का कार्य पूरा किया जा चुका है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने करीब 30 शहरों के भूकंपीय मानचित्रों के सूक्ष्मीकरण का कार्य करना शुरू किया है, जिसे बारहवीं पंचवर्षीय योजना के अंदर पूरा किया जाना है।

कुल मिलाकर देखें तो ऊपर बताई गई सभी बातों का, किए जा रहे सभी महत् कार्यों का तमाम अनुसंधानों का, नए नए माइक्रोजोनेशन मानचित्रों को तैयार करने का उद्देश्य यही है कि प्रकृति के इस भूकंपीय प्रकोप से, इस कहर से, मानव मात्र को बचाया जा सके। उसके जीवन की रक्षा की जा सके। जानमाल की हानि को किस प्रकार कम से कम किया जा सके। प्राकृतिक आपदाएं तो आती रही हैं और आगे भी आएंगी ही, किंतु एक ऐसी ढाल को तैयार करने का कार्य भी साथ-साथ चल रहा है जिससे मानव अपनी रक्षा कर सके। भूकंपरोधी सुरक्षित इमारतें, घरों का निर्माण इस दिशा में किए जा रहे कारगर उपाय हैं। विध्वंस है, तो निर्माण का नीड़ भी मनुष्य अपने अदम्य साहस से तैयार करता है। बिना हार माने अपने शोध कार्य में लगातार प्रयासरत है। किसी शायर ने सही कहा है:-

हादसों की जद पे है तो क्या मुस्कुराना छोड़ दें

जलजलों के खौफ से क्या घर बनाना छोड़ दें।

नेनो विज्ञान व तकनीक

वैज्ञानिक व
तकनीकी
बौद्धि

-पोषण लाल देवांगन
सहायक मौसम विज्ञानी
मौसम केंद्र - रायपुर

एक अनुमान के अनुसार समय की प्रगति के साथ वस्तुओं की गुणवत्ता वर्तमान वस्तुओं की गुणवत्ता का लगभग हजार गुना से भी अधिक हो सकती है। कहना न होगा कि भविष्य में ऐसी युक्तियां, मशीनें, औजार या उपकरण आदि दैनिक उपयोग में प्रयुक्त होंगी जिसकी उपयोगिता जानकर आप दंग रह जाएंगे। जैसे कि पतले धागे की मोटाई वाले तन्तुओं से रेलगाड़ी के डिब्बे को उठाया जाना, 1 या 2 मि.मी. मोटाई वाली पट्टियों पर आधारित पुल का निर्माण किया जाना, मोटर साइकल के आकार के इंजन से पूरी रेलगाड़ी का प्रचालन, विश्व के शहरों के मध्य आवागमन मिनटों में सीमित हो जाना, कागज के तुल्य मोटाई वाली दीवारों से बांध बनाया जाना आदि। ऐसे विश्व की कल्पना मात्र ही रोमांचकारी है तब प्रत्यक्ष रूप में इन्हें देखने में न जाने कैसा आनन्द प्राप्त होगा। वर्तमान में उपयोग में आ रहे पदार्थ जैसे स्टील, पॉलीथीन, चमक वाले वस्त्र आदि भी कुछ हद तक इन्हीं उत्पादों के प्रारूप हैं। नए युग में इस चमत्कारी व जादुई लक्ष्य प्राप्ति को सम्भव करने की क्षमता रखने वाली पद्धति का नाम है नेनो -तकनीक।

नेनो का ग्रीक में अर्थ है “बौना” 1 एक मीटर के एक अरबवें भाग (10^{-9}) को एक नेनोमीटर कहा जाता है जो मानव बाल की मोटाई का लगभग एक सौ हजारवें भाग के तुल्य होता है या अनुमानतः यदि कांच की गोली को एक नेनोमीटर आकार का मान लिया जाए तो एक मीटर का आकार सम्पूर्ण पृथ्वी के बराबर होगा। विज्ञान में 1 से 100 नेनोमीटर परास की कणों को नेनो स्केल में माना जाता है। नेनो तकनीक का अर्थ है अणु, परमाणु या सुपर परमाण्विक स्केल पर पदार्थों का निरूपण। अतएव नेनो स्केल के अत्यंत सूक्ष्म कणों के अध्ययन व अनुप्रयोग को नेनोविज्ञान व नेनो तकनीक कहा जाता है तथा इसी अवधारणा का उपयोग विज्ञान की अन्य शाखाओं में भी किया जाता है। नेनोमीटर के आकार को इस प्रकार भी समझा जा सकता है- 1. एक इंच में 25,400,000 नेनोमीटर तथा 2. समाचार पत्र की मोटाई लगभग 1,00,000 नेनोमीटर होती है।

नेनोविज्ञान व नेनो तकनीक की अवधारणा का आरंभ सुप्रसिद्ध भौतिकविद् रिचर्ड फैनमेन द्वारा दिसम्बर 1959 में अमेरिकन भौतिकी समिति द्वारा कैलिफोर्निया तकनीकी संस्थान में आयोजित सेमीनार में “देयर इज प्लेन्टी आफ रूम एट बॉटम” विषय पर वक्तव्य में हुआ था। इसमें रिचर्ड

फैनमेन ने वैज्ञानिकों को परमाणु व अणुओं को परिवर्तित व नियंत्रित करने में सक्षमता की विधि का वर्णन किया था। इसके लगभग एक दशक बाद प्रोफेसर नोरियो तेनीगुची द्वारा वर्ष 1981 में नेनो-तकनीकी नामक शब्द की प्रस्तुति की गई। तत्पश्चात् अत्यंत सूक्ष्म कणों को देखे व परखे जा सकने योग्य स्कैनिंग टनलिंग सूक्ष्मदर्शी व एटमिक फोर्स सूक्ष्मदर्शी के अनुसंधान (वर्ष 1981) के साथ ही नेनो तकनीक आरंभ किया गया। इस सूक्ष्मदर्शी ने विशेष परमाणु एवं बन्धनों को देख सकने की क्षमता प्रदान की जिसका उपयोग वर्ष 1989 में विशेष परमाणुओं को निरूपित करने में सफलतापूर्वक किया गया। इस सूक्ष्मदर्शी के अनुसंधानकर्ता आई.बी.एम. जुरीख रिसर्च लेबोरेटरी के गेर्ड बिनिंग और हेनरीच रोरेर को वर्ष 1986 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसी वर्ष बिनिंग क्यूट और गेरबर द्वारा एनालॉगस एटमिक फोर्स सूक्ष्मदर्शी का भी आविष्कार किया गया।

नेनो-तकनीक का आधुनिकतम विस्तारित तात्पर्य है कि पदार्थों के अणु व परमाणुओं के निरूपण से उन्नत गुणवत्ता व निम्न लागत से कुछ बड़े आकार के उत्पादों का निर्माण किया जाना। इसे परमाण्विक नेनो-तकनीक कहा जाएगा। इस सम्बन्ध में नेशनल नेनोटेक्नालॉजी इनीशिएटिव नामक संस्था द्वारा सामान्य विवरण प्रस्तुत किया गया है जिसमें नेनो-स्केल अर्थात् 1 से 100 नेनोमीटर आकार के पदार्थ कणों के निरूपण की कला को नेनो-तकनीक परिभाषित किया गया है। इसकी परिभाषा से परिलक्षित होता है कि क्वान्टम दायरे में क्वान्टम मशीनी प्रभाव अधिक प्रभावशाली होगा। अतएव यह परिभाषा निश्चित आकार सीमा में पाए जाने वाले पदार्थ के विशेष गुणों का विश्लेषण करने वाले सभी प्रकार के अनुसंधान एवं तकनीकी अनुसंधान समूह के एक विशेष तकनीकी उद्देश्य में स्थानांतरित होती है। नेनो तकनीक जो पदार्थ के अत्यंत सूक्ष्म आकार से परिभाषित है यह प्राकृतिक रूप से अत्यंत विस्तृत है, जिसमें सतही विज्ञान, कार्बनिक रसायन, परमाण्विक जन्तु विज्ञान, सेमी कण्डक्टर भौतिकी, माइक्रो फेब्रीकेशन आदि भी समाहित होंगे। इससे सम्बन्धित अनुसंधान एवं अनुप्रयोग भी उतना ही विस्तारित होगा जो पारम्परिक उपकरण भौतिकी से लेकर परमाण्विक सेल्फ एसेम्बली पर आधारित एकदम नई अवधारणा तथा नेनो आकार पर नए पदार्थों के कणों के विकास से परमाणु आकार पर पदार्थों के सीधे ही नियंत्रण तक प्रसारित होगा।

वर्तमान नेनो विज्ञान व नेनो तकनीक एकदम नई है, किन्तु नेनोस्केल के कणों का उपयोग सदियों से अनजाने ही किया जा रहा है। जैसे सैकड़ों साल से पुरातन गिरिजाघरों में खिड़की के कांच को सोने व चांदी के वैकल्पिक आकार के कणों से विभिन्न रंग प्रदान किया जाता रहा है, जिसमें नेनो तकनीकी का उपयोग होता रहा है। किन्तु वर्तमान में वैज्ञानिकों व इंजीनियरों द्वारा विभिन्न पदार्थों के नेनों स्केल के उन्नत गुणों का उपयोग कर उन्नत शक्ति, भारवहन क्षमता, प्रकाश स्पेक्ट्रम में नियंत्रण तथा अधिक रसायनिक अभिक्रियाशीलता आदि प्राप्त किए जा रहे हैं।

वैज्ञानिकों द्वारा नैनो-तकनीक के अनुप्रयोग पर अनेक संभावनाएँ व्यक्त की जा रही हैं। इस तकनीक द्वारा अनेकानेक उपयोगी नए पदार्थ, यंत्र-उपकरण, औषधि, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ, जैव-पदार्थ, ऊर्जा-उत्पादन आदि निर्मित किए जा सकते हैं। नैनो स्केल तकनीक के उत्पादों के व्यावसायीकरण का विकास अब पुरजोर प्रगति पर है। इन उत्पादों का प्रचलन नैनो पदार्थों के व्यापारिक मात्रा में उत्पादन पर आधारित है जो पदार्थों के परमाण्विक नियंत्रण पर सीमित नहीं है। उदाहरण के तौर पर एन्टीबैक्टीरियल एजेंट के निर्माण में सिल्वर नैनो पार्टिकल्स के उपयोग के लिए सिल्वर नैनो-प्लेटफॉर्म, नैनो पार्टिकल आधारित पारदर्शी सनस्क्रीन, दाग प्रतिरोधी वस्त्र निर्माण के लिए कार्बन नैनो ट्यूब्स आदि। नैनो-तकनीक को नैनो आकार पर उत्पाद निर्धारण के साथ विकास प्रदान करने के लिए विभिन्न देशों में शासकीय स्तर पर अनुसंधान कोष (सर्वप्रथम अमेरिका में नेशनल नैनो टेक्नालॉजी इनिशियेटिव) की भी स्थापना की गई है।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस तकनीक के दुरुपयोग से अनेक हानिकारक उत्पाद भी संभावित हैं जो सार्वभौमिक वायुमंडलीय व आर्थिक जगत पर दुष्प्रभाव डाल सकता है तथा प्रलयकारी दुर्घटनाओं का कारण बन सकता है। अतएव इस तकनीक का उपयोग विश्वस्तरीय बंधनकारी नियमन के तहत किया जाना आवश्यक होगा। इस सम्बन्ध में 2000 के मध्य के आसपास से नैनो तकनीक पर नए सिरे से ध्यान दिया जाने लगा। इसके तहत नैनो-तकनीक में पदार्थों के परमाण्विक निरूपण को वर्तमान व आगामी क्षमता, लक्ष्य और अनुप्रयोग के लिए उपयुक्त रखे जाने संबंधी मसौदों पर विचार विमर्श किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में नैनो तकनीक का मानव स्वास्थ्य व सुरक्षा के हितार्थ अधिक कड़ी नियमावली व विधि-विधान सुनिश्चित करने हेतु प्रस्ताव आमंत्रित व वार्ता आयोजित किए जा रहे हैं। नैनो तकनीक के अनुप्रयोग सम्बन्धी नियमावली व अनुपालन के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन भी सुनिश्चित किया जाना है।

समाज में नैनो तकनीक के अनुप्रयोग संबंधी अध्ययन से यह बात सामने आई है कि जन समुदाय भिन्न-भिन्न क्षेत्र में इस तकनीकी का उपयोग अलग-अलग अनुपात में करने में सहमत है, मसलन नैनो तकनीक का उपयोग ऊर्जा उत्पादन में स्वास्थ्य की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है। आइए हम भी इस नैनो तकनीक के प्रभाव-कुप्रभाव की यथाशक्ति जानकारी हासिल कर इनके उत्पादों की उपयोगिता पर अपनी राय व्यक्त करने का प्रयास करें।

उष्णकटिबंधीय चक्रवात

वैज्ञानिक व
तकनीकी
बौद्धार

-राम हरि शर्मा

वैज्ञानिक सहायक

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

हम उष्णकटिबंधीय तूफानों का सामना काफी समय से करते चले आ रहे हैं। हर बार, जब भी तूफान का बनना शुरू होता है, उसकी शुरूआती अवस्था से ही, हम इस तूफान से बचने की तैयारी करने लग जाते हैं। फिर भी हम बहुत कुछ खो देते हैं। प्रत्येक वर्ष, कई तूफान आते हैं चाहे वह बंगाल की खाड़ी में आए या अरब सागर में आए, यह तूफान जिस-जिस स्थान से गुजरता है वहाँ पर मानवीय विनाश, पशुओं का विनाश, वनस्पति का विनाश, फसलों का विनाश, जन सुविधाओं के लिए बनाया गया संजाल जैसे बिजली के खम्बे, तार, ट्रांसफॉर्मर, टेलीफोन के खम्बे पेड़ - पौधे आदि का विनाश करता चला जाता है।



नवीनतम उपकरणों के साथ अब हम इसका सामना करने के लिए सक्षम हो गए हैं। नवीनतम प्रक्षेपित भारतीय उपग्रह 3 डी जो पूर्णतः मौसम पूर्वानुमान के लिये अंतरिक्ष विज्ञान संगठन द्वारा देश को समर्पित किया गया है जो इस समय प्रचालन में है और भारत मौसम विज्ञान विभाग ने इस भारतीय उपग्रह से पूर्वानुमान के लिए उत्पाद (चित्र लेना) बनाना शुरू कर दिया है। इस उपग्रह की सहायता से पूर्वानुमान में शत प्रतिशत सटीकता आएगी जिससे जान माल की हानि को रोकने में मदद मिलेगी। डी. डब्ल्यू. आर. रेडार तथा भारतीय उपग्रह 3 डी पूर्वानुमान के लिये मील के पत्थर साबित हो रहे हैं।

भारतीय उपग्रह 3 'डी'



डी. डब्ल्यू. आर. रेडार

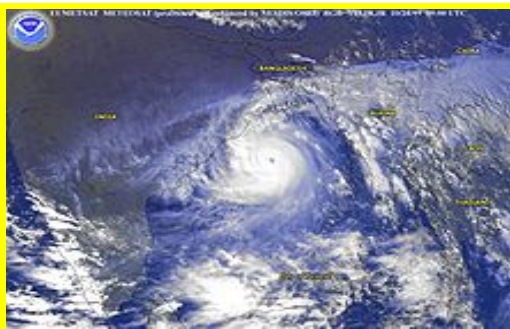


उष्णकटिबंधीय तूफानों का पूर्वानुमान करने के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग ने अब नई नई तकनीक संस्थापित कर ली हैं। डी. डबल्यू. आर. रेडार उष्णकटिबंधीय तूफान संभावित क्षेत्रों में संस्थापित किये हैं। जैसे ही समुद्र में हलचल पैदा होती है यह रेडार के नेटवर्क में आने लग जाता है। इसके परिणामस्वरूप इसका विश्लेषण शुरू हो जाता है और कोशिश की जाती है कि इसके प्रत्येक पहलू पर विश्लेषण हो ताकि किसी भी प्रकार का नुकसान ना हो। इसके साथ ही फिर उपग्रह की सहायता ली जाती है। इससे प्राप्त चित्रों के आधार पर चक्रवात की पूरी स्थिति पर नजर रखी जाती है तथा इसका विश्लेषण किया जाता है। डी. डबल्यू. आर. रेडार तथा उपग्रह से प्राप्त चित्र से इसकी दिशा, तीव्रता, हवाओं की गति, इसके द्वारा घेरा गया क्षेत्रफल, वर्षा की मात्रा, जमीन पर पहुँचने का समय आदि का पता लगाने की पूरी कोशिश की जाती है। लेकिन इसके बारे में यह जानना जरूरी है कि यह कहाँ कहाँ बनता है इसके बनने के क्या क्या कारण हैं? यह किस परत तक बनता है? यह किन किन अक्षांशों पर बनते हैं? इसके बनने के लिए समुद्र के जल का तापमान कम से कम कितना होना आवश्यक है? इसका जीवन चक्र कैसा होता है?

विनाशकारी उष्णकटिबंधीय चक्रवात को समझने के लिए हमें थोड़ा गहरे में उतरना होगा। उष्णकटिबंधीय चक्रवात एक प्रचंड निम्न दाब निकाय है, जिसमें वायु की गति सतह पर 33 नाट्स से अधिक होती है। यदि वायु की गति सतह पर 34 से 47 नाट्स के बीच होती है तो हम उसे चक्रवाती तूफान कहते हैं। जब वायु की गति सतह पर बढ़ती चली जाती है और यह 48 से 63 नाट्स के बीच होती है तो वह अति प्रचंड दाब बनता चला जाता है तो उसे प्रचंड चक्रवातीय तूफान कहते हैं। यदि यह वायु की गति 64 नाट्स से अधिक हो जाती है तब इसे अति तीव्र प्रचंड चक्रवातीय तूफान कहते हैं।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में ये मौसम बहुत ही विनाशकारी निकाय हैं। ये उष्णकटिबंधीय चक्रवात अटलांटिक, प्रशांत (पेसिफिक) और हिंद महासागर में बन सकते हैं। जो चक्रवातीय तूफान उत्तरी एवं दक्षिणी हिंद महासागर में बनते हैं वे उष्णकटिबंधीय चक्रवात कहलाते हैं जो प्रशांत (पेसिफिक) महासागर में बनते हैं वे टाईफून्स कहलाते हैं और जो अटलांटिक महासागर में बनते हैं विली-विली कहलाते हैं।

1999 में उड़ीसा में आए महाचक्रवात का उपग्रह से लिया गया चित्र



विभिन्न नामों से पहचाने जाने वाले चक्रवातों के बनने का समय नीचे सारणी में दिया गया है।

क्रम संख्या	तूफान की स्थिति	बनने का समय
1.	उष्णकटिबंधीय उत्तरी अटलॉटिक महासागर	जून से नवम्बर तक
2.	पूर्वी उत्तरी पेसिफिक	जून से अक्तूबर तक
3.	पश्चिमी उत्तरी पेसिफिक	मई से नवम्बर तक
4.	बंगाल की खाड़ी और अरब सागर	मार्च से जून तथा अक्तूबर से दिसम्बर तक
5.	दक्षिणी पेसिफिक (पश्चिम से 140 पश्चिम दक्षिणी गोलार्द्ध)	दिसम्बर से अप्रैल तक
6.	दक्षिणी हिंद महासागर	नवम्बर से अप्रैल तक

इन चक्रवातीय तूफानों के बनने का क्षेत्र मुख्यतः विषुवत रेखा है। लेकिन ये चक्रवात विषुवत रेखा के 5 डिग्री तक उत्तरी गोलार्द्ध में तथा 5 डिग्री तक दक्षिणी गोलार्द्ध में कभी भी नहीं बनते हैं क्योंकि यहाँ पर कोरियोलिस बल लगभग नगण्य होता है। ये मुख्यतः उत्तरी गोलार्द्ध में 5 डिग्री विषुवत रेखा से 25 डिग्री तक एवं दक्षिणी गोलार्द्ध में 5 डिग्री विषुवत से 25 डिग्री तक बनते हैं।

उष्णकटिबंधीय चक्रवात के बनने के मुख्य कारक हैं :-

महासागर में हलचल जैसे ट्रफ और निम्नदाब के क्षेत्र ही डिप्रेशन, डीप डिप्रेशन तथा उष्णकटिबंधीय तूफान बन जाता है। इसके बनने के लिए पहले से ही समुद्र में कुछ हलचल का होना जरूरी है, वे हैं:-

- ❖ समुद्र की सतह का तापमान लगभग 26.5 डिग्री सेल्सियस या इससे अधिक होना चाहिए जिससे कि वायुमंडल में प्रतिबंधी अस्थिरता रहे। समुद्र में उठी हुई हवा वायुमंडल में ऊर्ध्वाधर 14 किलोमीटर तक गर्म होनी चाहिए जिससे बड़ा सी. बी बादल बन सके।
- ❖ इन अक्षांशों पर निम्नतम कोरियोलिस बल अनिवार्य है ताकि उठी हुई हवा को मजबूती से घुमा सके। यह कोरियोलिस फोर्स उत्तरी गोलार्द्ध में तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में 5 डिग्री से ऊपर होता है। इसलिए विषुवत रेखा से 5 डिग्री तक उत्तरी गोलार्द्ध में तथा 5 डिग्री तक दक्षिणी गोलार्द्ध में चक्रवातीय तूफान नहीं बनते हैं।
- ❖ उष्णकटिबंधीय चक्रवात बनने के लिए वायुमंडल में उस क्षेत्र के ऊपर 950 हैक्टापास्कल से 200 हैक्टापास्कल स्तर तक निम्न ऊर्ध्वाधर पवन अपरूपण आवश्यक है। यही कारण है कि बादलों के बनने से जब शुरुआती तंत्र बन रहा होता है तब भारी मात्रा में संवहन की गुस

ऊष्मा उत्पन्न होती है। यह गुस ऊष्मा वायुमंडल को गर्म करती है जहाँ पर चक्रवातीय तूफान बन रहा होता है। इसके परिणामस्वरूप भ्रमिलता की मात्रा उत्पन्न होने लगती है तथा दाब गिरने लगता है जो चक्रवात को और प्रबल बनाता है अर्थात् भयानक बना देती है। इस चक्रवात के क्षेत्र में ऊर्ध्वाधर पवन अपरूपण यथा संभव कम से कम होना चाहिए। यह पूरी प्रक्रिया अर्थात् चक्रवात के बनने तक की प्रक्रिया द्वितीय प्रकार की प्रतिबंधी अस्थिरता (CISK) कहलाती है। इस प्रक्रिया में छोटे छोटे कपासी बादलों के टावर्स चक्रवात की वृद्धि में मदद करते हैं जिससे एक बहुत बड़ा सी. बी. बादल बन जाता है तथा चक्रवात और अधिक प्रचंड हो जाता है।

- ❖ प्रबल संवहनी (कनवेक्टिव) अस्थिरता अर्थात् इसकी मात्रा अधिक से अधिक होनी चाहिए।
- ❖ निम्न तथा मध्य क्षोभमंडल (ट्रोपोस्फीयर) में अधिक से अधिक सापेक्षिक आर्द्रता होनी चाहिए।
- ❖ निम्न स्तर पर सापेक्षिक भ्रमिलता अधिक होनी चाहिए।

उष्णकटिबंधीय चक्रवाती तूफान का जीवन चक्र

शुरूआती हलचल के समय से अर्थात् निम्न दाब से लेकर इसका विभिन्न स्तरों पर विकसित होना जैसे अवदाब (डिपेशन), गहन अवदाब (डीप डिपेशन)। चक्रवातीय तूफान, अत्यधिक प्रचंड चक्रवातीय तूफान तथा अत्यधिक प्रचंड चक्रवातीय तूफान तक फिर इसके कमजोर पड़ने तक इसका जीवन निम्न प्रकार की अवस्थाओं से गुजरता है। इसके जीवन में चार अवस्थाएँ होती हैं।

- आरंभिक अवस्था अर्थात् बनने की अवस्था
- बाल अवस्था अर्थात् अपरिपक्व अवस्था
- परिपक्व अवस्था
- अन्तिम अवस्था अर्थात् समाप्ति की अवस्था।

आरंभिक अवस्था

इस अवस्था में शुरूआती तौर पर हलचल अर्थात् निम्न दाब से अवदाब (डिपेशन) और गहन अवदाब (डीप डिपेशन) से उष्णकटिबंधीय चक्रवात की आरंभिक अर्थात् चक्रवात का केंद्र तथा उसके चारों तरफ, बादल रुपी दीवारों के रूप में बादल बन जाते हैं। अर्थात् समदाब रेखाएँ, इस आरंभिक अवस्था में केंद्र का बनना उसके चारों तरफ बादलों की दीवारों से घिरना तथा वायु की गति का 40 नॉट्स तक पहुँचना होता है। इस अवस्था में वर्षा विलक्षण तरीके की होती है अर्थात् वर्षा का एक समान ना होना, कभी-कभी होना, कभी नहीं होना अर्थात् वर्षा का व्यवस्थित तरीके से ना होना। इस अवस्था में केंद्रीय दाब तथा बाहरी दाब का अंतर लगभग 10 हेक्टापास्कल होता है। यह अवस्था लगभग कुछ दिन से लेकर 10 दिन तक होती है।

तूफान की अपरिपक्व अवस्था

इस अवस्था में उष्णकटिबंधीय चक्रवात का केंद्रीय दाब बहुत तेजी से गिरता है। इसके साथ ही सतह पर वायु की गति में बहुत तेजी से वृद्धि होती है। इससे पता चलता है कि चक्रवात का विकास अर्थात् वह भयानक रूप लेता जा रहा है। इस अवस्था में केंद्रीय दाब निम्न तम होता है तथा वायु की गति भी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। इस अवस्था के अंत तक चक्रवात अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में पहुँच जाता है। इसके चारों तरफ के घुमावदार बैंड पूरी तरह सख्त हो जाते हैं। यह अवस्था 12 से 24 घंटे तक होती है।

पूर्ण विकसित अवस्था

इस अवस्था में चक्रवात पूर्ण विकसित हो जाता है। इसके साथ ही विकास की अवस्था पूर्ण तीव्रता के साथ स्थायी हो जाती है। इस अवस्था में अब चक्रवात का केंद्रीय दाब नहीं गिरता है और न वायु की गति में वृद्धि होती है। लेकिन फिर भी इसके संचरण का क्षेत्र, क्षैतिज अवस्था में बढ़ता चला जाता है और अपना पूर्ण क्षैतिज क्षेत्रफल प्राप्त कर लेता है। चक्रवात की प्रचंड पवन, चक्रवात की आँख (आई) से लगभग 200 मील तक फैली हुई होती हैं। परिसंचरण की समरूपता जो चक्रवात से जुड़ी हुई होती है पूरी तरह खत्म हो जाती है तथा अधिकतम पवन और अधिकतम दाब प्रवणता तूफान के दायें क्षेत्र में केंद्रित हो जाती है। इस अवस्था की अवधि कुछ दिन या एक सप्ताह तक होती है।

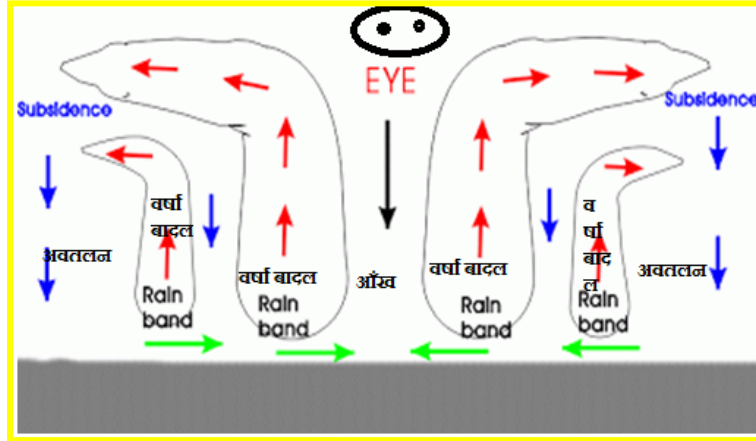
कमजोर पड़ने की अवस्था

इस अवस्था में चक्रवात तेजी से कमजोर हो जाता है और वापस अपनी निम्नदाब की अवस्था प्राप्त कर लेता है। इसके निम्न कारण हैं :-

- ❖ जब चक्रवात समुद्र के तट को पार करता है और जमीन पर आता है तो जो गर्म नमी सागर से मिल रही थी वह पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है।
- ❖ जब चक्रवात ठंडे पानी में प्रवेश करता है तो तेजी से कमजोर हो जाता है। (यह अवस्था बहुत कम होती है तथा कभी कभी अरब सागर में देखने को मिलती है।)
- ❖ कभी कभी यह पुनः प्रतिक्रता की स्थिति में चला जाता है और यदि यह मध्य अक्षांशों की पश्चिमी हवा के प्रभाव में आ जाता है तो यह वाताग्र के गुणों को प्राप्त कर लेता है और अत्यधिक प्रचंड उष्णकटिबंधीय चक्रवात बन जाता है। यह अवस्था लगभग 12 से 24 घंटे तक की होती है।

चक्रवात की क्षैतिज संरचना

हिंद महासागर में उष्णकटिबंधीय चक्रवात का व्यास मानसूनोत्तर काल में 1200 से 1400 कि.मी. तक होता है। जबकि मॉनसून पूर्व के समय 600 से 800 कि. मी. तक होता है। क्षैतिज अवस्था में उष्णकटिबंधीय चक्रवात की तीन अवस्थाएँ होती हैं ।



- चक्रवात का केंद्र (आँख)
- चारों तरफ बादलों की दीवारों का क्षेत्र
- चक्रवात का बाहरी क्षेत्र

चक्रवात की आँख अर्थात केंद्र

यह चक्रवात का संरचनात्मक गुण है जो बहिःउष्णकटिबंधीय चक्रवात में दिखाई नहीं देता है। इस अवस्था में चक्रवात की आँख में वायु की गति शांत, केंद्रीय दाब निम्नतम तथा साफ मौसम होता है। किसी - किसी समय तेजी से वर्षा भी देखी गई है। चक्रवात की आँख का व्यास लगभग 10 से 50 कि. मी. तक होता है। चक्रवात की आँख का रूप लगभग चौकोर लेकिन कभी कभी यह अंडे की आकार का भी होता है। कभी कभी यह केंद्र पूरी तरह समाप्त हो जाता है। कभी कभी यह केंद्र दिखाई नहीं देता है और कभी कभी यह दो दिखाई देते हैं। चक्रवात के केंद्र की अन्दर की सतह का ताप केंद्र के ताप से थोड़ा अधिक होता है जबकि ऊपर के स्तरों पर आँख के भीतर तापमान काफी अधिक होता है।

चक्रवात के केंद्र के बाहर की दीवारों का क्षेत्र

यह क्षेत्र चक्रवात की आँख से सटा हुआ क्षेत्र है। इस क्षेत्र की चौड़ाई लगभग 20 कि. मी. तक होती है। इस क्षेत्र में घने बादल होते हैं और दाब की प्रवणता अधिकतम होती है। उस क्षेत्र में अधिक से अधिक वर्षा होती है। वायु की गति अधिकतम होती है। यह उष्णकटिबंधीय चक्रवात का सबसे खतरनाक क्षेत्र होता है जिसमें अधिकतम वर्षा होती है। इस क्षेत्र में दाब की प्रवणता लगभग 0.2 से 0.5 के स्तर की होती है।

चक्रवात का बाहरी क्षेत्र

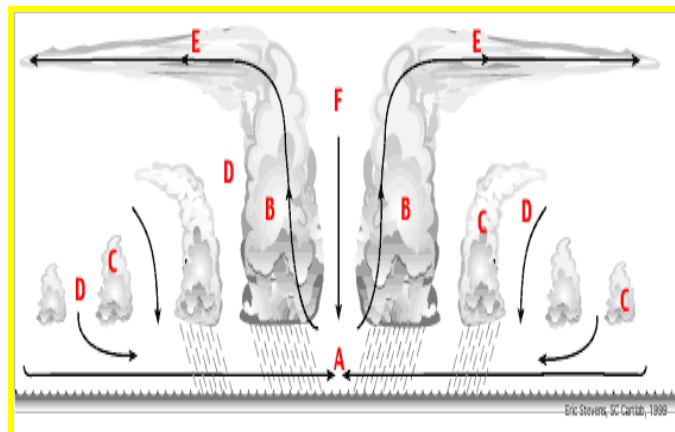
यह क्षेत्र चक्रवात की आँख से सटे हुए क्षेत्र से लेकर चक्रवात के बाहरी क्षेत्र तक होता है। इसे चक्रवात का सबसे बाहरी क्षेत्र कहते हैं। इस क्षेत्र में वायु की गति घटती चली जाती है। जैसे जैसे हम चक्रवात के केंद्र के बाहर की दीवारों के क्षेत्र से अर्थात चक्रवात की दूसरी अवस्था के क्षेत्र से दूर जाते हैं तो भारतीय समुद्रों में बाहरी क्षेत्र दो तरह के देखे गए हैं।

- ❖ एक, जहाँ वायु की गति धीरे धीरे घटती जाती है, जब हम चक्रवात के केंद्र से दूर होते जाते हैं।
- ❖ दूसरा, जहाँ वायु की गति तेजी से घटती है, जब हम चक्रवात के केंद्र से दूर होते चले जाते हैं।
- कुछ और महत्वपूर्ण बातें हैं जो चक्रवात की क्षैतिज संरचना में दिखाई देती हैं।
- उष्णकटिबंधीय चक्रवात मानसूनोत्तर काल में क्षेत्रफल में बड़ा जबकि मॉनसून पूर्व के समय में क्षेत्रफल में छोटा होता है।
- उष्णकटिबंधीय चक्रवात के केंद्र में हमेशा क्रॉस आइसोबारिक संचरण होता है। यह संचरण काफी तेजी से होता है और इसका कोण 25 डिग्री से 35 डिग्री तक होता है।
- उष्णकटिबंधीय तूफान का केंद्रीय दाब साइक्लोस्ट्रोफिक अनुमान सूत्र से ज्ञात किया जा सकता है।

फलैकचर का सूत्र $V_{max} = 16\sqrt{P_o - P_c}$ लेकिन भारतीय समुद्रों के लिए यह सूत्र $V_{max} = 14.2\sqrt{P_o - P_c}$ है। जहाँ V_{max} चक्रवात की अधिकतम वायु गति है। P_o चक्रवात की बाहरी बंद दीवार (आईसोबार) का दाब है। जबकि P_c चक्रवात के केंद्र का दाब है। इसके साथ साथ हम उपग्रह से प्राप्त चित्र के अनुसार चक्रवात की तीव्रता T के रूप में ज्ञात कर सकते हैं जिसके द्वारा हम अधिकतम वायु की गति तथा केंद्र का दाब ज्ञात कर सकते हैं।

चक्रवात की ऊर्ध्वाधर संरचना

- जब उष्णकटिबंधीय चक्रवात अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में होता है उस समय इसकी ऊर्ध्वाधर ऊँचाई 100 हेक्टापास्कल स्तर तक होती है अर्थात् यह पूरे क्षोभमण्डल में देखा गया है।
- उष्णकटिबंधीय तूफान सीधा ऊर्ध्वाधर होता है। यह ऊँचाई के साथ झुकता नहीं है।
- उष्णकटिबंधीय तूफान गर्म कोर परिघटना है जिसके केंद्र का तापमान आसपास की दीवारों (आईसोबार) के तापमान से अधिक होता है। इसमें अधिकतम गर्मी 300 हेक्टापास्कल स्तर तक होती है जबकि केंद्रीय क्षेत्र का तापमान बाहरी दीवारों के क्षेत्र से लगभग 8°C तक अधिक होता है।
- चक्रवात की ऊर्ध्वाधर अवस्था को तीन भागों में बाँटा गया है।



अंदर की सतह

अंदर की सतह वह सतह है जहाँ पर बहाव बाहर के बहाव से कम होता है। यह लगभग 4 कि.मी. तक अर्थात् 600 हेक्टापास्कल स्तर तक फैली होती है लेकिन अधिकतम बहाव घर्षणी परत तक होता है जो सतह से 1 कि. मी. की ऊँचाई तक होती है। यह सतह चक्रवात की भूमंडलीय परिसीमा स्तर कहलाती है।

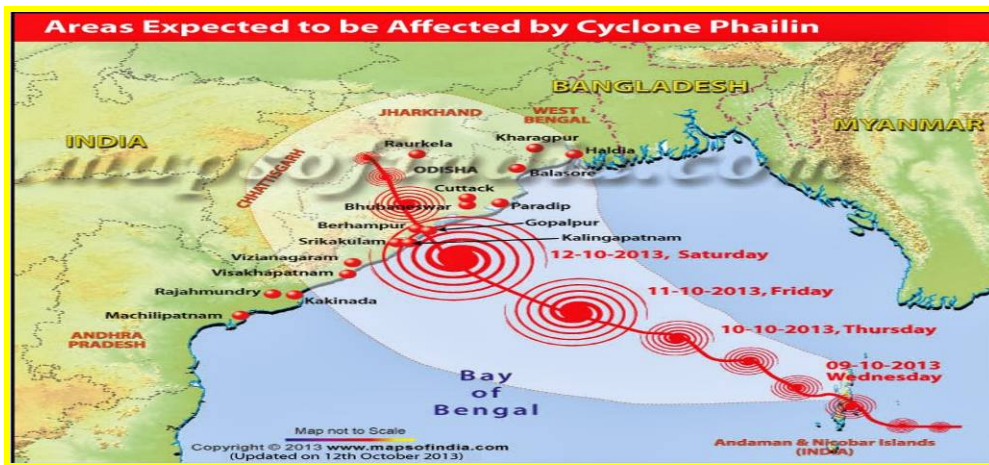
बीच की सतह

यह सतह 4 से 10 कि.मी. की ऊँचाई तक फैली होती है। इस अवस्था में कुछ महत्वपूर्ण अंदर एवं बाहर बहाव नहीं होता है।

बाहरी सतह

यह सतह 10 से 16 कि.मी. तक फैली होती है इस अवस्था में अधिकतम बाहरी बहाव 200 हेक्टापास्कल स्तर पर देखा गया है। इस परत में चक्रवात के केंद्र से प्रभावी बाहरी बहाव होता है। उष्णकटिबंधीय तूफान के ऊर्ध्वाधर व्यास में 600 हेक्टापास्कल स्तर पर जाकर तेजी से कम होता है। चक्रवात का व्यास लगभग 1° अक्षांश या 1° देशान्तर होता है।

उष्णकटिबंधीय तूफान का आगे बढ़ना



उष्णकटिबंधीय तूफान का आगे बढ़ना, संचालन की औसत वायु की दिशा पर निर्भर करता है जिसमें चक्रवात समाया हुआ है। भारतीय समुद्रों में 200 हेक्टापास्कल स्तर को संचालन स्तर माना गया है। 200 हेक्टापास्कल स्तर की वायु की गति, चक्रवात के आगे बढ़ने को प्रभावित करती है। (इस स्तर पर चक्रवातीय परिसंचरण समाप्त हो जाता है।) यदि इस स्तर पर वायु की गति पूर्वी हो, तो चक्रवात का आगे बढ़ना पश्चिम दिशा में होता है यदि इस स्तर पर वायु की गति दक्षिणी पूर्वी है तो चक्रवात का आगे बढ़ना उत्तरी पश्चिमी दिशा में होता है। यह उत्तरी दिशा की ओर भी जा सकता है और पुनः वापस उत्तरी पूर्वी दिशा में भी लौट सकता है और आगे पूर्वी दिशा की ओर भी जा सकता है। वापस लौटना तभी संभव होता है :-

- जब उष्णकटिबंधीय तूफान क्षोभमण्डल के ऊपरी क्षेत्र में प्रतिचक्रवात की परिधि पर आगे बढ़ता है।
- उष्णकटिबंधीय चक्रवात के पश्चिम में, मध्य तथा ऊपरी क्षोभमण्डलीय पश्चिमी हवा से जब पश्चिमी द्रोणी का पूर्व दिशा में आगे बढ़ना होता है।

चक्रवात समीक्षा समिति की सिफारिशों के आधार पर 1990 में चक्रवात चेतावनी निदेशालय दिल्ली में स्थापित किया गया जो देश में पूर्ण रूप से चक्रवात चेतावनी के निरीक्षण के साथ-साथ सभी के साथ समन्वय बना के रखता है। इसका मुख्य उद्देश्य देश में चक्रवात चेतावनी में सुधार तथा चेतावनी निकायों में सम्बंध बना के रखना है। 24 घंटे चक्रवात की हलचल पर पूरे उत्तरी हिंद महासागर पर नजर रखना, विश्व के मौसम संबंधी सभी आकड़ों का अध्ययन तथा इसको अनुमान के लिए उपयोगी बनाना। चक्रवात पर पूरी नजर रखना चाहे वह बंगाल की खाड़ी में हो या अरब सागर या हिंद महासागर में हो। चक्रवात का पता लगते ही इसके बारे में समय समय पर बुलेटिन जारी करके इसकी सूचना आकाशवाणी, दूरदर्शन और टीवी चैनलों तथा समाचार पत्रों तक पहुँचाना। इसका कैसे अनुमान करें कि यह किधर से गुजरेगा, इसकी तीव्रता कितनी होगी आदि यह कितने समय तक रहेगा और कितनी जानमाल की हानि पहुँचा सकता है, यह अध्ययन का विषय है। इसके लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग ने एक संगठन तैयार किया है जिसमें

उपमहानिदेशक (चक्रवात चेतावनी केंद्र) , उपमहानिदेशक (मौसम पूर्वानुमान)

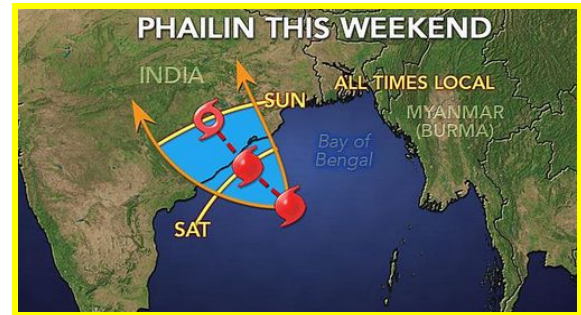
क्षेत्रीय चक्रवात चेतावनी केंद्र , चक्रवात चेतावनी केंद्र

इन केंद्रों को जिम्मेदारी दी गई और ये चक्रवात के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन करते हैं और आम जनता को उससे अवगत कराते हैं जिससे जान माल की हानि को रोका जा सके। सभी आपातकालीन एजेन्सियों के साथ संपर्क रखना तथा इसकी जानकारी से पूर्ण अवगत कराना और अपनी सेवाएँ देने के लिए प्रेरित कराना। सभी सरकारी एजेन्सियों के साथ समन्वय तथा संबंधित जानकारी से उन्हें अवगत कराना। चक्रवात की हवा, लहरे, दाब, वर्षा, तथा उपग्रह से प्राप्त सूचना के पैरामीटर को इकठ्ठा करके सुरक्षित एवं संचित रखना। जहाँ चक्रवात आते हैं उनका एक तुलनात्मक अध्ययन तैयार करके रिपोर्ट तैयार करना। इसकी सभी प्रकार की जानकारी, चाहे वह राज्य सरकार से मिले या चक्रवात केंद्र से मिले, इकठ्ठा करके रखना। चक्रवात के सभी कारकों पर लगातार अनुसंधान करना, चाहे वह लहर हो, मार्ग हो या उसकी तीव्रता तथा प्रगति। जब चक्रवात की हलचल भारतीय समुद्रों में शुरू होती है तभी से भारत मौसम विज्ञान विभाग बुलेटिन देना शुरू कर देता है जिसमें चक्रवात का ब्यौरा दिया जाता है। इसके साथ ही चक्रवात से प्रभावित होने वाले क्षेत्र को इससे अवगत कराया जाता है। ये बुलेटिन निम्न प्रकार के होते हैं -

- ❖ उष्णकटिबंधीय मौसम आउट लुक
- ❖ विशेष उष्णकटिबंधीय मौसम आउटलुक
- ❖ उष्णकटिबंधीय चक्रवात परामर्शी
- ❖ उष्णकटिबंधीय चक्रवात परमर्शी केंद्र बुलेटिन

इन बुलेटिनों में चक्रवात का पूरा ब्यौरा होता है तथा चक्रवात की आकृति पर निर्भर करता है कि चक्रवात की तीव्रता क्या है और यह किस किस्म का है। अगर चक्रवातीय तूफान नहीं है तो उष्णकटिबंधीय मौसम आउटलुक दैनिक रूप से 0600 यू टी सी पर जारी किया जाता है जो 0300 यू टी सी प्रेक्षणों पर आधारित होता है। अगर चक्रवात तूफान है तो यह बुलेटिन प्रत्येक 3 घंटे में जारी किए जाते हैं। अर्थात् 0000 यू टी सी 0300 यू टी सी 0600 यू टी सी 0900 यू टी सी 1200 यू टी सी 1800 यू टी सी 2100 यू टी सी, यह क्षेत्रीय विशेष बुलेटिन मौविमनि केंद्र तथा चक्रवात परामर्शी केंद्र से जारी किए जाते हैं। इन बुलेटिनों में चक्रवाती तूफान का पूरा ब्यौरा होता है। इसके साथ ही समुद्र में पानी के जहाज के लिए भी बुलेटिन जारी किया जाता है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के सिगनलों का प्रयोग किया जाता है।

पेलिन चक्रवात का उपग्रह से लिया गया चित्र



उपर्युक्त वर्णन से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह तूफान कितना भयानक होता है। इससे बचने के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग ने पूर्वी और पश्चिमी तटों पर डी. डबल्यू. आर. रेडार संस्थापित किये हैं तथा हाल ही में प्रक्षेपित उपग्रह 3 (थ्री) डी चक्रवात के पूर्वानुमान में पूर्ण सटीकता में मदद करेगा। जब हम 1999 के उड़ीसा में आए महाचक्रवात की याद करते हैं तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसमें लगभग नौ हजार लोगों की जाने गई थीं। लेकिन आज हम जब 2013 में आये पेलिन तूफान का जिक्र करते हैं तो हम गर्व से कह सकते हैं कि भारत मौसम विज्ञान विभाग के सटीक पूर्वानुमान से मानवीय सहायता हो सकी और इसमें सभी सम्बंधित एजेंसियों ने सकारात्मक भूमिका निभाई। राज्य सरकार, एन. डी. आर. एफ., के साथ साथ सेनाओं ने भी बेहतर तालमेल के साथ कार्य किया। उसकी प्रत्येक गतिविधि पर नजर बनाये रखी। भारत मौसम विज्ञान विभाग की आगे ऐसी कोशिश रहेगी कि किसी भी प्रकार की जान-माल की बिल्कुल हानि न हो। पेलिन चक्रवात के दौरान तटीय क्षेत्रों में रहने वाले कुल नौ लाख लोगों को ही नहीं, मवेशियों तक को समय से सुरक्षित जगहों पर पहुँचा दिया गया। प्रबंध व्यवस्था उत्तम रही क्योंकि भारत मौसम विज्ञान विभाग ने चक्रवात आने के सही समय की जानकारी सभी एजेंसियों को समय रहते ही दी थी जिससे संबंधित एजेंसियों द्वारा उपयोगी प्रबंध समय रहते किये जा सके।

ईश्वरीय कण (गॉड पार्टिकल): हिग्स बोसोन

वैज्ञानिक व
तकनीकी
बौछार

-अशोक कुमार कश्यप

वैज्ञानिक सहायक

मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक (उ.वा.उ.)

नई दिल्ली

4 जुलाई 2012 को टेलीविजन पर देश के सभी समाचार चैनल, बहुत अजीबोगरीब समाचार सुना और दिखा रहे थे। ईश्वर की खोज कर ली गई है। ईश्वर का रहस्य अब रहस्य नहीं रह गया है। इस दुनिया को बनाने वाले भगवान का पता चला आदि आदि। लोग विस्मय से टेलीविजन के सामने बैठकर हैरत से यह सब देख और सुन रहे थे। सभी चैनलों पर एक बड़ी सी पाईप नुमा मशीन दिखाई जा रही थी और वैज्ञानिक चर्चाएं होती दिखाई जा रही थी। आखिर क्या है ये ईश्वरीय कण या हिग्स बोसोन?

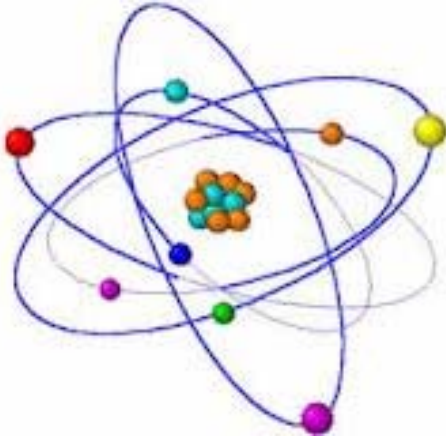
भारत के सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' में एक श्लोक आता है। 'ईशावास्यम इदं सर्वं यदकिंचियाम जगत्यां जगत्' अर्थात् ईश्वर इस जगत् यानि संसार के कण-कण में विद्यमान है। आज के विज्ञान की हिग्स बोसोन थ्योरी भी कुछ इसी तरह की बात कहती है। परन्तु इसे प्रमाणित करने के लिए हिग्स बोसोन यानि ईश्वरीय कण को प्रत्यक्ष रूप में देखना जरूरी है।



दरअसल ब्रह्मांड में जितना भी द्रव्य हमें दिखाई देता है। सारा का सारा अणुओं, परमाणुओं से मिलकर बना हुआ है। पदार्थ का सबसे छोटा कण, परमाणु भी कई प्रकार के कणों जैसे न्यूट्रॉन, प्रोटोन, इलेक्ट्रॉन तथा क्वार्क आदि से निर्मित है जिन्हें मूलभूत कण कहा जाता है। जो कि सभी पदार्थों में एक ही समान गुणधर्म वाले, किन्तु भिन्न भिन्न संख्या में और एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित रहते हैं। अभी तक वैज्ञानिक पूरे ब्रह्मांड को किसी महाविस्फोट से निर्मित मानते हैं जिसे बिग बैंग कहा जाता है। विज्ञान कहता है कि बहुत पहले ब्रह्मांड एक सुई की नोक के बराबर बहुत

अधिक घनत्व वाले बिन्दु के आकार में था। अरबों वर्ष पहले उसमें एक महाविस्फोट या बिग बैंग हुआ और सारा का सारा पदार्थ असीम ऊर्जा के रूप में शून्य में बिखर गया। फिर क्वार्क, न्यूट्रॉन, प्रोटोन, इलैक्ट्रॉन कणों का निर्माण हुआ। फिर हाइड्रोजन, हीलियम, लिथियम और ड्यूटेरियम जैसे हल्के तत्वों का निर्माण हुआ।

यहीं से वैज्ञानिकों के दिमाग में एक कौतूहल जागा और उनके मस्तिष्क में ये बात कौंधी कि यह सब भौतिकी के किस नियम के अंतर्गत हुआ। जिस प्रकार ये कण परमाणु में व्यवस्थित होते हैं विज्ञान के नियमों के अनुसार वो बंधे रह ही नहीं सकते। जैसे प्रोटोन पर घनात्मक आवेश होता है तो इतने सारे प्रोटोन नाभिक में एक साथ कैसे रहते हैं, क्योंकि नियमानुसार समान आवेश एक दूसरे को प्रतिकर्षित करते हैं। दूसरी तरफ इलैक्ट्रॉन पर ऋणात्मक आवेश होता है। तो सारे इलैक्ट्रॉन नाभिक में गिर क्यों नहीं जाते क्योंकि नियमानुसार विपरीत आवेश एक दूसरे को आकर्षित करते हैं।



इसके अलावा एक अहम और सबसे महत्वपूर्ण सवाल और उठता है कि सभी कणों का कुछ द्रव्यमान क्यों होता है? किसी भी चीज को भार देने वाले कणों में अपना कोई भार नहीं होता। परन्तु यदि कणों में भार नहीं होता तो कोई भी चीज यानि अणु-परमाणु या फिर यह ब्रह्मांड भी नहीं बन सकता था। इसका मतलब है कि कुछ ऐसा जरूर है जो मूलभूत कणों न्यूट्रॉन, प्रोटोन, इलैक्ट्रॉन तथा क्वार्कस आदि को द्रव्यमान देता है। द्रव्यमान दरअसल किसी भी पदार्थ में अति सूक्ष्म कणों की संख्या को कहते हैं।

वैज्ञानिक ये कहते हैं कि ऐसा क्या है जो मूलभूत कणों को आपस में बाँधने में सहायता करता है जिससे ये विभिन्न प्रकार के तत्व बने हैं और विभिन्न प्रकार के पदार्थ अस्तित्व में आए हैं और हैरत की बात ये है कि सब कुछ इन तीन मूलभूत कणों यानि न्यूट्रॉन, प्रोटोन, इलैक्ट्रॉन ही बना है और यदि ऐसा कुछ नहीं होता तो सभी मूलभूत कण प्रकाश की गति से यूँ ही भटकते रहते। वो आपस में जुड़ते ही नहीं। ऐसे में न तो सितारे बनते और न ही आकाशगंगायें, निहारिकाएं और ग्रह उपग्रह आदि बनते।

1920-30 के दशक में भारतीय वैज्ञानिक सत्येन्द्र नाथ बोस ने परमाणु की संरचना पर एक परिकल्पना की और उसे महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्स्टीन को टिप्पणी के लिए भेजा। इस परिकल्पना में वैज्ञानिक सत्येन्द्र नाथ बोस ने एक ऐसे चिपकू कण की मौजूदगी संसार में बताई जो ब्रह्मांड में हर जगह मौजूद है और जो इन मूलभूत कणों न्यूट्रॉन, प्रोटोन, इलेक्ट्रॉन तथा क्वार्क्स आदि से चिपक जाते हैं जिससे कि इन कणों में द्रव्यमान आता है। आइन्स्टीन, सत्येन्द्र नाथ बोस के इन विचारों से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने उस लेख को एक प्रतिष्ठित जर्मन वैज्ञानिक पत्रिका में छपवा दिया और इस विचार से विज्ञान जगत में खलबली मच गई। इसी तरह की सोच सन 1960 में अंग्रेज वैज्ञानिक पीटर हिग्स ने दी। उनके अनुसार ब्रह्मांड में हर खाली जगह में एक क्षेत्र बना हुआ है जिसे हिग्स फील्ड कहते हैं। जब ये मूलभूत कण, इस हिग्स फील्ड से गुजरते हैं तो इन कणों में भार आता है। ये इसी प्रकार है जैसे कोई चीज़ किसी शहद से भरे कटोरे से गुजरे और अपनी क्षमता के अनुसार शहद अपने आप में चिपका ले तथा तत्वों/पदार्थों का निर्माण करे। भारतीय वैज्ञानिक सत्येन्द्र नाथ बोस तथा पीटर हिग्स के विचार मौजूदा परमाणु मॉडल को ठोस आधार देते हैं। यही कारण है कि पिछले 50-60 वर्षों में हजारों बड़े प्रयोग उस अज्ञात कण की खोज के लिए किए जा चुके हैं। उस अज्ञात कण को वैज्ञानिक सत्येन्द्र नाथ बोस तथा पीटर हिग्स के नाम को मिलाकर ही 'हिग्स बोसोन' नाम दिया गया है।



जिनेवा में 4 जुलाई 2012 को हुई ईश्वरीय कण की खोज दरअसल हिग्स बोसोन कण की ही खोज है। पिछले 50-60 वर्षों से वैज्ञानिकों के सूत्रों/फॉर्मूलों में कैद इस ईश्वरीय कण को खोजने के लिए सन 2008 में 21 देशों के समूह 'यूरोपियन ऑर्गेनाइजेशन फॉर न्यूक्लियर रिसर्च' यानि सर्न (CERN) ने 111 देशों के 15 हजार वैज्ञानिकों की दो टीमों बनाई। जिनमें 200 भारतीय वैज्ञानिक भी सम्मिलित हैं और फ्रांस तथा स्विट्जरलैंड की सीमा पर, ज़मीन के 100 मीटर नीचे बनी, 27 किलोमीटर लंबी सुरंगनुमा महामशीन 'लार्ज हैड्रॉन कोलाइडर' यानि एल एच सी में ईश्वरीय कण हिग्स बोसोन की खोज में लगाई। पिछले चार वर्षों में इन वैज्ञानिकों ने हजारों प्रयोग किये और उस कथित ईश्वरीय कण को खोज निकाला।

सर्न के वैज्ञानिकों ने एलएचसी में 14 अरब वर्ष पहले का माहौल पैदा किया। जैसा कि बिग बैंग यानि महाविस्फोट के समय में रहा होगा और महामशीन (LHC) में प्रकाश की गति से करोड़ों अरबों प्रोटोनों की टक्कर कराई। असंख्य टक्करों के बाद बड़ी मात्रा में ऊर्जा के साथ कुछ नए प्रकार के कणों का अस्तित्व सामने आया जिनके गुणधर्म हिग्स बोसोन या ईश्वरीय कण से मिलते जुलते ही पाए गए। कई प्रयोगों और अध्ययनों के बाद में सर्न के हैड ने घोषित किया कि नया जन्मा कण हिग्स बोसोन या ईश्वरीय कण ही है।



देखना यह है कि इसके फायदे क्या होंगे ?

- सृष्टि के निर्माण के लिए जिम्मेदार माना जाने वाला ये नया कण विज्ञान को नई ऊँचाईयों तक ले जाएगा।
- अब पता चल सकेगा कि किसी भी चीज को द्रव्यमान तथा आकार कैसे मिलता है।
- इंसान अभी तक ब्रह्मांड का सिर्फ 5 प्रतिशत हिस्सा ही जानता है। ईश्वरीय कण हमारे ज्ञान को नई परिभाषा देगा इसीलिए इसे इस सदी की सबसे ज्यादा रोमांचक और महत्वपूर्ण खोज माना जा रहा है।
- अब तारों की दुनिया, आकाशगंगाएँ, निहारिकाएँ तथा ब्लैक होल आदि की जानकारी आसानी से मिल सकेगी।
- लाईलाज बीमारियों के इलाज में बड़ी आसानी हो जाएगी।
- दूरसंचार के उपकरणों की इस समय चल रही गति में हजारों गुना वृद्धि हो जाएगी।
- अब धरती के भीतर धधकते हुए ज्वालामुखी और भूकंप को इतनी असीम ऊर्जा कहाँ से मिलती है, ये रहस्य नहीं रहेगा।
- और सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात इससे पता चलेगा कि क्या वाकई आज का विज्ञान सही दिशा में काम कर रहा है।

रेडार बनाम स्टेल्थ

वैज्ञानिक व
तकनीकी
बौछार

-रमेश सोहन लाल चौरिशी
सहायक मौसम विज्ञानी
मौविअमनि (अनु.) पुणे

उड़ने वाले पंछी के पर गिनना—एक मुहावरा है, लेकिन वास्तव में जमीन पर रेडार नामक एक प्रणाली है जो आसमान में घूमने वाले विमान हो या और कुछ - सभी को निस्संदेह बराबर दर्शाती है। इतना सब कुछ होने के बावजूद भी मलेशियन एअरलाइन्स के विमान गुम हो जाने के कारण रेडार प्रौद्योगिकी पर सवाल खड़े किए गए हैं। इस विषय पर गौर फर्माना उचित होगा।

रेडार के प्रमुख भाग- 1. ट्रान्समीटर, जो किरणों का निर्माण करता है 2. ट्रान्समिट/ रिसीव स्विच, जो अँन्टेना को संदेश देते हैं 3. अँन्टेना, जो रेडिओ तरंगें दूर तक फैलाता है 4. एक रिसीवर, जो डिटेक्ट करेगा और उसे तीव्र करके प्राप्त सूचना को चित्रित करेगा।

रेडार (RADAR) की तरंगें अदृश्य होती हैं और हमारे आस-पास फैली होती हैं। जमीन पर या हवा में (आकाश में) विमानों की निगरानी करने हेतु रेडार का मुख्यतः प्रयोग होता है। RADAR (Radio Detecting And Ranging) नाम से ही पता चलता है कि यह प्रणाली रेडिओ तरंगों पर आधारित है। विद्युत चुंबकीय (Electromagnetic Waves) तरंगें अपने वातावरण में फैलाई जाती हैं। उसके मार्ग में आने वाली किसी भी वस्तु पर टकरा कर वह परावर्तित होती रहती हैं। जिस तरह इको साइड प्रतिध्वनि परावर्तित होती है, उसी प्रकार से परावर्तित सूचना के आधार पर कौन सी वस्तु कितनी और कहाँ तथा कितनी दूरी पर है यह बताया जा सकता है।

रेडार का प्रयोग अलग-अलग उद्देश्य से किया जाता है। एयर ट्रैफिक कंट्रोल की ओर से विमान सेवाओं पर निगरानी रखने के लिए, सेना के दुश्मन के लड़ाकू विमानों पर नज़र एवं मिसाइलों पर नज़र रखने के लिए और मौसम विभाग द्वारा बवंडर, चक्रवात तथा तूफान की पूर्व सूचना के संबंध में रेडार का प्रयोग किया जाता है।

1886 में जर्मन वैज्ञानिक 'हेन्रीच हर्ट्स' ने सिद्ध किया कि रेडिओ तरंगें घन पदार्थ के संपर्क में आने से परावर्तित होती हैं। रेडार के लिए अलग-अलग रेडिओ तरंगों का इस्तेमाल किया जाता है। इन तरंगों की श्रृंखला 3 किलो हर्टज (3 KHz to 300GHz Hz.) से 300 गिगा हर्टज तक हो सकती है। आज की तारीख में हर देश की सुरक्षा की नींव रेडार पर ही निर्भर है। इसमें अनेक बदलाव की आवश्यकता है जिससे आने वाले समय में छोटी से छोटी वस्तु भी रेडार की निगरानी से न छूट सके।

मलेशियन विमान एम.एच.-320 अचानक से गायब होने के कारण फोटोनिक प्रौद्योगिकी (Photonic Technology) विकसित की गई है। इस प्रौद्योगिकी में लेजर किरणों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रणाली में उच्च फिडिलिटी तरंगें बनाई जाती हैं। यह प्रौद्योगिकी 'पावलो गल्फी' नामक वैज्ञानिक ने विकसित की है, तथापि उसका परीक्षण इटली में किया गया। इस प्रणाली में अभी भी बहुत अनुसंधान करने की जरूरत है। आने वाले समय में यह प्रणाली पूर्ण विकसित होने से विमान का स्थान एवं विमान की सारी सूचनाएँ प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

‘प्रायमरी रेडार’—रेडिओ तरंगों का प्रतिध्वनि (Echo) रूप में इस्तेमाल करके विमान की स्थिति की निगरानी करने में यही रेडार प्रमुख माना जाता है।

‘सेकंडरी रेडार’—इस रेडार पर सभी विमान नजर आते हैं, इनमें से अपने देश के विमान तथा दुश्मन के देश के विमान की पहचान करने के लिए अपने विमानों में TTR (Transponder Transmitting Responder) लगाया होता है। इससे अधिक तीव्रता से बार-बार संदेश रेडार को भेजे जाते हैं। इससे सहज पता चलता है कि विमान किस देश का है, तदनुसार कार्रवाई की जा सकती है।

रेडार का उपयोग—

- रेडार का मुख्य उपयोग किसी वस्तु की जानकारी के लिए, उसका रेडार से कितना अंतर है, यह जानने के लिए अथवा उस वस्तु की आसमानी स्थिति पर नज़र रखने के लिए किया जाता है।
- किस प्रकार का विमान है और किस दिशा में जा रहा है, उसकी गति क्या है इन सारे सवालों का जवाब यह रेडार दे सकता है। डॉपलर रेडार—डॉपलर तरंगों का प्रयोग करके उस वस्तु की गति को आँकने का काम किया जाता है।

इस प्रकार दूरी की गणना करने के लिए प्रतिध्वनि तरंग का उपयोग, गति की गणना के लिए डॉपलर शिफ्ट का उपयोग, दिशा आँकने के लिए अँन्टेना का उपयोग और किसी भी वस्तु/विमान के आकार का पता लगाने के लिए परावर्तित तरंगों का उपयोग किया जाता है। हवा में उड़ने वाली हर चीज़ पर निगरानी रखने के लिए रेडार का बड़ा महत्व है। रेडार रेडिओ तरंग पर कार्य करता है और रेडार से निकली रेडिओ तरंग विमान पर टकरा कर परावर्तित होती है, इसी से रेडार पर विमान का आकार एवं स्थान निश्चित होता है। रेडार की मदद से दुश्मन के विमान का स्थान पटल पर दिखाई देता है और विमान गिराने वाली तोप प्रौद्योगिकी उसे नष्ट कर देती है।

इसलिए रेडार को चकमा देने वाला एक ऐसा विमान विकसित किया गया है, जो जगत के किसी भी रेडार पर दिखाई नहीं देता। सामान्य विमान के सभी सिग्नल तरंगे परावर्तित करने के कारण रेडार पर पकड़े जाते हैं। अमेरिका को ऐसे तकनीकी विमान की ज़रूरत थी जो रेडार पर नज़र नहीं आए। इसके लिए 'स्टेलथ प्रौद्योगिकी' को विकसित किया गया। इस प्रणाली में विमान पूर्णतः अदृश्य नहीं होता लेकिन उसकी आक्रामकता पहचानना मुश्किल होता है। उन विमानों का आकार ऐसा होता है कि जिसका पृष्ठभाग रेडिओ तरंग परावर्तित नहीं कर सके।

स्टेलथ विमान में चाफ फ्लेअर्स (Chaff Flares) नामक इलेक्ट्रॉनिक रॉड होते हैं जो रेडार से प्राप्त तरंग प्राप्त होते ही पायलट विमान से बाहर फेकता है। इस कारण तरंगे विमान तक नहीं पहुँच पाती। इलेक्ट्रॉनिक काउंटर मेजर प्रणाली रेडार को चकमा देने के लिए इस्तेमाल की जाती है। चाफ फ्लेअर्स और ECM प्रणाली रेडार से उत्पन्न सिग्नल को विमान की सही स्थिति न बताते हुए किसी और स्थान का आभास कराती है। स्टेलथ विमान की बनावट RAS यानि रेडार के सिग्नल को सोखने वाले पदार्थ से पृष्ठ भाग में बनाया जाता है। यह पदार्थ अनेक धातुओं के मिश्रण से बनता है जिसमें कार्बन से सिलिकॉन तक के पदार्थ प्रयोग में लाए जाते हैं। इसकी जानकारी आम जनता को नहीं होती। ये पदार्थ रेडार से निकले हुए सिग्नल को दूसरी दिशा की ओर परावर्तित करते हैं, इसलिए रेडार पर ऐसे विमान के दिखाई देने की संभावना नहीं होती। इसी तकनीक द्वारा अमेरिका को पाकिस्तान में छुपे लादेन को, उनकी सरहद में घुसकर खातमा करने में कामयाबी मिली। स्टेलथ विमान को न्यूनतम बम लेकर उड़ना पड़ता है। इन विमानों पर अमेरिका का प्रभुत्व है। अमेरिका के F-22 raptor, F-117, B-2 सर्वश्रेष्ठ स्टेलथ विमान हैं।

युद्धजन्य स्थिति में आर्मी को संरक्षण देने के लिए एयरफोर्स को बहुत ही कुशलता से जिम्मेदारी निभानी होती है। शत्रु राष्ट्र के लड़ाकू विमान शीघ्र दिखाई देने के लिए रेडार प्रणाली का विकास हुआ किन्तु अब इस प्रणाली को चकमा देने वाले स्टेलथ विमान का अमेरिका ने निर्माण किया है।

रूस और भारत के संयुक्त सहयोग से बने स्टेलथ विमान 2016 तक भारतीय वायुसेना में शामिल हो सकेंगे। आज की तारीख में अमेरिका का दबाव देखते हुए बाकी राष्ट्रों को स्टेलथ को पकड़ने के लिए उनकी रेडार प्रौद्योगिकी विकसित करने की ज़रूरत है।

हिंदी को आप हिंदी कहें या हिन्दुस्तानी, मेरे लिए तो दोनों एक ही हैं। हमारा कर्तव्य यह है कि हम अपना राष्ट्रीय कार्य हिंदी भाषा में करें।

-महात्मा गाँधी

मुलाकात

डॉ. वाई. ई. ए. राज से संवाद

प्रादेशिक मौसम केंद्र, चेन्नै में 27 नवम्बर, 2013 को 'मौसम के आयाम' विषय पर हिंदी में एक तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें मौसम विभाग के अधिकारियों के अलावा चेन्नै के विभिन्न स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। इस सेमिनार में उपनिदेशक (राजभाषा) सुश्री रेवा शर्मा और सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती सरिता जोशी भी उपस्थित रहीं। इसी दौरान सुश्री रेवा शर्मा और श्रीमती सरिता जोशी ने प्रादेशिक मौसम केंद्र, चेन्नै के उपमहानिदेशक डॉ. वाई.ई.ए.राज से मुलाकात की। डॉ. वाई. ई. ए. राज ने मदुरै विश्वविद्यालय से 1973 में एम.एस.सी. की और आई. आई. टी. मद्रास से पी.एच.डी. डिग्री लेने के बाद 1980 में भारत मौसम विज्ञान विभाग में कार्यभार संभाला। 1980-1991 तक पुणे में फोरकास्टिंग स्पेशलाइजेशन के बाद 1992 से प्रादेशिक मौसम केंद्र, चेन्नै के अनुसंधान प्रभाग में उत्तर पूर्वी मॉनसून और उष्णकटिबंधीय चक्रवात पर कार्य किया। इसके उपरांत चक्रवात चेतावनी अनुसंधान केंद्र में उष्णकटिबंधीय चक्रवात पर कार्य किया एवं ई साइक्लोन एटलस तैयार की। वर्ष 2008 से प्रादेशिक मौसम केंद्र- चेन्नै के उपमहानिदेशक और भारत मौसम विज्ञान विभाग के दक्षिण भारत के समूचे कार्यकलापों के प्रमुख के रूप में कार्य कर रहे हैं। अभी तक इनके लगभग 55 शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. वाई.ई. राज को 1994 में आई. एम. एस. एवॉर्ड और 1996 में सार्क एवॉर्ड मिला। विभिन्न सेमिनार, सिम्पोजियम, वार्ता आदि के लिए मलेशिया, यू. एस. ए., नेपाल, भूटान, दक्षिण कोरिया का दौरा कर चुके हैं। उत्तर- पूर्वी मॉनसून, उष्णकटिबंधीय चक्रवात, जलवायु परिवर्तन और संख्यात्मक मौसम पूर्वानुमान तथा मौसम विज्ञान का सांख्यिकीय और गणितीय अनुप्रयोग इनके प्रिय विषय हैं।



- रेवा शर्मा -** डॉ. राज, प्रादेशिक मौसम केंद्र- चेन्नै के कार्यालय में हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए आपको बधाई देते हुए मैं यह जरूर जानना चाहूँगी कि स्कूल के बच्चों को इस संगोष्ठी में शामिल करने का विचार आपके मन में कैसे आया?
- डॉ. राज -** धन्यवाद रेवा जी। आज का समय ऐसा है कि आप जिन लोगों के लिए मौसम की सेवाएँ दे रहे हैं उन लोगों तक पहुँचना यूजर्स के साथ संपर्क रखना भी बहुत आवश्यक हो गया है। इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने स्कूल के बच्चों को इस संगोष्ठी में शामिल किया और आपने देखा कि बच्चों में मौसम विज्ञान के बारे में कितनी जागरूकता है समझ है। वैसे इससे पहले भी हमारे कार्यालय में विभिन्न स्कूलों के बच्चे आते रहे हैं और हम लोग उन्हें मौसम एवं विभिन्न उपकरणों आदि के बारे में यथासंभव जानकारी देते रहें हैं।
- सरिता जोशी-** सर, प्रादेशिक मौसम केंद्र- चेन्नै के ऐतिहासिक महत्व के बारे में आप कुछ बताना चाहेंगे ?
- डॉ. राज -** जरूर बताऊँगा। सरिता जी! 1792 में सर चार्ल्स ओकले ने मद्रास में एक खगोलीय वेधशाला स्थापित की, जो उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी के मद्रास प्रांत के राज्यपाल थे। यह वेधशाला भारत में खगोल विज्ञान, भूकंप विज्ञान और नौ संचालन ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई थी। यहाँ एक दस टन का ग्रेनाइट स्तंभ भी है जिसे भारत में सबसे पुराना माना जाता है। इस प्रकार मौसम विज्ञान के क्षेत्र में हमारे केंद्र का ऐतिहासिक महत्व भी है।
- रेवा शर्मा -** सर, जिस प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै को हम आज देख रहे हैं वह औपचारिक रूप से कब शुरू हुआ ?
- डॉ. राज -** रेवा जी, 10 अप्रैल 1945 को प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै अस्तित्व में आया। आप तो जानती हैं कि हमारा यह सेंटर दक्षिणी क्षेत्र के तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और संघ राज्य पाँडिचेरी व लक्षद्वीप को अपनी मौसम सेवाएँ दे रहा है।
- सरिता जोशी -** सर, प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै के सामने पूर्वानुमान उपलब्ध कराने में किस प्रकार की चुनौतियाँ आती हैं?

डॉ. राज -

मैंने पहले जिक्र किया है कि प्रादेशिक मौसम केंद्र-चेन्नै दक्षिण प्रायद्वीप भारत यानि की तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल और संघ राज्य पाँडिचेरी एवं लक्षद्वीप के लिए पूर्वानुमान उपलब्ध कराता है। तूफान चेतावनी केंद्र विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों के लिए तूफान चेतावनी देता है। आप तो जानती ही हैं कि इन चारों राज्यों के तटीय क्षेत्र अरब सागर, बंगाल की खाड़ी तथा हिंद महासागर से घिरे हैं। इन राज्यों के पूर्व में बंगाल की खाड़ी है तो पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिंद महासागर है। इसमें भी बंगाल की खाड़ी में अपेक्षाकृत अधिक चक्रवात बनते हैं और हमारे तटीय क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं। हम उपग्रह संचार के माध्यम से चक्रवातों की चेतावनी देते हैं। अभी हाल ही में हेलेन और लहर चक्रवात आए थे। इस समय इन स्टेशनों के हमारे सभी कर्मचारी सतर्क रहे। हमें खुशी है कि हम समय पर जनता को सूचना प्रदान कर रहे हैं। हम डाप्लर रेडार के जरिए दिन रात मॉनीटरिंग करते हैं। चक्रवात चेतावनी केंद्र में तैनात हमारा स्टाफ इन चक्रवातों पर लगातार नजर बनाए रखता है।

रेवा शर्मा -

सर, इन चक्रवातों पर नज़र बनाए रखने के लिए किस प्रकार का सेटअप है?

डॉ. राज -

देखिए चेन्नै, मछलीपट्टनम, विशाखापट्टनम, कराइकल और कोची में साइक्लोन डेटेक्शन रेडार लगाए गए हैं। इन रेडारों की मदद से हम चक्रवात पर नज़र रखते हैं। चेन्नै और विशाखापट्टनम में हमारे साइक्लॉन वार्निंग सेंटर चक्रवात चेतावनी सेवाएँ देते हैं।

रेवा शर्मा -

सर, कृपया यह भी बताएँ कि यूजर्स तक मौसम सेवाएं कैसे पहुँचाई जाती हैं?

डॉ. राज -

देखिए आप तो जानते ही हैं कि मौसम की सेवाएँ अंततः यूजर्स के लिए ही होती हैं। हम लोग अनेक माध्यमों से यूजर्स से संपर्क साधते हैं ताकि उन्हें मौसम विज्ञान के बारे में अधिक से अधिक जानकारी मिल सके। हमने अपने कार्यालय में नैशनल साइंस डे मनाया। हम रूरल कॉलेजों को तमिल में जानकारी देते हैं। पैम्फलेट और पवनदूत के जरिए मौसम की सूचनाएँ आम जनता तक पहुँचाई जाती हैं। हमारे कार्यालय में स्कूल, कॉलेज के छात्र विजिट करते हैं। अब तक प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै में लगभग दस हजार छात्र विजिट कर चुके हैं। साथ ही हमने 2009 में 2 दिन का एग्रोमेट सेमिनार और 2011 में नॉर्थ ईस्ट मॉनसून पर सेमिनार तथा पिछले वर्ष यूजर मीट का भी आयोजन किया।

सरिता जोशी- सर, मौसम विज्ञान से जुड़े विभिन्न विषयों पर रिसर्च को प्रोत्साहित करने की दिशा में आप जो कार्य कर रहे हैं उनके बारे में कुछ बताएंगे।

डॉ. राज - जी हाँ । बिलकुल । एक छात्र ने पी.एच.डी. कम्प्लीट कर ली है और इस समय दो छात्रों को मैं गाइड कर रहा हूँ। मैं आपको यह भी बताना चाहूँगा कि मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा वायुमंडलीय विज्ञान में Phd डिग्री के लिए प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै अनुसंधान केंद्र के रूप के स्वीकृत किया गया है। यह खुशी की बात है।

सरिता जोशी- सर, हमारे पाठकगण ई-एटलस के बारे में जरूर जानना चाहेंगे?

डॉ. राज - जरूर, हमारे विभाग ने वर्ष 1964, 1979 और 1996 में प्रकाशित 'बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में तूफानों के मार्ग और अवदाबों' से संबंधी एटलस की हार्ड कॉपी का इलैक्ट्रॉनिक रूपांतरण तैयार किया है। इस एटलस के इलैक्ट्रॉनिक रूपांतरण का नाम चक्रवात ई-एटलस- आई एन डी रखा गया है जिसे 2008 में निकाला गया। इसे एक CD के रूप में तैयार किया गया है जिसमें भारतीय समुद्रों में 1891 से लेकर 2007 तक के दौरान आए चक्रवातों के मार्ग और अवदाबों की महत्वपूर्ण सूचना उपलब्ध है। इस ई-एटलस को माइक्रोसॉफ्ट विंडोज आपरेटिंग सिस्टम की मदद से पर्सनल डेस्कटॉप कम्प्यूटर पर डाला जा सकता है। यह एटलस ऊष्णकटिबंधीय चक्रवात का पूर्वानुमान लगाने वालों, शोध कर्ताओं और आपदा प्रबंधकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

मुझे इस बात की खुशी है कि ई-एटलस तैयार करने का यह कार्य मेरी निगरानी में किया गया। उस समय मैं प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै के चक्रवात चेतावनी अनुसंधान केंद्र का प्रमुख था।

मैं एक बात आपको यहाँ बताना चाहूँगा कि अब तो यह एटलस वेब में वेब एटलस के रूप में निःशुल्क उपलब्ध है। इसे आप <http://www.imd.gov.in/section/nhac/dynamic/eatlas.pdf> लिंक पर जाकर देख सकते हैं।

रेवा शर्मा - सर, उत्तर पूर्वी मॉनसून पर आपने जो शोध कार्य किया है उसके बारे में भी जानना पाहूँगी ?

डॉ. राज - इतना तो आप जानते ही हैं कि तमिलनाडु को छोड़कर लगभग समूचे भारत में दक्षिण पश्चिमी मॉनसून की ऋतु में थोड़ी बहुत वर्षा होती है परंतु उत्तर-पूर्व मॉनसून ऋतु के दौरान तमिलनाडु और आस-पास के क्षेत्रों में खूब वर्षा होती

है। उत्तर पूर्वी मॉनसून ऋतु पर बहुत अनुसंधान कार्य हुआ है और यह अब भी चल रहा है। मैं आपको बता दूँ कि मेरी दिलचस्पी उत्तर पूर्वी मॉनसून में रही है और मैंने इसके आगमन, इसकी वापसी की तारीखों, उत्तर पूर्वी मॉनसून के पैटर्न, इससे जुड़े तापगतिकीय प्राचलों और उत्तर पूर्वी मॉनसून का पहले से पूर्वानुमान करने के विषयों पर विशेष रुचि लेकर अध्ययन किया है। मेरा एक विद्यार्थी मद्रास विश्वविद्यालय से उत्तर पूर्वी मॉनसून ऋतु विषय पर पी एच डी कर रहा है।

रेवा शर्मा -

तमिल भाषी राज्य होते हुए भी आपके केंद्र में भारत सरकार की राजभाषा नीति के सुचारु रूप से कार्यान्वयन का भरसक प्रयास किया जा रहा है जो निश्चय ही सराहनीय है। हिंदी में तकनीकी सेमिनार आयोजित करने का विचार कैसे आया। कुछ बताएँ ?

डॉ. राज -

रेवा जी, काफी समय से मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि मैं चेन्नै में हिंदी में तकनीकी सेमिनार का आयोजन करवाऊँ। हालाँकि स्कूल में मैंने हिंदी दो वर्ष पढ़ी है। मैं हिंदी पढ़ सकता हूँ। बोल सकता हूँ और समझ सकता हूँ। इस वजह से मुझे उत्तर भारत में भाषा की समस्या नहीं आती है। बहरहाल हमारे कुछ कार्यालयों कोजिकोड और कोडैकनाल कार्यालयों का माननीय ससंदीय राजभाषा समिति ने निरीक्षण और हमारा मार्गदर्शन किया जिसकी वजह से हम हिंदी में और अधिक कार्य को करने के लिए प्रेरित हुए। इसी को ध्यान में रखते हुए ही मैंने श्री कु. वे.बालासुब्रमणियन को हिंदी सेमिनार आयोजित करने का दायित्व सौंपा और उनकी मेहनत और लगन से इस सेमिनार का सफल आयोजन हो सका है।

रेवा जी आपने देखा कि चेन्नै के विभिन्न स्कूलों के छात्रों ने आत्मविश्वास के साथ मौसम विज्ञान के अलग अलग विषयों पर व्याख्यान दिया और पॉवर प्वाइंट प्रस्तुति दी यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। बच्चों ने मौसम विज्ञान की जानकारी को जिस तरह प्रस्तुत किया उससे मुझे यह एहसास हुआ कि हम अपने उद्देश्य में सफल हुए हैं और बच्चे मौसम विज्ञान जैसे विषय में रुचि ले रहे हैं।

हालाँकि हम अपनी वेबसाइट को भी द्विभाषी रूप में तैयार करने के प्रयास कर रहे हैं। हमारा प्रयास है कि हम डायनमिक और स्टैटिक पृष्ठ द्विभाषी रूप में दें। कई सूचनाएँ तमिल में भी दें रहे हैं ।

सर्वश्रेष्ठ कार्टून - 2013



श्री प्रवीन कुमार घिल्डियाल
वैज्ञानिक सहायक, जल मौसम प्रभाग
मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

विशेष निदेश
SPECIAL DIRECTIVES
हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश
Directive for development of the Hindi language

351. संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

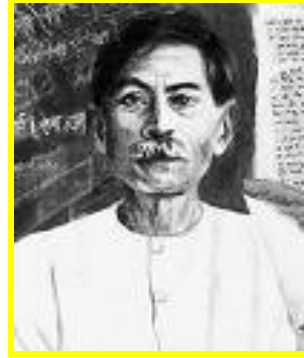
अष्टम अनुसूची
[अनुच्छेद 344 (I) और 351]

- | | | | |
|-------------|--------------|-----------|--------------|
| 1. असमिया | 2. उड़िया | 3. उर्दू | 4. कन्नड़ |
| 5. कश्मीरी | 6. गुजराती | 7. तमिल | 8. तेलुगु |
| 9. पंजाबी | 10. बंगला | 11. मराठी | 12. मलयालम |
| 13. संस्कृत | 14. सिन्धी | 15. हिंदी | 16. नेपाली * |
| 17. कोंकणी* | 18. मणिपुरी* | 19. बोडो* | 20. संथाली* |
| 21. मैथिली* | 22. डोगरी* | | |

* संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ी गई भाषाएँ

सुहाग की साड़ी

साहित्यिक
बहार



कलम के सिपाही
-मुंशी प्रेमचंद

यह कहना भूल है कि दाम्पत्य-सुख के लिए स्त्री-पुरुष के स्वभाव में मेल होना आवश्यक है। श्रीमती गौरा और श्रीमान कुँवर रतनसिंह में कोई बात न मिलती थी। गौरा उदार थी, रतनसिंह कौड़ी-कौड़ी को दाँतों से पकड़ते थे। वह हँसमुख थी, रतनसिंह चिंताशील थे। वह कुल-मर्यादा पर जान देती थी, रतनसिंह इसे आडम्बर समझते थे। उनके सामाजिक व्यवहार और विचार में भी घोर अंतर था। यहाँ उदारता की बाजी रतनसिंह के हाथ थी। गौरा को सहभोज से आपत्ति थी, विधवा-विवाह से घृणा और अछूतों के प्रश्न से विरोध। रतनसिंह इन सभी व्यवस्थाओं के अनुमोदक थे। राजनीतिक विषयों में यह विभिन्नता और भी जटिल थी। गौरा वर्तमान स्थिति को अटल, अमर, अपरिहार्य समझती थी, इसलिए वह नरम-गरम, कांग्रेस, स्वराज्य, होमरूल सभी से विरक्त थी। कहती-ये मुट्ठी भर पढ़े-लिखे आदमी क्या बना लेंगे, चने कहीं भाड़ फोड़ सकते हैं? रतनसिंह पक्के आशावादी थे, राजनीतिक सभा की पहली पंक्तियों में बैठनेवाले, कर्मक्षेत्र में सबसे पहले कदम उठानेवाले, स्वदेशव्रतधारी और बहिष्कार के पूरे अनुयायी। इतनी विषमताओं पर भी उनका दाम्पत्य-जीवन सुखमय था। कभी-कभी उनमें मतभेद अवश्य हो जाता था, पर वे समीर के वे झोंके थे, जो स्थिर जल को हलकी-हलकी लहरों से आभूषित कर देते हैं, वे प्रचंड झोंके नहीं जिनसे सागर विप्लवक्षेत्र बन जाता है। थोड़ी-सी सदृच्छा सारी विषमताओं और मतभेदों का प्रतिकार कर देती थी।"

विदेशी कपड़ों की होलियाँ जलायी जा रही थीं। स्वयंसेवकों के जत्थे भिखारियों की भाँति द्वारों पर खड़े हो-हो कर विलायती कपड़ों की भिक्षा माँगते थे और ऐसा कदाचित ही कोई द्वार था जहाँ उन्हें निराश होना पड़ता हो। खद्दर और गाढ़े के दिन फिर गये थे। नयनसुख, नयनदुख, मलमल और तनजेब तनबेध हो गये थे। रतनसिंह ने आकर गौरा से कहा-लाओ, अब सब विदेशी कपड़े संदूक से निकाल दो, दे दूँ।

गौरा-अरे तो इसी घड़ी कोई साइत निकली जाती है, फिर कभी दे देना।

रतन-वाह, लोग द्वार पर खड़े कोलाहल मचा रहे हैं और तुम कहती हो, फिर कभी दे देना।

गौरा-तो यह कुंजी लो, निकाल कर दे दो। मगर यह सब है लड़कों का खेल। घर फूँकने से स्वराज्य न कभी मिला है और न मिलेगा।

रतन-मैंने कल ही तो इस विषय पर तुमसे घंटों सिरपच्ची की थी और उस समय तुम मुझसे सहमत हो गयी थीं, आज तुम फिर वही शंकाएँ करने लगतीं?

गौरा-मैं तुम्हारे अप्रसन्न हो जाने के डर से चुप हो गयी थी।

रतन-अच्छा, शंकाएँ फिर कर लेना, इस समय जो करना है वह करो।

गौरा-लेकिन मेरे कपड़े तो न लोगे न?

रतन-सब देने पड़ेंगे, विलायत का एक सूत भी घर में रखना मेरे प्रण को भंग कर देगा।

इतने में रामटहल साईस ने बाहर से पुकारा-सरकार, लोग जल्दी मचा रहे हैं, कहते हैं, अभी कई मुहल्लों का चक्कर लगाना है। कोई गाढ़े का टुकड़ा हो तो मुझे भी मिल जाय, मैंने भी अपने कपड़े दे दिये।

केसर महरी कपड़ों की एक गठरी लेकर बाहर जाती हुई दिखायी दी। रतनसिंह ने पूछा-क्या तुम भी अपने कपड़े देने जाती हो?

केसर ने लजाते हुए कहा-हाँ सरकार, जब देश छोड़ रहा है तो मैं कैसे पहनूँ?

रतनसिंह ने गौरा की ओर आदेशपूर्ण नेत्रों से देखा। अब वह विलम्ब न कर सकी। लज्जा से सिर झुकाये संदूक खोलकर कपड़े निकालने लगी। एक संदूक खाली हो गया तो उसने दूसरा संदूक खोला। सबसे ऊपर एक सुन्दर रेशमी सूट रखा हुआ था जो कुँवर साहब ने किसी अँगरेजी कारखाने में सिलाया था। गौरा ने पूछा-क्या सूट भी निकाल दूँ?

रतन-हाँ-हाँ, इसे किस दिन के लिए रखोगी?

गौरा-यदि मैं यह जानती कि इतनी जल्दी हवा बदलेगी तो कभी यह सूट न बनवाने देती। सारे रुपये खून हो गये।

रतनसिंह ने कुछ उत्तर न दिया। तब गौरा ने अपना संदूक खोला और जलन के मारे स्वदेशी-विदेशी सभी कपड़े निकाल-निकाल कर फेंकने लगी। वह आवेश-प्रवाह में आ गयी। उनमें कितनी ही बहुमूल्य फैंसी जाकेट और साड़ियाँ थीं जिन्हें किसी समय पहन कर वह फूली न समाती थी। बाज-बाज साड़ियों के लिए तो उसे रतनसिंह से बार-बार तकाजे करने पड़े थे। पर इस समय सब की सब आँखों में खटक रही थीं। रतनसिंह उसके भावों को ताड़ रहे थे। स्वदेशी कपड़ों का निकाला जाना उन्हें अखर रहा था, पर इस समय चुप रहने ही में कुशल समझते थे। तिस पर भी दो-एक बार वाद-विवाद की नौबत आ ही गयी। एक बनारसी साड़ी के लिए तो वह झगड़ बैठे,

उसे गौरा के हाथों से छीन लेना चाहा, पर गौरा ने एक न मानी, निकाल ही फेंका। सहसा संदूक में से एक केसरिया रंग की तनजेब की साड़ी निकल आयी जिस पर पक्के आँचल और पल्ले टँके हुए थे। गौरा ने उसे जल्दी से लेकर अपनी गोद में छिपा लिया।

रतनसिंह ने पूछा-कैसी साड़ी है।

गौरा-कुछ नहीं, तनजेब की साड़ी है। आँचल पक्का है।

रतन-तनजेब की है तब तो जरूर ही विलायती होगी। उसे अलग क्यों रख लिया? क्या वह बनारसी साड़ियों से अच्छी है?

गौरा-अच्छी तो नहीं है, पर मैं इसे न दूँगी।

रतन-वाह, विलायती चीज को मैं न रखने दूँगा। लाओ इधर।

गौरा-नहीं, मेरी खातिर से इसे रहने दो।

रतन-तुमने मेरी खातिर से एक भी चीज न रखी, मैं क्यों तुम्हारी खातिर करूँ।

गौरा-पैरों पड़ती हूँ, जिद न करो।

रतन-स्वदेशी साड़ियों में से जो चाहो रख लो, लेकिन इस विलायती चीज को मैं न रखने दूँगा। इसी कपड़े की बदौलत हम गुलाम बने, यह गुलामी का दाग मैं अब नहीं रख सकता। लाओ इधर।

गौरा-मैं इसे न दूँगी, एक बार नहीं हजार बार कहती हूँ कि न दूँगी।

रतन-मैं इसे लेकर छोड़ूँगा, इस गुलामी के पटके को, इस दासत्व के बंधन को किसी तरह न रखूँगा।

गौरा-नाहक जिद करते हो।

रतन-आखिर तुमको इससे क्यों इतना प्रेम है?

गौरा-तुम तो बाल की खाल निकालने लगते हो। इतने कपड़े थोड़े हैं? एक साड़ी रख ही ली तो क्या?

रतन-तुमने अभी तक इन होलियों का आशय ही नहीं समझा।

गौरा-खूब समझती हूँ। सब ढोंग है। चार दिन में जोश ठंडा पड़ जायेगा।

रतन-तुम केवल इतना बतला दो कि यह साड़ी तुम्हें क्यों इतनी प्यारी है, तो शायद मैं मान जाऊँ। गौरा-यह मेरी सुहाग की साड़ी है।

रतन-(जरा देर सोच कर) तब तो मैं इसे कभी न रखूँगा। मैं विदेशी वस्त्र को यह शुभस्थान नहीं दे सकता। इस पवित्र संस्कार का यह अपवित्र स्मृति-चिह्न घर में नहीं रख सकता। मैं इसे सबसे पहले होली की भेंट करूँगा। लोग कितने हतबुद्धि हो गये थे कि ऐसे शुभ कार्यों में भी विदेशी वस्तुओं का व्यवहार करने में संकोच न करते थे। मैं इसे अवश्य

होली में दूंगा।

गौरा-कैसा असगुन मुँह से निकालते हो।

रतन-ऐसी सुहाग की साड़ी का घर में रखना ही अशकुन, अमंगल, अनिष्ट और अनर्थ है।

गौरा-यों चाहे जबरदस्ती छीन ले जाओ, पर खुशी से न दूँगी।

रतन-तो फिर मैं जबरदस्ती ही करूँगा। मजबूरी है।

यह कह कर वह लपके कि गौरा के हाथों से साड़ी छीन लूँ। गौरा ने उसे मजबूती से पकड़ लिया और रतन की ओर कातर नेत्रों से देखकर कहा-तुम्हें मेरे सिर की कसम।

केसर महरी बोली-बहू जी की इच्छा है तो रहने दीजिए।

रतनसिंह के बड़े हुए हाथ रुक गये, मुख मलिन हो गया। उदास हो कर बोले-मुझे अपना व्रत तोड़ना पड़ेगा। प्रतिज्ञा-पत्र पर झूठे हस्ताक्षर करने पड़ेंगे। खैर, यही सही।

शाम हो गयी थी। द्वार पर स्वयंसेवकगण शोर मचा रहे थे, कुँवर साहब जल्दी आइए, श्रीमती जी से भी कह दीजिए, हमारी प्रार्थना स्वीकार करें। बहुत देर हो रही है। उधर रतनसिंह असमंजस में पड़े हुए थे कि प्रतिज्ञा-पत्र पर कैसे हस्ताक्षर करूँ। विदेशी वस्त्र घर में रख कर स्वदेशी व्रत का पालन क्योंकर होगा? आगे कदम बढ़ा चुका हूँ, पीछे नहीं हट सकता। लेकिन प्रतिज्ञा का अक्षरशः पालन करना अभीष्ट भी तो नहीं, केवल उसके आशय पर लक्ष्य रहना चाहिए। इस विचार से मुझे प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने का पूरा अधिकार है। त्रिया-हठ के सामने किसी की नहीं चलती। यों चाहूँ तो एक ताने में काम निकल सकता है, पर उसे बहुत दुःख होगा, बड़ी भावुक है, उसके भावों का आदर करना मेरा कर्तव्य है। गौरा भी चिंता में डूबी हुई थी। सुहाग की साड़ी सुहाग का चिह्न है, उसे आग ... कितने अशकुन की बात है। ये कभी-कभी बालकों की भाँति जिद करने लगते हैं, अपनी धुन में किसी की सुनते नहीं। बिगड़ते हैं तो मानो मुँह ही नहीं सीधा होता।

लेकिन वे बेचारे भी तो अपने सिद्धांतों से मजबूर हैं। झूठ से उन्हें घृणा है। प्रतिज्ञा-पत्र पर झूठी स्वीकृति लिखनी पड़ेगी, उनकी आत्मा को बड़ा दुःख होगा, घोर धर्मसंकट में पड़े होंगे, यह भी तो नहीं हो सकता कि सारे शहर में स्वदेशानुरागियों के सिरमौर बन कर उस प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने से आनाकानी करें। कहीं मुँह दिखाने को जगह न रहेगी, लोग समझेंगे, बना हुआ है। पर शकुन की चीज कैसे दूँ?

इतने में उसने रामटहल साईस को सिर पर कपड़ों का गट्ठर लिये बाहर जाते देखा। केसर महरी भी एक गट्ठर सिर पर रखे हुए थी। पीछे-पीछे रतनसिंह हाथ में प्रतिज्ञा-पत्र लिये जा रहे थे। उनके चेहरे पर ग्लानि की झलक थी जैसे कोई सच्चा आदमी झूठी गवाही देने जा रहा हो। गौरा को देखकर उन्होंने आँखें फेर लीं और चाहा कि उसकी निगाह बचाकर निकल जाऊँ। गौरा को

ऐसा जान पड़ा कि उनकी आँखें डबडबायी हुई हैं। वह राह रोककर बोली-जरा सुनते जाओ।

रतन-जाने दो, दिक न करो; लोग बाहर खड़े हैं।

उन्होंने चाहा कि पत्र को छिपा लूँ; पर गौरा ने उसे उनके हाथ से छीन लिया, उसे गौर से पढ़ा और एक क्षण चिन्तामग्न रहने के बाद बोली-वह साड़ी भी लेते जाओ।

रतन-रहने दो, अब तो मैंने झूठ लिख ही दिया।

गौरा-मैं क्या जानती थी कि तुम ऐसी कड़ी प्रतिज्ञा कर रहे हो।

रतन-यह तो मैं तुमसे पहले कह चुका था।

गौरा-मेरी भूल थी, क्षमा कर दो और इसे लेते जाओ।

रतन-जब तुम इसे देना अशकुन समझती हो तो रहने दो। तुम्हारी खातिर थोड़ा-सा झूठ बोलने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

गौरा-नहीं, लेते जाओ। अमंगल के भय से तुम्हारी आत्मा का हनन नहीं करना चाहती।

यह कहकर उसने अपनी सुहाग की साड़ी उठाकर पति के हाथों में रख दी। रतन ने देखा, गौरा के चेहरे पर एक रंग आता है, एक रंग जाता है, जैसे कोई रोगी अंतरस्थ विषम वेदना को दबाने की चेष्टा कर रहा हो। उन्हें अपनी अहृदयता पर लज्जा आयी। हा केवल अपने सिद्धान्त की रक्षा के लिए, अपनी आत्मा के सम्मान के लिए, मैं इस देवी के भावों का वध कर रहा हूँ। यह अत्याचार है। साड़ी गौरा को दे कर बोले-तुम इसे रख लो, मैं प्रतिज्ञा-पत्र को फाड़े डालता हूँ।

गौरा ने दृढ़ता से कहा-तुम न ले जाओगे तो मैं खुद जा कर दे आऊँगी। रतनसिंह विवश हो गये। साड़ी ली और बाहर चले आये। उसी दिन से गौरा के हृदय पर एक बोझ-सा रहने लगा। वह दिल बहलाने के लिए नाना उपाय करती; जलसों में भाग लेती, सैर करने जाती, मनोरंजक पुस्तकें पढ़ती, यहाँ तक कि कई बार नियम के विरुद्ध थियेट्रों में भी गयी, किसी प्रकार अमंगल कल्पना को शान्त करना चाहती थी, पर यह आशंका एक मेघमंडल की भाँति उसके हृदय पर छायी रहती थी।

जब एक पूरा महीना गुजर गया और उसकी मानसिक वेदना दिनोंदिन बढ़ती ही गयी तो कुँवर साहब ने उसे कुछ दिनों के लिए अपने इलाके पर ले जाने का निश्चय किया। उसका मन उन्हें उनके आदर्श-प्रेम का नित्य तिरस्कार किया करता था। वह अक्सर देहातों में प्रचार का काम करने जाया करते थे। पर अब अपने गाँवों से बाहर न जाते, या जाते तो संध्या तक जरूर लौट आते। उनकी एक दिन की देर, उनका साधारण सिर दर्द और जुकाम उसे अव्यवस्थित कर देते थे। वह बहुधा बुरे स्वप्न देखा करती। किसी अनिष्ट के काल्पनिक अस्तित्व की छाया उसे अपने चारों ओर मँडराती हुई प्रतीत होती थी।

वह तो देहात में पड़ी हुई आशंकाओं की कठपुतली बनी हुई थी। इधर उसकी सुहाग की

साड़ी स्वदेश-प्रेम की वेदी पर भस्म होकर ऋद्धि-प्रदायिनी भभूत बनी हुई थी। दूसरे महीने के अन्त में रतनसिंह उसे ले कर लौट आये। गौरा को वापस आये तीन-चार दिन हो चुके थे, पर असबाब के सँभालने और नियत स्थान पर रखने में वह इतनी व्यस्त रही कि घर से बाहर न निकल सकी थी। कारण यह था कि केसर महरी उसके जाने के दूसरे ही दिन छोड़कर चली गयी थी और अभी उतनी चतुर दूसरी महरी मिली न थी। कुँवर साहब का साईस रामटहल भी छोड़ गया था। बेचारे कोचवान को साईस का भी काम करना पड़ता था।

संध्या का समय था। गौरा बरामदे में बैठी आकाश की ओर एकटक होकर ताक रही थी। चिन्ताग्रस्त प्राणियों का एकमात्र यही अवलम्ब है। सहसा रतनसिंह ने आकर कहा-चलो, आज तुम्हें स्वदेशी बाजार की सैर करा लावें। यह मेरा ही प्रस्ताव था, पर चार दिन यहाँ आये हो गये, उधर जाने का अवकाश ही न मिला।

गौरा-मेरा तो जाने को जी नहीं चाहता। यहीं बैठकर कुछ बातें करो।

रतन-नहीं, चलो देख आवें। एक घंटे में लौट आवेंगे।

अंत में गौरा राजी हो गयी। इधर महीनों से बाहर न निकली थी। आज उसे चारों तरफ एक विचित्र शोभा दिखायी दी। बाजार कभी इतनी रौनक पर न था। वह स्वदेशी बाजार में पहुँची तो जुलाहों और कोरियों को अपनी-अपनी दुकानें सजाये बैठे देखा। सहसा एक वृद्ध कोरी ने आकर रतनसिंह को सलाम किया। रतनसिंह चौंककर बोले-रामटहल, तुम अब कहाँ हो?

रामटहल का चेहरा श्रीसम्पन्न था। उसके अंग-अंग से आत्म-सम्मान की आभा झलक रही थी। आँखों में गौरव-ज्योति थी। रतनसिंह को कभी अनुमान न हुआ था कि अस्तबल साफ करनेवाला बुढ़ा रामटहल इतना सौम्य, इतना भद्र पुरुष है। वह बोला-सरकार, अब तो अपना कारबार करता हूँ। जब से आपकी गुलामी छोड़ी तब से अपने काम में लग गया। आप लोगों की निगाह हम गरीबों पर हो गयी हमारा भी गुजर हो रहा है, नहीं तो आप जानते ही हैं, कि किस हालत में पड़ा हुआ था। जात का कोरी हूँ, पर पापी पेट के लिए चमार बन गया था। रतन-तो भाई, अब मुँह मीठा कराओ। यह बाजार लगाने की मेरी ही सलाह थी, बिक्री तो अच्छी होती है।

रामटहल-हाँ सरकार। आजकल खूब बिक्री हो रही है। माल हाथो-हाथ उड़ जाता है। यहाँ बैठते हुए एक महीना हो गया है, पर आपकी कृपा से लोगों के चार पैसे थे वे बेबाक हो गये। भगवान की दया से रूखा-सूखा भोजन भी दोनों समय मिल जाता है और क्या चाहिए। मालकिन की सुहाग की साड़ी का होली में आना कहिए और बाजार का चमकना कहिए। लोगों ने कहा, जब इतने बड़े आदमी हो कर ऐसे शकुन की चीज की परवाह नहीं करते तो फिर हम विदेशी कपड़े क्यों रखें। जिस दिन होली जली है उसके दो-तीन दिन पहले ही सरकार इलाके पर चले गये थे। उसके पहले भी सरकार कई दिनों तक घर से बहुत कम निकलते थे। मैं तो यही कहूँगा कि यह सारी

माया उसी सुहाग की साड़ी की है।

इतने में एक अधेड़ स्त्री गौरा के सामने आ कर बोली-बहू जी, मुझे भूल तो नहीं गयीं?

गौरा ने सिर उठाया तो सामने केसर महरी खड़ी थी। वह सुंदर साड़ी पहने हुए थी, हाथ-पाँव में मामूली गहने भी थे, चेहरा खिला हुआ था। स्वाधीन जीवन का गौरव एक-एक भाव से प्रस्फुटित हो रहा था। गौरा ने कहा-इतनी जल्दी भूल जाऊँगी? अब कहाँ हो? हमें लौटने भी न दिया, बीच में ही उड़ भागी।

केसर-क्या करूँ सरकार, अपना काम चलते देख कर सबर न हो सका। जब तक रोजगार न चलता था तब तक लाचारी थी। पेट के लिए सेवा-टहल, करम-कुकरम सभी करना पड़ता था। अब आप लोगों की दया से हमारे भी दिन लौटे हैं, अब दूसरा काम नहीं किया जाता। अगर बाजार का यही रंग रहा तो अपनी कमाई खाये न चुकेगी। यह सब आपकी साड़ी की महिमा है। उसकी बदौलत हम गरीबों के कितने ही घर बस गये। एक महीना पहले इन दुकानवालों में से किसी को रोटियों का ठिकाना न था। कोई साईसी करता था, कोई तासे बजाता था, यहाँ तक कि कई आदमी मेहतर का काम करते थे। कितने ही भीख माँगते थे। अब सब अपने धंधे में लग गये हैं। सच पूछो तो तुम्हारी सुहाग की साड़ी ने हमें सुहागिन बना दिया, नहीं तो हम सुहागिन होते हुए भी विधवाएँ थीं। सच कहती हूँ, सैकड़ों जबानों से नित्य यही दुआ निकलती है कि आपका सुहाग अमर हो, जिसने हमारी राँड जात को सुहाग दान दिया।

रतनसिंह एक दुकान पर बैठकर कुछ कपड़े देखने लगे। गौरा का भावुक हृदय आनंद से पुलकित हो रहा था। उसकी सारी अमंगल कल्पनाएँ स्वप्नवत विच्छिन्न होती जाती थीं। आँखें सजल हो गयी थीं और सुहाग की देवी अश्रुसंचित नेत्रों के सामने खड़ी आँचल फैला कर उसे आशीर्वाद दे रही थी। उसने रतनसिंह को भक्तिपूर्ण आँखों से देख कर कहा-मेरे लिए भी एक साड़ी ले लो। जब गौरा यहाँ से चली तो सड़क की बिजलियाँ जल चुकी थीं। सड़कों पर खूब प्रकाश था। उसका हृदय भी आनंद के प्रकाश से जगमगा रहा था।

रतनसिंह ने पूछा-सीधे घर चलूँ?

गौरा-नहीं, छावनी की तरफ होते चलो।

रतन-बाजार खूब सजा हुआ था।

गौरा-यह जमीन ले कर एक स्थायी बाजार बनवा दो। स्वदेशी कपड़ों की दुकानें हों और किसी से किराया न लिया जाय।

रतन-बहुत खर्च पड़ेगा।

गौरा-मकान बेच दो, रुपये ही रुपये हो जायेंगे।

रतन-और रहें, पेड़ तले?

गौरा-नहीं, गाँववाले मकान में।

रतन-सोचूँगा।

गौरा-(जरा देर में) इलाके-भर में खूब कपास की खेती कराओ, जो कपास बोये उसकी बेगार माफ कर दो।

रतन-हाँ, तदबीर अच्छी है, दूनी उपज हो जायेगी।

गौरा-(कुछ देर सोचने के बाद) लकड़ी बिना दाम दो तो कैसा हो? जो चाहे, चरखे बनवाने के लिए काट ले जाये।

रतन-लूट मच जायेगी।

गौरा-ऐसी बेईमानी कोई न करेगा।

जब उसने गाड़ी से उतर कर घर में कदम रखा तो चित्त शुभ-कल्पनाओं से प्रफुल्लित हो रहा था। मानो कोई बछड़ा खूँटे से छूटकर किलोलें कर रहा हो।

सर्वश्रेष्ठ स्लोगन – 2013

*हुआ सटीक मौसम पूर्वानुमान,
हम बड़े विकास की ओर ।
जनता का विश्वास जगा,
अब बँधी विश्वास की डोर ।*

- श्री रामहरि शर्मा

वैज्ञानिक सहायक, ई.एम.आर.सी.(ओजोन)
मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

कैसे बदलते हैं मौसम

(07 मार्च 1988 को रेडियो में प्रसारित)

- डॉ आर. के. दत्ता, निदेशक

उ.गो.वि.केंद्र

हिंदी अनुवाद- रेवा शर्मा

हम देखते हैं कि प्रकृति ऋतुओं का एक नियमित अनुक्रम उत्पन्न करती है जैसे कि शीत ऋतु के बाद बसंत, ग्रीष्म और पतझड़ ऋतु आती है। यह भी दिलचस्प बात है कि जब हम दिल्ली में शीत ऋतु में ठंड से कांप रहे होते हैं तब ऑस्ट्रेलिया के सिडनी नगर में हमारे मित्र ग्रीष्म ऋतु का आनन्द ले रहे होते हैं।

हैं कि किन्हीं निश्चित या जहाँ कहीं भी काफी गर्मी एयरकंडिशनरों की काफी माँग में ग्रीष्म ऋतु में इतनी गर्मी व्यवसाय से जुड़े लोगों की

आइए, इन मुख्य करें। पहला, जब ऋतुएं बनती प्रकार होता है? दूसरा, उत्तरी नगर की ऋतु दक्षिणी गोलार्द्ध ऋतु से विपरीत क्यों है? हम विशेष रूप से चर्चा करेंगे। का प्रयत्न करेंगे कि क्यों एक होती है जबकि किसी अन्य है।

यादों के झरोखे से

यह लेख मौसम मंजूषा के दिसंबर 1988 के 'शरद अंक' में प्रकाशित किया गया था। डॉ आर.के.दत्ता, निदेशक सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

सुश्री रेवा शर्मा, वर्तमान में वरिष्ठ हिंदी अधिकारी और मौसम मंजूषा की संपादक हैं।

ऐसा क्यों है? फिर हम देखते विशेषतः गर्मियों में दिल्ली में पड़ती है, वहाँ पंखों, कूलरों, होती है। जबकि किन्हीं वर्षों नहीं पड़ती और कूलर बिक्री नहीं के बराबर होती है।

प्रश्नों को समझने का प्रयत्न हैं तो उनका अनुक्रम किस गोलार्द्ध के महाद्वीप के दिल्ली में स्थित सिडनी नगर की भारत की ऋतुओं की भी अंत में हम यह उत्तर देने वर्ष एक विशेष ऋतु मध्यम वर्ष में वह प्रचण्ड हो जाती

हमारी पृथ्वी की दो प्रकार की गतियाँ हैं। पहली, वह अपनी धुरी (axis) के चारों तरफ लट्टू की तरह घूमती है और 24 घण्टों में चक्र पूरा करती है। इस गति से दिन और रात बनते हैं। पृथ्वी का वह भाग और जितनी समयावधि तक वह सूर्य के सामने रहता है वहाँ दिन माना जाता है और जब वह सूर्य से विमुख होता है तो रात होती है। यदि पृथ्वी की धुरी कक्षीय समतल (orbital plane) से 90 डिग्री के कोण पर होती तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर दिन और रात की अवधि एक समान होती, यानी 12 घंटे का दिन और 12 घंटे की रात। वास्तव में पृथ्वी की धुरी अपने कक्षीय धरातल से 66½ डिग्री झुकी हुई है, इससे विश्व के विभिन्न स्थानों और विभिन्न ऋतुओं में तथा दिन और रात की समयावधि में भिन्नता आती है। आगे जब हम ऋतुओं की बात करेंगे तो इस बात की भी चर्चा करेंगे।

पृथ्वी की दूसरी गति, पृथ्वी के कक्षीय समतल के साथ-साथ सूर्य की परिक्रमा करती है। सम्पूर्ण कक्षीय गति (complete orbital motion) लगभग 365 में से $\frac{1}{4}$ दिन का समय से लेती है। आपको 365 में से $\frac{1}{4}$ की वृद्धि याद होगी। अर्थात् प्रत्येक चार वर्षों के बाद अधिवर्ष (लीप ईयर) के रूप में घोषणा करके यानी 24 घंटों का एक पूरा दिन और जोड़कर एक परिक्रमा की पूर्ति की जाती है जो हर चौथे वर्ष 29 फरवरी के रूप में होता है। आइए, यह समझें ऐसा किस प्रकार होता है?

मैंने पहले संकेत किया था कि पृथ्वी की धुरी लम्बाकार यानी वर्टिकल नहीं है बल्कि वह $66\frac{1}{2}$ डिग्री झुकी हुई है। इस कारण सूर्य की परिक्रमा के दौरान कभी उत्तरी ध्रुव सूर्य के सामने होता है जबकि किसी अन्य समय में दक्षिणी ध्रुव सूर्य की तरफ झुका होता है। मध्यवर्ती समय में दोनों ध्रुव समान रूप से सूर्य की ओर झुके होते हैं। अब जरा 21 जून पर विचार कीजिए। इस दिन उत्तरी ध्रुव सूर्य के निकटतम होता है और पृथ्वी की परिक्रमा के समय सूर्य उत्तरी ध्रुव के 24 घंटे सामने रहता है। जैसे ही हम भूमध्य रेखा पर पहुँचते हैं यह अवधि 12 घंटे कम हो जाती है। जैसे ही हम दक्षिणी ध्रुव, (अंटार्कटिका के भारतीय स्टेशन दक्षिण गंगोत्री का नाम तो आपने सुना ही होगा।) कुछ दूरी पर पहुँचते हैं जिसे दक्षिणी गोलार्द्ध कहते हैं, जो भूमध्य रेखा के दक्षिण में है, सूर्य से परे रहने के कारण दिन की अवधि कम होती जाती है और लगभग शून्य हो जाती है। इसलिए 21 जून को स्थिति यह रहती है कि वहाँ पूरा दिन यानी 24 घंटे सूरज चमकता है तथा पूरे उत्तरी गोलार्द्ध में रात की तुलना में दिन बड़े होते हैं जबकि दक्षिणी गोलार्द्ध में इसके विपरीत होता है। यानि दिन छोटे होते हैं। दक्षिणी ध्रुव के निकट अंटार्कटिका में 24 घंटे की रात होती है और इसीलिए दक्षिण गोलार्द्ध में शीतकाल होता है। अतः आपने यह देखा होगा कि उत्तरी गोलार्द्ध और दक्षिणी गोलार्द्ध की ऋतुएं आपस में एक दूसरे से भिन्न हैं, और जब दिल्ली में ग्रीष्म ऋतु होती है तो सिडनी में शीत ऋतु होती है।

जैसे ही हम सितम्बर माह पर पहुँचते हैं पृथ्वी सूर्य के समक्ष ऐसी होती है कि पृथ्वी का अधिकतम भाग सूर्य का सामना कर रहा होता है। 23 सितम्बर को, जिसे हम विषुव (Equinox) कहते हैं, 12 घंटे का दिन और 12 घंटे का रात होती है। यह उत्तरी गोलार्द्ध में पतझड़ का आरम्भ माना जाता है। जैसे ही पृथ्वी आगे दिसम्बर की ओर बढ़ती है तो वह जून से एकदम भिन्न हो जाती है। इस समय दक्षिणी ध्रुव सूर्य की ओर झुका हुआ होता है और उत्तरी ध्रुव सूर्य से परे होता है इसलिए दक्षिणी ध्रुव और अंटार्कटिक में 24 घंटे का दिन होती है और उत्तरी ध्रुव में 24 घंटे की रात होती है। दिसम्बर से मार्च तक उत्तरी गोलार्द्ध में शीतकाल और दक्षिणी गोलार्द्ध में ग्रीष्मकाल होता है। पुनः 21 मार्च के दिन विषुव आता है। उत्तरी गोलार्द्ध में बसंत ऋतु और दक्षिणी गोलार्द्ध में पतझड़ (शरद) होता है। अतः हम देखते हैं कि किस प्रकार ऋतुओं का अनुक्रमण होता है और किस प्रकार दो गोलार्द्ध में ऋतुओं की स्थिति भिन्न हो जाती है।

पृथ्वी पर भूमध्य रेखा के निकट प्रदेशों में स्थिति विशेष रूप से भिन्न है। पूरे वर्ष के दौरान चाहे कोई भी ध्रुव सूर्य की ओर झुका हुआ हो, भूमध्यरेखीय प्रदेश भूमध्य रेखा के दोनों तरफ के प्रदेश लगभग लम्बाकर सूर्य किरणें प्राप्त करता है। दिन और रात की अवधि का अन्तराल लगभग 12 घंटों का होता है जैसे 12 घंटे का दिन और 12 घंटे का रात।

भारत का मध्य भाग कर्क रेखा पर स्थित है। भूमध्य रेखा भी भारत के दक्षिणी छोर से कोई बहुत दूर नहीं है और इससे एक महीने में दूसरे महीने के तापमान में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता है तथापि उत्तरी भारत में सभी प्रकार के मौसम का अनुक्रम होता है जिसकी चर्चा हमने उत्तरी गोलार्द्ध के संदर्भ में की थी। किंतु फिर भी हमारे देश में ऋतुओं का अनुक्रमण वैसे नहीं होता है। जैसा कि आप जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि उत्पादन बहुत कुछ वर्षा पर निर्भर करता है।

भारत में वर्षा की प्रधानता जून से सितम्बर में होती है। यह ऋतु दक्षिणी पश्चिमी मॉनसून के नाम से जानी जाती है। प्रबल दक्षिणी पश्चिमी पवनें अरब सागर के ऊपर से होकर बहती हैं। इसके कारण पश्चिमी घाट पर प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है। ये पवनें ही आगे चलकर दक्षिण पूर्व दिशा की ओर से बढ़ने लगती हैं और बंगाल की खाड़ी में प्रवेश करके बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा में वर्षा करती हुई राजस्थान की तरफ बढ़ती हैं। इसकी प्रगति लगभग हिमालय के समानान्तर ही होती है। देश के लगभग सभी भागों में 70 प्रतिशत वार्षिक वर्षा इसी समय होने के कारण यह बहुत ही महत्वपूर्ण ऋतु है; अन्य सभी ऋतुएं इससे जुड़ी हुई हैं।

जून से सितम्बर तक मॉनसून काल, अक्टूबर से नवम्बर तक उत्तर मॉनसून काल, दिसम्बर से फरवरी तक शीतकाल, ध्यान दें कि शीतकाल केवल भारत के उत्तरी भाग में हैं। दक्षिणी भारत में व्यवहारतः सर्दी लगभग नहीं के बराबर होती है।

अन्त में मॉनसून पूर्व काल या ग्रीष्म ऋतु मार्च से मई तक है। अतः दिसम्बर-फरवरी शीतऋतु है। मार्च से मई मॉनसून पूर्व काल जून से सितम्बर मॉनसून काल और अक्टूबर से नवम्बर तक मॉनसूनोत्तर काल या उत्तर पूर्वी मॉनसून काल हमारी ऋतुएं हैं।

यद्यपि दीर्घकालिक औसत स्थिति में प्रत्येक ऋतु का सामान्य रूप ही होता है। किन्तु प्रत्येक ऋतु की अपनी विशिष्टताएं होती हैं जोकि वायुमंडल परिचालन से वृहत परिमाण परिवर्तन से जुड़ी हुई हैं। यह एक ग्रीष्म ऋतु या मानसून ऋतु को दूसरे से भिन्न बनाती है।

इसके अतिरिक्त, उसी अवधि के दौरान उसी अक्षांश पट्टी के साथ-साथ विभिन्न स्थानों में मौसम की विभिन्न तीव्रता होती है, यह स्थान विशेष की समुद्र से ऊँचाई और समुद्र की दूरी के कारण होती है। जैसा कि आप जानते हैं, समुद्र से तट की ओर, और तट से समुद्र की ओर बहने वाली हवाओं के कारण समुद्र तट के साथ-साथ वाले स्थानों पर मौसम मध्यम रहता है और ऊँचाई के कारण पर्वतीय स्थानों पर तापमान कम रहता है, अर्थात् ये स्थान अपेक्षाकृत अधिक ठण्डे होते हैं।

हिंदी को गंगा नहीं बल्कि समुद्र बनना होगा ।

-विनोबा भावे

मौसम विभाग- एक बहुउद्देशीय संस्था

श्री विक्रम सेन,

वरिष्ठ प्रेक्षक

मौसम कार्यालय-अम्बिकापुर

कम्प्यूटर

आधुनिक आविष्कारों में कम्प्यूटर एक नई क्रांति का सूचक है, जिसने मानव सभ्यता के इतिहास में एक नई कड़ी जोड़ दी है। कम्प्यूटर का कार्यक्षेत्र काफी विस्तृत है। आज के युग में शायद ही कोई क्षेत्र कम्प्यूटर से अछूता होगा। कम्प्यूटर में कई प्रकार की सूचनाओं को संचित किया जा सकता है। इस प्रकार कहने के बदले सूचना के वाला उपकरण कह सकते हैं।

कम्प्यूटर की संरचना में 'हार्ड वेयर' और 'सॉफ्ट वेयर'। केंद्रीय संगणना प्रभाग को गया है। कम्प्यूटर से कार्य लेते प्रोग्राम बनाया जाता है, जिसे जाता है, जिसे कम्प्यूटर समझ साफ्टवेयर कहते हैं।

हम सभी जानते हैं कि जिसका वायुमंडल उसकी

पृथ्वी की वायुमंडलीय स्थिति के प्रेक्षण में मौसम विज्ञान सेवाएं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः ताप, दाब, आर्द्रता एवं वर्षा आदि आँकड़ों का लेखा-जोखा दिन, महीनों तथा वर्षों के हिसाब से रखना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार मौसम विज्ञान में कम्प्यूटर की भूमिका उल्लेखनीय है।

मौसम संबंधी सूचना एवं आँकड़ों को कम्प्यूटर के अंदर ले जाने का काम 'इनपुट' उपकरण करता है। ये सूचना एवं आँकड़ों को मेमोरी के रूप में रख लेता है। गणना करने का काम केंद्रीय संगणना प्रभाग करता है। अंत में परिणाम को पहुँचाने का काम आउटपुट उपकरण करता है।

कई मौसम संबंधी आँकड़ें इस प्रकार के भी होते हैं, जिन्हें बार-बार उपयोग में लाया जाता है और स्थायी तौर से संगृहीत करके रखा जाता है। इन्हें मुख्य 'मेमोरी' पर नहीं रखा जाता बल्कि

यादों के झरोखे से

यह लेख मौसम मंजूषा के सितंबर-1994 के अंक में प्रकाशित किया गया था।

श्री विक्रम सेन, वर्तमान में सहायक मौसम विज्ञानी हैं और मुख्यालय में तैनात हैं।

कम्प्यूटर को सिर्फ संगणक आधार पर संगणना करने

मुख्यतः दो भाग होते हैं- इनपुट आउटपुट, मेमोरी तथा मिलाकर हार्डवेयर नाम दिया समय एक पूर्व निश्चित कम्प्यूटर की स्मृति में भरा सके। इस लिखित प्रोग्राम को

पृथ्वी एक सजीव ग्रह है, सजीवता की पहचान है।

स्थाई तौर पर संगृहीत करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरण प्रयोग में लाए जाते हैं, जिन्हें 'बैंकिंग, स्टोर' कहते हैं।

भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम संबंधी जानकारी, आँकड़ों व सूचना का एक बृहत केंद्र बन गया है। विश्व में जानकारी या सूचना के लेन-देन में क्रांति लाने वाले कम्प्यूटरों की उपयोगिता बढ़ गई है। इन कम्प्यूटरों में संगृहीत सूचनागारों की सहायता प्राप्त की जा सकती है।

विभागीय कार्यालयों में व्यक्तिगत कम्प्यूटरों का उपयोग भी किया जा रहा है। नई दिल्ली व पुणे में पुराने कम्प्यूटर के स्थान पर नये कम्प्यूटर लगाने का कार्य प्रगति पर है।

पूर्वानुमान

मौसम संबंधी पूर्वानुमान में इन्हीं आँकड़ों का औसत मान कई क्षेत्रों में सहायक सिद्ध होता है। इससे दीर्घ अवधि व लघु अवधि पूर्वानुमान तैयार किए जाते हैं। दीर्घ अवधि पूर्वानुमान 'मॉनसून' से संबंधित होते हैं। लघु अवधि पूर्वानुमान चक्रवाती तूफानों से संबंधित होते हैं। इस सम्पूर्ण दायित्व का निर्वहन भारत मौसम विज्ञान विभाग अपनी पूर्ण गरिमा के साथ करता है। इस दायित्व को पूरा करने के लिए कोलकाता, चेन्नै और मुंबई के क्षेत्रीय चक्रवात चेतावनी केंद्र सदैव सजग रहते हैं। इस काम में भुवनेश्वर, विशाखापट्टनम और अहमदाबाद स्थित चक्रवात चेतावनी केंद्रों का सहयोग रहता है। दस शक्तिशाली चक्रवात संसूचक रडार छः पूर्वी तट पर क्रमशः कोलकाता, पारादीप, विशाखापट्टनम, मछलीपटनम, चेन्नै व कराईकाल तथा चार पश्चिमी तट पर क्रमशः भुज, मुंबई, गोवा व कोचीन मौसम सेवाएं स्थित हैं।

उपग्रह मौसम सेवाओं से भी महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। विभाग के दूर संचार माध्यम तथा विनाश चेतावनी प्रणाली (डी. डब्ल्यू. एस.) चेतावनियों को प्रसारित करने में मुख्य भूमिका अदा करते हैं। इस प्रकार भारत मौसम विज्ञान विभाग नागरिकों की मौसम संबंधी कठिनाई और क्षति को कम करने में मुख्य भूमिका निभाता है। विभाग के द्वारा जारी पूर्वानुमान तथा चेतावनी के आधार पर तत्काल कार्यवाही करने पर जानमाल की हानि कम करने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। भारत मौसम विज्ञान विभाग को उसके सहकर्मियों के उत्तम कार्य पर गर्व है। विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली कृषि-मौसम सेवाएं भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मौसम सेवाएं

भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं जलवायु, सिंचाई, कृषि उत्पादन, विमानन, समुद्र-विज्ञान व दक्षिणी ध्रुव-अनुसंधान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस विभाग द्वारा जारी पूर्वानुमान सेवाओं से आम जनता, विमानन, मात्स्यकी, मत्स्य उद्योग तथा जल-प्रबंध आदि अनेक क्षेत्र लाभान्वित होते हैं।

विशेषताएं

इस प्रकार भारत मौसम विभाग विभाग बहुउद्देशीय संस्था है जिसकी निम्नलिखित विशेषताएं हैं:-

1. एक अखिल भारतीय विभाग के रूप में 120 वर्ष पुराना विभाग है।
 2. विश्व मौसम संगठन का संस्थापक सदस्य है।
 3. विश्व की विकसित मौसम विज्ञान सेवाओं में से एक है।
 4. विकासशील देशों की मौसम विज्ञान सेवाओं में प्रमुख है।
 5. पूर्वानुमान तकनीकों को विकसित करने में अग्रणी है और आधुनिक टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर रहा है।
- उदाहरण:- रेडार, कम्प्यूटर, संदेश स्विचन, भू-स्थित उपग्रह आदि ।
6. मौसम विज्ञान संबंधी आँकड़ों के विशाल भण्डार का धारक है जो कि विकासात्मक योजनाओं के लिए राष्ट्रीय स्रोत है।

उपलब्धियाँ

इस विभाग ने निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं।

1. जनरल सरकुलेशन ऑफ एटमोस्फियर की खोज 66 वर्ष पूर्व।
2. प्रथम दीर्घ अवधि पूर्वानुमान 67 वर्ष पूर्व जारी किया।
3. ओजोन प्रेक्षण 46 वर्ष पहले प्रारम्भ किया।
4. पहला साइन्टिफिक कम्प्यूटर 31 वर्ष पूर्व संस्थापित किया गया।
5. पहला कार्यकारी रेडार 36 वर्ष पूर्व लगाया गया।
6. प्रथम टेलिकॉम कम्प्यूटर 17 वर्ष पूर्व संस्थापित किया गया।
7. नेशनल डाटा सेंटर 15 वर्ष पूर्व।

संकलन: उपर्युक्त लेख में सभी जानकारीयाँ महानिदेशक द्वारा प्रेषित पत्रों द्वारा ली गई हैं, जिन्हें क्रमबद्ध रूप से देकर भारत मौसम विज्ञान विभाग की अतुलनीय छवि को साकार करने का प्रयास किया गया है।

काव्य फुहार

-डॉ. ओमप्रकाश सिंह

वैज्ञानिक 'एफ' (सेवानिवृत्त)

प्रादेशिक मौसम केंद्र, नई दिल्ली



बिजली

सुना है,

आज

एक भयंकर झंझावात में

भीषण बिजली गिरी

और

एक किसान

अपने बैलों सहित

खेत पर उसका शिकार हो गया,

घर के अन्दर

बिरयानी का आनंद उठाते

एक सज्जन ने कहा-

ऐसे खराब मौसम में

वह किसान

खेत पर गया ही क्यों था?

तभी

चावल का एक दाना

उसके गले में

अटक कर

उसके प्रश्न का उत्तर दे गया ।

मृगतृष्णा

जहरीली बारिश,

विषाक्त वायु

और

कर्णभेदी ध्वनि-प्रदूषण

का विकल्प ही

क्यों चुना उसने?

जबकि वह तो आदी था शुद्ध जल एवं

वायु का

तथा

शांत परिवेश का,

शायद

भागा वह

मृगमरीचिका के

सम्मोहन में

और

छला गया

इसी आसक्ति में ।

बेमौसम की बारिश



बेमौसम की बारिश ने
कर दिया स्वाहा
उसका सर्वस्व,
ध्वस्त हो गई
घर की दीवार,
तिल तिल जलेगी
पूरे एक साल अब
अगली फसल तक,
पर कुछ लोग
बहुत खुश हैं,
उन्हें राहत जो मिली
भीषण गर्मी से,
उन्हें तो
अक्सर चाहिए
बेमौसम की बारिश ।

मौसम

गिरगिटी परिवेश में
शायद
मौसम भी रंग
बदलने लगा है
तभी तो
वादा करके
बारिश नहीं आती,
हेमन्त की प्रतीक्षा में
निराश होकर
लौट जाते हैं पौष-माघ
और बसंत सिमट जाती है
महज कुछ दिनों में,
फैलता जा रहा है
सिर्फ
ग्रीष्म का साम्राज्य।

कर्णधार

स्याह कर गए
परिवेश
वे कर्णधार
जिन्होंने
उठाया था बीड़ा
उजाले का,
समेट कर
सारी रोशनी
भर लिए
अपने दामन
और
छोड़ दिए
घोर तमस
औरों के लिए।

बारिश

क्यों पड़ी है
मुँहबाए सीप
स्वाति की एक बूँद के लिए
और
लगाए है टकटकी
नभ की ओर चातक? कहाँ
रहे
अब
बारिश वाले मेघ?
जो हैं भी

कर रहे हैं
सिर्फ
जहरीली बारिश।

वक्त की मार

साहब,
हमने देखा है आकाश में,
बहुत ऊँचे आकाश में
उड़ते हुए
शक्तिशाली चील को,
जिसके भय से
मची थी त्राहि-त्राहि धरती
पर,
परन्तु,
एक दिन वही चील
वक्त की मार से
घायल होकर
गँवा बैठा अपने मजबूत
पंख
तथा
पड़ा था धरातल पर
एक असहाय के सदृश
उन्हीं का दया-पात्र बनकर
जिनको,
कभी,
उसने किया था त्रस्त ।

मेरा कुसूर

फिर एक भेड़िए ने
 मुझ पर
 झपट्टा मारा है,
 मेरा कुसूर-
 सिर्फ इतना है कि
 मुझमें गोशत है,
 अगर मैं ढूँढ होता
 तो वही भेड़िया
 जंगल में थक जाने के बाद
 मेरे पास ठहरता,
 अपना थुथुना रगड़ता,
 और चल देता
 फिर,
 किसी हाड़-माँस वाले का
 शिकार करने।
 परवाह नहीं है मुझे
 भेड़ियों के झपट्टों की,
 मुझे तो गर्व है कि-
 मुझमें गोशत है
 बेचारे ढूँढ का तो
 अस्तित्व ही है निरर्थक ।

जोंक

जोंक बनकर
 लहू चूसते हैं मानवता का
 वे संकीर्ण लोग
 जिनको,
 समय के चक्र ने
 सिर्फ
 समय के चक्र ने
 पहुँचा दिया शिखर पर
 और जिनको
 ग्रस लिया दंभ ने।
 मुक्त भाव से बाँटते हैं
 ये लोग
 दंशन और चुभन
 तथा
 रिपु बन जाते हैं
 प्रगति के,
 विकास के,
 एवं
 उस सभी कुछ के
 जो धनात्मक है ।

झंझावात

झंझावातों की बातें
 क्या करेगी
 उद्वेलित उसे
 जिसने
 हजार-हजार
 लोरियाँ
 झंझा से सुनी,
 राह चला
 बिजली की चमक
 के सहारे,
 दोस्ती की
 आँधियों से
 तथा खेला
 ज्वार-भाटा
 के संग।



जिन्दगी का अर्थ

हसरतों के बोझ से जब
 थक गए हम इस कदर
 एक कदम भी हो गया
 चलना हमें अत्यन्त दुष्कर।
 तभी जला डाली चिता में
 हर तमन्ना चाह को
 दर्द की बुनियाद को
 और जिन्दगी की आह को। राह में
 आगे बढ़ा जब
 हसरतों से मुक्त होकर
 हो गया बेस्वाद जीवन
 हसरतों बिन और दूभर।
 मारकर सारी तमन्ना
 खो दिए हम अर्थ सारे
 जिन्दगी की राह में
 थे चल रहे जिनके सहारे।

ये क्या कर गया मौसम ?

पावस

आँखे भर गया मौसम

ये क्या कर गया मौसम?

कैसी चली हवा पुरवाई
तन-मन ने ली अंगड़ाई
शूल बन गई ये तनहाई
इतनी उनकी याद सताई

सब कुछ हर गया मौसम

ये क्या कर गया मौसम?

सावन की पगली बयारों में
रिम-झिम बरसाती फुहारों में
पावस के बेदर्द नजारों में
नदिया के ढहते कगारों में

बना बेघर गया मौसम

ये क्या कर गया मौसम ?

मुश्किल से ये दिल बहला था
खुशियों का मौका पहला था
जीवन का रंग रूपहला था
किस्मत ने रूख बदला था

ढा कहर गया मौसम

ये क्या कर गया मौसम?

महलों की चार दीवारी से
फैल रही मक्कारी से
घटिया चाटुकारी से
अपनों की गद्दारी से

क्यों डर गया मौसम

ये क्या कर गया मौसम?

दुल्हन जैसा खेत सजा था
धानी सा परिवेश रचा था
गाँव में खुशियों का पहरा था
मेघों का जब दल उभरा था

कैसे बिखर गया मौसम

ये क्या कर गया मौसम ?

पावस की है अजब कहानी

क्यों कहलाए ऋतुओं की रानी?

जीवन अस्त-व्यस्त हो गया
भटक रहे हैं बेघर होकर
बच्चे सारे भूख से विह्वल
तपड़ रहे हैं मृत से होकर

चारों तरफ पानी ही पानी

क्यों कहलाए ऋतुओं की रानी ?

मचा हुआ है हाहाकार
जल मग्न हो गया सारा घरबार
सहन कर रहे घोर निरादर
समृद्ध बन गया है लाचार

नेता जी ने सर्वे की ठानी

क्यों कहलाए ऋतुओं की रानी

पानी में नित्य-कर्म कर रहे
झील बन गया उसका खेत
खेती सारी नष्ट हो गई
सोचकर हुआ कृषक अचेत

वर्षा की यह कैसी मनमानी

क्यों कहलाए ऋतुओं की रानी ?

फैले रहे हैं रोग भयंकर
गंदगी से हो गया जीना दूभर
हिलोर ले रहीं लहरें पथ पर
रूग्णालय भी जाना दुष्कर

व्यथा देख होती हैरानी

क्यों कहलाए ऋतुओं की रानी ?

संपर्क टूट गया सारी दुनिया से
टापू बन गया मेरा ग्राम
जल-समाधि की नौबत आ पहुँची
आए नहीं अपने भी काम

पराए कर रहे आना कानी

क्यों कहलाए ऋतुओं की रानी ?

यादों का व्यापारी

देवेन्द्र प्रधान

वैज्ञानिक 'ई'

प्रादेशिक मौसम केंद्र-कोलकाता

यादों से झोली है भारी ।
यादों को कंधे पर टांगे,
दुनिया कितनी लगती प्यारी ।
मैं यादों का हूँ व्यापारी ।

हैं कुछ यादें कड़वी सी,
और कुछ यादें मीठी सी,
कड़वी यादों को छुपाकर,
बाँटता हूँ यादें प्यारी ।
मैं यादों का हूँ व्यापारी ।

यादें ले लो, यादें दे दो,
पुकारता मैं जाता हूँ
आगे ही बढ़ते जाना है,
लौट नहीं मैं पाता हूँ ।
हैं कुछ यादें हल्की हल्की,
और कुछ यादें भारी भारी।
मैं यादों का हूँ व्यापारी ।

बेचता हूँ यादें न्यारी,
जैसी जिसको लगती प्यारी।
मोल ले लो यादें सारी,
नहीं कोई है मारा मारी ।
मैं यादों का हूँ व्यापारी।

ना लेता मैं दाम किसी से,
ना मैं पैसे का व्यापारी ।
एक मुस्कान प्यारी प्यारी,
और ले जाओ यादें सारी ।
मैं यादों का हूँ व्यापारी ।

पल पल जाता हुआ समय,
यादों में बस जाता है ।
कौन जाने कब किसकी,
खत्म हो जीवन की पारी ।
मैं यादों का हूँ व्यापारी ।

यह मेरा है, यह तेरा है,
छोड़ दो ये बातें सारी ।
भूल के सारी कड़वी यादें,
रख लो यादें प्यारी प्यारी।
मैं यादों का हूँ व्यापारी ।

बूझो तो मैं कौन हूँ
घूमता हूँ दुनिया सारी ।
निराकार और अदृश्य भी,
फिर भी देखे दुनिया सारी।
मैं यादों का हूँ व्यापारी।

परिचय देता मैं अब तुम को,
जान लो ये बातें सारी,
समय हूँ मैं चलता हुआ,
ना मैं नर हूँ ना मैं नारी,
मैं यादों का हूँ व्यापारी ।

बोझ लगता है काँधे पर,
यादों से झोली है भारी ।
दे दो मुझको कड़वी यादें,
ले जाओ सब यादें प्यारी ।
मैं यादों का हूँ व्यापारी ।

जैसलमेर का मौसम

-कालूराम शर्मा

वैज्ञानिक सहायक

बेतार ध्वनि/बेतार वायु वेधशाला, जोधपुर

जैसलमेर के मौसम की अनोखी कहानी

कार्यालय पर चमकती गेंद लगती सुहानी।

गर्मी ऋतु में बहती पसीने की धारा

कम आर्द्रता से हो जाता वाष्पन सारा।

गर्मी ऋतु में दक्षिण-पश्चिमी हवाओं की रफ्तार

अपने साथ लाती महीन बालू रेत का अम्बार।

कितना ही ढककर रखो अपना घर

धूल भरी आँधी कर देती बालू से तर।

गर्मी ऋतु में तेज लू चलती है

लोगों का जीवन मुश्किल करती है।

तेज गर्मी से बनती निम्न दाब की ढाल

धूल भरी आँधी की इसलिए सतत चाल।

गर्मी ऋतु में रातें होती हैं सुहानी जबरदस्त

नम दक्षिणी-पश्चिमी हवायें करती हैं मस्त।

बालू का गुण जल्दी गर्म व जल्दी होना ठण्डा

गर्मी ऋतु में रातें सुहानी होने का यही फण्डा।

सर्द रातें देती हैं सबको झकझोर

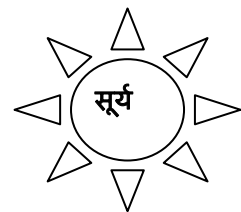
दिन में सूर्यदेव दिखाते अपना जोर।

सर्दी ऋतु में उत्तरी, उत्तरी-पूर्वी हवाएँ

मंद गति व शांत स्वभाव सबको भाएँ

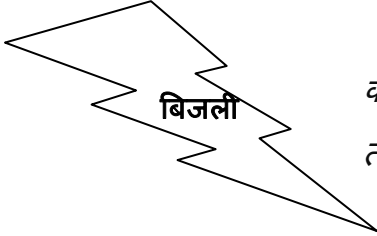
आर्द्रता सर्दी ऋतु में होती है बहुत ही कम

शरीर की चमड़ी लगती है शुष्क हरदम।



वर्षा ऋतु में बादल आते हैं घनघोर
वर्षा के मामले में होते हैं कमजोर।

वायुमण्डल में वर्षा बूंदों का निस्तारण
यही जैसलमेर में कम वर्षा का कारण।



कपासी वर्षी मेघों से बिजली का चमत्कार
तेज गरजकर बादल भरते हैं हुंकार।

वर्षा ऋतु में वर्षा होती है बहुत कम
राजस्थान नहर ने दिखाया अपना दम।



राजस्थान नहर ने बंजर भूमि को चमकाया
नहरी क्षेत्र में हरियाली का आलम छाया।



नहरी क्षेत्र में होती है कई प्रकार की फसलें
हरियाली से पनपी जंगली जानवरों की नस्लें।

वर्ष में आठ माह रहता हवाओं का जोर
अतः पवन चक्कियाँ जैसलमेर में चहुँ ओर।
सौर विकिरण की जैसलमेर जिले में भरमार
सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन का आया विचार।

भारत के सभी भागों में सारी शिक्षा का एक उद्देश्य हिंदी का पूर्ण ज्ञान भी होना चाहिए। हिंदी का भारत की राष्ट्रभाषा होना निश्चित है। संचार-व्यवस्था और वाणिज्य की प्रगति निश्चित ही यह कार्य सम्पन्न करेगी।

-चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

बॉस ! कुछ तो गड़बड़झाला है.....

-आनन्द कुमार शर्मा
वैज्ञानिक-ई'
मौसम केन्द्र-देहरादून

क्यों देश का निकला दिवाला है
क्यों गरीब का छिना निवाला है
क्यों हो रहा नित नया घोटाला है
क्यों निरंतर माननीयों का काफिला है /
बॉस कुछ तो गड़बड़झाला है.....

क्यों छलक रहा अमीरों का प्याला है
क्यों जाति धर्म यहां राजनीति का मसाला है
क्यों हवा का रंग काला है
क्यों पैसे भेजने का जरिया हवाला है/
बॉस कुछ तो गड़बड़झाला है.....

क्यों नदी बनी एक नाला है
क्यों लैंड यूज को बेदर्री से बदल डाला है
क्यों पेड़ों को काटकर
प्रकृति को उजाड़ डाला है
बॉस कुछ तो गड़बड़झाला है.....

क्यों सारी आपदाओं का कारण
क्लाईमेट चेंज पर मढ़ डाला है
क्यों यही विकास का फार्मूला है
क्यों मौसम करता जादू सा है
बॉस इसीलिए अपने विभाग का बोलबाला है/

संभल जा

- सुषमा सिंह

वैज्ञानिक सहायक

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

पेड़ों को न आहुति चढ़ाया होता
धरा पे जो इन को बचाया होता
तो ये सैलाब, जो आया है, न आया होता
न उजड़ते तेरे रोशन ये चमन
जो रौंद के फूलों को, महल न अपना बनाया होता।

जो न छीनते वादियों से उनकी हरियाली
तेरे दर पे भी न उदासी का ये साया होता
अपने लालच के लिए धरती माँ को रौंद दिया
अब क्यों रोता है जो, छिना है तेरे घर का दिया।

रूठी ये प्रकृति औं ये खुदाई
कीमत देख तूने क्या है चुकाई
तूने जो वृक्ष न कटवाए होते
काश नए-नए वृक्ष लगाए होते।

तूने नदियों को जो छेड़ा है, न छेड़ा होता
जो उनका रास्ता घेरा है, न घेरा होता
जो तूने उनके दामन को न बांधा होता
तो उजड़ा न तेरा बसेरा होता।

शिव ने तीसरी आँख जो खोली है, न खोली होती
और ये धरती जो है डोली, न डोली होती
और न ही यूँ प्रलय आया होता
धरती पे वृक्षों का जो सरमाया होता
तूने धरती के जो अरमान संजोए होते।

तो तेरे अपने भी न सैलाब में यूँ खोए होते
कितनों ने खुले में कई-कई रात काटी हैं
न यूँ मलबे में मासूम इतने सोए होते।

न गुड़िया अपने माँ-बाप से बिछड़ी होती
जो न ये जंग तूने पेड़ों से छेड़ी होती
तूने धरती पे दया जो ये दिखाई होती
तो हर तरफ न यूँ त्राही-त्राही होती।

अब तो जाग ओ इंसान, अब तो संभल जा
फिर तू रोएगा जब कुछ न बाकी बचेगा
अगर अब भी न तू संभला तो, होगी बहुत ही तबाही
न बचा सकेगी तब, तुझको तेरी भी खुदाई।

अब तो बस रुक जा, रुक जा, तू यहीं थम जा
थाम ले पेड़ों को अपनी बाहों में, कटने से बचा
तू ये जान ले इससे ही हैं तेरी हस्ती
प्रकृति की जान इनमें ही तो है बसती।

जो ये बचेंगे, तब ही तो तू जी पाएगा
वरना फिर बार-बार ऐसा ही प्रलय आएगा।

सराहनीय स्लोगन-2013

मिट रहा पूर्वाग्रह - आस्थाएं जगी

मौसम पूर्वानुमान से - आशाएं बढ़ी ।

-श्री एम. आर कालवे

वैज्ञानिक सहायक , सू.एवं.प्र.से. प्रभाग
मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

नानी की कहानी

-विजय घई

वैज्ञानिक सहायक

मौसम केंद्र - जयपुर

इंसान के जीवन में समय एक ऐसा आता है,
शरीर कमजोर पड़ता है, बुढ़ापा द्वार खटखटाता है।
ऐसे में अपने क्यूं साथ छोड़ जाते हैं
जीवन की हकीकत है ये, नहीं है कोई कहानी,
ऐसे में रह रहकर याद आती है मुझको मेरी नानी ।

नानी तू बन गई एक कहानी,
एक समय था जब दुनिया थी तेरी दीवानी।
पर अब तू हो गई बहुत पुरानी।
नज़र आती है इमारत कोई वीरानी।

हर घड़ी तूने जिनका साथ दिया,
कठिन घड़ी में दुख जिनका बाँट लिया।
आज देख के तुझे कतराते हैं,
संतानों के सुख को तुझे तरसाते हैं ।

अपना हर फर्ज तूने बखूबी निभाया,
इतना किया कि कर्ज उन पर चढ़ाया।
वही आज तुझको क्यूँ भूल जाते हैं
ऐसा करके पाप का बोझ उठाते हैं।

जब खूब थी तेरे पास सम्पत्ति,
 सर्व सम्पन्न थे तुम दम्पति।
 बेटे-बेटियों के फेरे रोज ही लगते थे,
 तब वे सेवा-भाव दिखाते नहीं थकते थे।

पर आज जब तू बेबस-असहाय है,
 संतानों से ही अब तुझको आस है।
 क्या कठिन घड़ी है, कोई न तेरे पास है,
 न कोई अपना है, न कोई खास है।

अब भूल चुकी है तुझको तेरी सन्तान,
 कभी करती थी जो तेरा मान सम्मान।
 नानी मत बन अन्जान, सच्चाई को पहचान,
 हे ईश्वर बुढ़ापे में यह कैसा अपमान।

केवल भारत ही एक ऐसा देश है, जिसका अतीत कभी मरा नहीं, वह बराबर वर्तमान के रथ पर चढ़कर भविष्य की ओर चलता रहा है। भारत का अतीत कल भी जीवित है और आगे भी जीवित रहेगा।

-रामधारी सिंह दिनकर

हम कहाँ आ गए आज इस दौर में

-आसिया आसिफ भट्ट
वैज्ञानिक सहायक
मौसम केंद्र-श्रीनगर

हम कहाँ आ गए आज इस दौर में

भाषा, धर्म और संस्कृति तक भूल गए

हिंदी को हिंग्लिश कर डाला, अंग्रेजी की होड़ में

हम कहाँ आ गए आज इस दौर में।

लस्सी, दूध, परांठा छोड़ा, पिज्जा-बर्गर की होड़ में

शिष्यों ने गुरुओं को छोड़ा, इंटरनेट के दौर में

सब कट, कॉपी और पेस्ट हो गया, शिक्षा के इस दौर में

हम कहाँ आ गए आज इस दौर में।

भाई, भाई का रहा नहीं, इस धन दौलत के जोड़ में

मानवता भी खो गई है इस अंधी दौड़ में

अखबारों से खबरें हैं गायब, विज्ञापन के होड़ में।

हम कहाँ आ गए आज इस दौर में।

आदमी रोबोट बन गया, इस यंत्र तंत्र के दौर में

नेताओं ने देश को बेचा सत्ता के गठजोड़ में

अब भी न संभले तो पहुँचेंगे जाने किस दौर में

ये कहाँ आ गए हम आज इस दौर में।

क्या नहीं हूँ मैं

-तुलसी राम कार्की
सहायक मौसम विज्ञानी
विमानन मौसम कार्यालय-मोहनबाड़ी

दूसरों के अनुकरण और पदचिह्न में धावित,
दिखावटी प्रशंसा और प्रमाण पत्र में लालायित,
किसी के द्वारा रंग-बिरंगे पुष्पहार से शोभित
कर तालियों के गुंजन में विभोर होने वाला,
मधुरस आसक्त मक्खी जैसा हूँ मैं।

व्यक्ति केन्द्रिक स्वार्थ में सर्वदा लटकने वाला,
सतीर्थ महानुभावों को मात्र पथ प्रदर्शक मानने वाला,
अपनी अहंवादिता मात्र दूसरों पर थोपने वाला,
दूसरों की तिक्त व्यथा और दुख-दर्द को मधुरस प्रलेपित
उपहारों से छलनामय कोशिश में लिप्त , राक्षस हूँ मैं।
क्या नहीं हूँ मैं?

सही को गलत और गलत को सही बनाने वाला,
इधर को उधर और उधर को इधर करने वाला,
भौतिक काया मात्र खड़ा करके आत्मा को मारने वाला
धर्म की आड़ में सस्ता नाम दाम कमाने वाला,

वर्ण-वैषम्यता के जादू जाल में, साम्प्रदायिक भेद-भाव का बीज बोने वाला,

दीपावली में अग्निकाण्ड और होली में रक्तभाण्ड करने वाला दानव हूँ मैं।

भाई-भाई को लडाकर सीमा की कल्पित रेखा खींचने वाला,

दूसरों से घूस ले के अपने स्वास्थ्य के लिए रस पीने वाला,

अवसरवादी ताकतों से दूसरों को हरदम सताने वाला,

नैतिक अधोपतन का उदाहरण हो कर सरकारी माल खाने वाला,

दूसरों की प्रतिष्ठा और उन्नति में क्रन्दन करने वाला मानव हूँ मैं।

दूसरों को शिखंडी बना के खुद गुप्त चैम्बर में रहकर नेतृत्व लेने वाला

भय, आशंका, षडयंत्र, मृत्यु, विभीषिका और आतंक फैलाने वाला

शान्ति वार्ता में उपस्थित रहकर युद्ध की आशा लेकर लौटने वाला

पर्यावरण सफाई का एजेंडा रखकर मैला मन लेकर ठिठुरने वाला,

शक्ति का अपव्यय करके गरीबी बढ़ाने वाले कार्यक्रम को प्रोत्साहन देने वाला

महामानव हूँ मैं ।

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।।

-मैथिलीशरण गुप्त

अच्छा है मौन रहूँ

-जिगा कौल

उच्च श्रेणी लिपिक

प्रादेशिक मौसम केंद्र- नई दिल्ली

ऐसा कोई साथी होता
जिसको मन की कह पाते
या ऐसा कोई मीत होता
जिसको सुख-दुख बतलाते
लेकिन

मिले सब अजनबी यहाँ
किसे अपनी बात कहूँ
नहीं किसी को सुनने की फुरसत
अच्छा है मौन रहूँ।

नहीं समझ में आता है
क्यों लगा पैसे के पीछे मानव
जीवन इतना व्यस्त बनाया है
क्यों

समय नहीं मिल पाता है
में भावुक अब कहाँ रहूँ
अच्छा है मौन रहूँ।

नहीं भावनाओं की कीमत
नहीं मानवता का नाता है
देख

चीखता हुआ किसी को
ठहर नहीं जो पाता है।
ऐसी बेबसी के आगे
कांप उठता है थर-थर हृदय
अच्छा है मौन रहूँ।

जीवन में निरंतरता

-सुनंदा गाबा

वैज्ञानिक सहायक

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

तन सदा रहेगा खिला-खिला

मन में भी ना होगा कोई गिला।

अगर, दिल में इक जोश हो

जीने की चाह हो

लक्ष्य हो स्पष्ट

कदमों में हो जान

तू रुक मत, आगे बढ़ता जा।

बढ़ हर कदम मंजिल की तरफ

रोज अपनी उमंग से

डाल अपने कदमों में जान

आए जिंदगी में एक रफ्तार

हर पल को संवार कर

जिन्दगी को पूरी तरह से जी

तो आए जीने का भी मजा।

जिंदगी न लगेगी कभी इक सजा

खुशी से जो चलेगा जिंदगी की राह पर

वक्त तो है घूमता

स्थितियाँ भी बदलती हैं

वक्त के साथ चलता जा

कुछ खुद बदल और समझ

कुछ वक्त भी समझाएगा।

बदलाव ही है जिंदगी

इसे तू स्वीकार कर

तू बस चलता जा

तू कभी रुकना नहीं

डर कर तू झुकना नहीं

गति ही है, जिंदगी की लय

यह मान ले तू।

निरंतर एक उत्साह से

जो बढ़ाएगा कदम अपने लक्ष्य की ओर

तो वह वक्त जरूर आएगा

जब तू अपने लक्ष्य को पाएगा ।

सराहनीय स्लोगन-2013

प्राकृतिक आपदाएँ चक्रवात, ओले और तूफान ।

इनके कहर से बचाए, मौसम का सटीक पूर्वानुमान ।

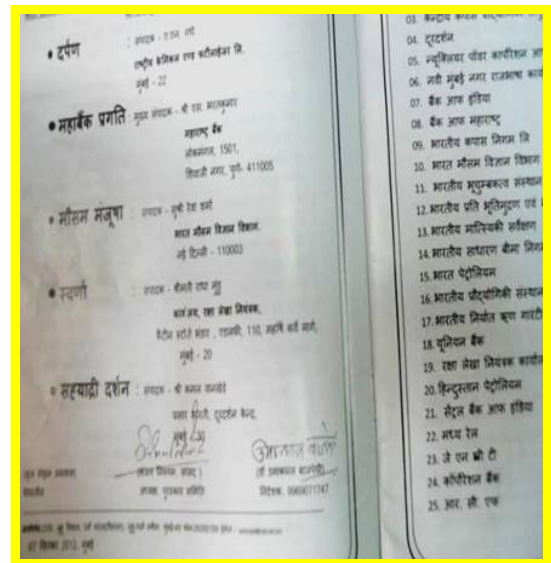
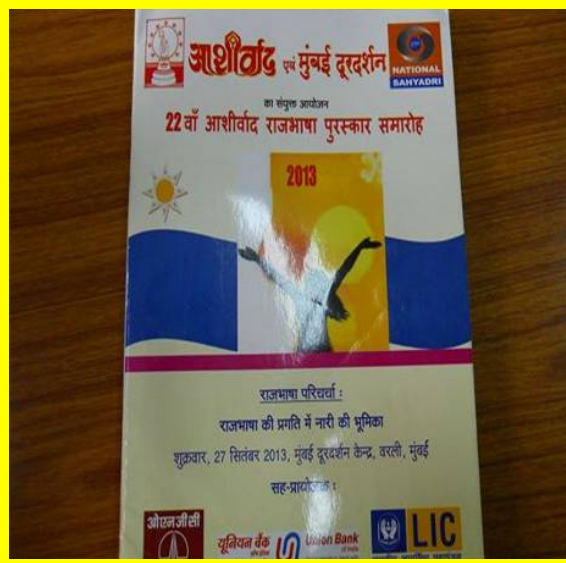
- श्री गोपीचंद

सहायक , प्रकाशन अनुभाग

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

'मौसम मंजूषा' को सम्मान

विभागीय हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम मंजूषा' के 17 वें अंक के लिए 'मौसम मंजूषा' की संपादक वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा को मुंबई के आशीर्वाद संस्थान द्वारा श्रेष्ठ गृह पत्रिका के राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार मुंबई के पुलिस कमिश्नर श्री सत्यपाल सिंह द्वारा प्रदान किया गया।



इसके अलावा राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास द्वारा आयोजित 18वें अखिल भारतीय राजभाषा विकास एवं सम्मान समारोह के दौरान राजभाषा गृह पत्रिका प्रदर्शनी-2014 में प्रदर्शित मौसम मंजूषा को प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया जो विभाग के लिए गर्व की बात है।



आइये हिंदी शब्दकोश देखें

भाषायी बयार

-कल्पना श्रीवास्तव

कनिष्ठ अनुवादक

मौसम केंद्र -लखनऊ

यदि 100 व्यक्तियों से पूछा जाए कि क्या आपको शब्दकोश देखना आता है तो लगभग सभी उपहास की दृष्टि से प्रश्न पूछने वाले की ओर देखेंगे। परंतु यदि यह पूछा जाए कि क्या आप हिंदी शब्दकोश में प्रत्येक शब्द को भली भांति ढूंढ सकते हैं, तो सम्भवतः 70-80 प्रतिशत व्यक्ति स्वयं को संशय में हों या ना के मध्य पाएंगे।

इसी संशय को ध्यान में रखते हुए मैंने हिंदी शब्दकोश देखने की प्रक्रिया के सम्बंध में जानकारी देने का प्रयास किया है।

हिंदी भाषा अत्यंत समृद्ध है, इसी कारण इसका शब्दकोश देखना अंग्रेजी शब्दकोश जितना सरल नहीं है। हिंदी भाषा की वर्णक्रम योजना, इसमें अर्ध एवं पूर्णाक्षर, संयुक्ताक्षर आदि होने के कारण इसके लिए कुछ नियम बनाना आवश्यक था ताकि हिंदी शब्दकोश देखना सरल एवं रोचक बनाया जा सके क्योंकि यदि शब्दकोश देखना ही इतना दुरुह होगा तो हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ाने के सरकार के सारे प्रयास धराशायी हो जाएंगे। इसके लिए शब्दकोश निर्माताओं ने अनेक वर्षों के अथक प्रयासों के बाद कुछ नियम बनाए जो आज भी उतने ही सार्थक हैं।

अंग्रेजी भाषा में स्वर एवं व्यंजन मिलाकर केवल 26 अक्षर होते हैं और पूरी अंग्रेजी भाषा इन्हीं 26 अक्षरों पर टिकी है। यही कारण है कि 5-6 वर्ष के बच्चे को भी अंग्रेजी शब्दकोश देखना सिखाया जा सकता है। जहाँ अंग्रेजी में मात्र 5 स्वर होते हैं वहीं हिंदी में अक्षर 28 स्वरों पर आधारित होते हैं। हिंदी शब्दकोश में सबसे पहले आते हैं स्वर यथा:- अँ, अं, अः, अ आँ आं आ ओँ इं इ ईं ईँ उँ उं उँ ऊँ ऊ ऋँ एँ एं ऐँ ऐं ऐ ओँ ओँ औँ औ।

और इसके बाद बारी आती है व्यंजनों की। जहाँ अंग्रेजी में मात्र 21 व्यंजनों में पूरी भाषा सिमट जाती है, वहीं हिंदी में 41 व्यंजन हैं- क क्ष ख/ख ग ग घ च छ ज ज झ ङ ट ठ ड/ड ढ ढ ण त त्र थ द ध न प फ़ ब भम य र ल व श श्र ष स ह।

अब शब्द निर्माण की प्रक्रिया देखते हैं। किसी भी व्यंजन के साथ उपर्युक्त 28 स्वरों को जोड़कर अनेक शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप एक व्यंजन क को लेते हैं जिससे उपर्युक्त सभी स्वरों के साथ संयुक्त करके कितने ही शब्द बनाये जा सकते हैं-

कँ कं कः क कँ काँ कां का काँ किं कि कीं की कुँ कुं कु कूँ कू कू कृ कृ कँ के कैं कै कौं को कौं कौ।

इसी प्रकार प्रत्येक व्यंजन के शब्दों को देखने के लिये इसी नियम का पालन करना पड़ेगा।

यहाँ मैं अ अक्षर से शुरू होने वाले कुछ शब्दों को हिंदी शब्दकोश में उनके स्थान के अनुसार व्यवस्थित करके दर्शाने का प्रयास कर रही हूँ-

अंतःकरण	क
अंतःक्षेप	क्ष (क+श)
अंतःस्थलीय	तः
अंततः	त
अंतर्निहित	अं
अंतरिक्ष	क्ष
अंतरिम	म
अनावरण	अ
कुछ और शब्द देखिए-	
कंटक	कं
कँटीला	कँ
सांकेतिक	सां
साँझा	साँ
स्वतंत्र	तं
स्वतः	तः

अब शब्दकोश देखने के दूसरे नियम की बात करते हैं। पूर्णाक्षर की बात तो स्पष्ट हो गयी, परंतु अंग्रेजी के विपरीत यहां पर अर्धाक्षर भी अस्तित्व में होते हैं जिन्हें नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता है। इसके लिए नियम बनाया गया है कि अर्धाक्षर को पूर्णाक्षर के बाद रखा जायेगा। उदाहरण के लिए-

करवट	पूर्ण र
कर्कट	अर्ध र
कयामत	क
क्यारी	क ' अर्धाक्षर)
अंतर	र
अंतर्ध्वंस	अर्ध र (ध्वं)
अंतरात्मा	रा
अंतर्राष्ट्रीय	री
अनावरण	र
अनावर्ती	अर्ध र (तीं)
सारवृत्त	पूर्ण र
सार्वजनिक	अर्ध र (र्व) -----आदि

अभी संयुक्ताक्षरों की तो बात ही नहीं हुई। शब्दावली निर्माताओं ने कहीं कोई दुविधा नहीं छोड़ी। उन्होंने नियम बनाया कि संयुक्ताक्षरों को उनके घटकों के क्रम में व्यवस्थित किया जायेगा। उदाहरणस्वरूप -

क्ष= क+ष ,

त्र= त+र

ज्ञ= ज+ञ ,

श्र =श+र

द्व= द+व ।

कुछ शब्द देखिये -

अंतःकरण क

अंतःक्षेप	क्ष (क+श)
अंतरिक्ष	क्ष
अंतरिम	म
अनुशोधन	श+ ओ
अनुश्रुति	श+ र
अनुषंगी	ष
मितभाषी	पूर्ण त
मित्र	अर्थ त + र
स्वतंत्र	तं
स्वतः	तः

अब यह जानने की कोशिश करते हैं कि क्रम पहले आयेगा कि कर्म, श्रम पहले आयेगा कि शर्म। इसके लिए हमें शब्दों के निर्माण को ध्यानपूर्वक देखना होगा। शब्द की संरचना देखने पर स्थिति स्वतः स्पष्ट हो जायेगी।

क्रम= क्+र+म

कर्म= क+र+म

सरल = पूर्ण र

सर्जरी = अर्थ र+ज

प्रथम शब्द में क् (अर्थ अक्षर) है जबकि द्वितीय में क (पूर्णाक्षर) है। अर्थात् नियमानुसार क्रम की स्थिति निश्चय ही कर्म के बाद आयेगी।

इन सबके बाद मैं एक दुविधा और दूर कर देना चाहती हूँ जो अंग्रेजी में है ही नहीं— ड के बाद ड़, ढ के बाद ढ़, क के बाद क़, ख के बाद ख़ ग के बाद ग़ ज के बाद ज़ फ के बाद फ़ आदि।

तो है न हिंदी शब्दकोश देखना एक रोचक एवं सरल कार्य। अभी तक जिन भी साथियों को यह उबाऊ लगता था, वे भी अब रोचक तरीके से हिंदी शब्दकोश देखेंगे तथा इस यात्रा को आगे बढ़ाते हुए अपने मित्रों, परिचितों आदि को भी हिंदी शब्दकोश देखना सिखायेंगे।

कम्प्यूटर और हिंदी - सुविधाएँ व उपयोग

भाषायी बयार

-सरिता जोशी

हिंदी अधिकारी

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हिंदी आज नई ऊँचाईयों को छू रही है। फिल्म जगत, मीडिया, विज्ञापन और राजनीति की दुनिया में इसका बोलबाला है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे भारत में उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक लोग समझ और बोल सकते हैं। हिंदी भाषा के विकास, प्रचार, प्रसार के लिए सरकारी तंत्र में भी महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं।

तकनीक और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही सूचना प्रौद्योगिकी का युग आरंभ हुआ। आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप कम्प्यूटर आज हमारे दैनिक कार्य प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। अब हम मैन्युअल टाइपराइटर, इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटरों के युग से आगे निकल चुके हैं। कम्प्यूटर पर एक क्लिक करते ही सूचनाओं का भंडार हमारे सामने आ जाता है। आज यदि हमें आधुनिक तकनीक के साथ आगे बढ़ना है तो हमें कम्प्यूटर से मैत्री करनी आवश्यक है। हमें कम्प्यूटर को अपना दोस्त बनाना होगा। यह आधुनिक तकनीक का ही परिणाम है कि आज हम कम्प्यूटर में हिंदी और अन्य भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में भी आसानी से कार्य कर सकते हैं। कोई भी तकनीक किसी भाषा को तोड़ती नहीं बल्कि जोड़ती है, उसका विकास करती है, उसे आगे बढ़ाती है, उसके सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

कम्प्यूटर पर अन्य भाषाओं की ही तरह हिंदी भाषा में भी आसानी से कार्य किया जा सकता है। प्रायः जानकारी के अभाव में हिंदी में कार्य करने में हमें कठिनाई होती है या हम झिझक महसूस करते हैं। कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है जरूरत है तो बस उन सुविधाओं की जानकारी प्राप्त करने और उन्हें उपयोग में लाने की।

हिंदी के प्रयोक्ताओं को जानकारी के अभाव में कम्प्यूटर पर कार्य करने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। जैसे हिंदी में टाइप करने के लिए कौन सा 'की बोर्ड' इस्तेमाल किया जाए या फिर हिंदी का कौन सा सॉफ्टवेयर डलवाया जाए। हम प्रायः यह देखते हैं कि हिंदी में टाइप की गई सामग्री को यदि हम ईमेल करते हैं या फिर उसे दूसरे सिस्टम में खोला जाता है तो वह करप्ट हो जाती है

अर्थात् उसे पढ़ा नहीं जा पाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि वह सामग्री यूनिकोड में टंकित नहीं है या फिर उस सामग्री को नॉन यूनिकोड फॉन्ट में टंकित किया गया है। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के आदेशानुसार सभी कार्यालयों के सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड स्थापित होना अनिवार्य है जिससे हम हिंदी भाषा में आसानी से कार्य कर सकें। हिंदी में कार्य करने के लिए हम पहले महंगे हिंदी सॉफ्टवेयर खरीदते थे परंतु अब ऐसा नहीं है। अब यह आसान हो गया है क्योंकि राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराई गई यूनिकोड प्रणाली निःशुल्क है और इसे आसानी से कम्प्यूटर में डाला जा सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि **यूनिकोड** क्या होता है ? यूनिकोड का अर्थ है भाषा का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोडीकरण। यूनिकोड भाषायी कम्प्यूटरीकरण है। यह अंतरराष्ट्रीय मानक है। इसे वैश्विक स्तर पर सूचना के आदान-प्रदान के मानक के रूप में स्वीकारा गया है। यदि आपके कम्प्यूटर पर यूनिकोड स्थापित है तो आप कार्यालय के सभी कार्य आसानी से हिंदी में कर सकते हैं। इसके प्रयोग का एक लाभ यह भी है कि किसी भी भाषा की सामग्री विश्व के किसी भी सिस्टम में आसानी से पढ़ी जा सकती है। आवश्यकता है तो सिर्फ कम्प्यूटर पर यूनिकोड सक्रिय करने की।

कम्प्यूटर पर यूनिकोड सक्रिय करने के लिए hashaindia.com की साइट पर जाएँ। उसके होम पेज पर Downloads पर क्लिक करें। यहाँ यह जानना अनिवार्य है कि आपके सिस्टम में windows7/windows8/ windows10 आदि कौन सी विंडो है और properties में जाकर जाँच लें कि वह 32 बिट को सपोर्ट करता या फिर 64 बिट को। फिर उसी के अनुसार दिए गए options में से hindi download सिलेक्ट कर लें। क्लिक करते ही HindiIndicInput फाइल डाउनलोड हो जाएगी। उसे Save कर लें। इस फाइल पर क्लिक करें, फिर Setup.exe पर क्लिक करें और इसके बाद आएगा install का option, फिर Next, Next पर क्लिक करते ही यूनिकोड install हो जाएगा। इस पूरी प्रक्रिया में लगभग दो मिनट से अधिक का समय नहीं लगेगा। फाइल के install होते ही आपके Desktop पर language bar में EN का Option आ जाएगा। इस पर क्लिक करने पर हिंदी भाषा में कार्य करने का भी Option HindiIndicInput आ जाएगा। HindiIndicInput फाइल के साथ ही आपके सिस्टम में यूनिकोड सक्रिय हो जाएगा। इसके साथ ही हिंदी का मंगल फॉन्ट और Arial Unicode MS फॉन्ट इंस्टॉल हो जाएगा जो यूनिकोड फॉन्ट है। hashaindia.com की साइट पर अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य करने का भी विकल्प है। आपको जिस भाषा में कार्य करना हो उस Option का चयन कर लें। डाउनलोड की गई HindiIndicInput की फाइल को पेन ड्राइव में लेकर अन्य कम्प्यूटरों में भी इंस्टॉल कर सकते हैं।

अब बात आती है कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की। ऐसे प्रयोक्ता जिन्हें हिंदी टाइपिंग करने का ज्ञान नहीं है वे फोनेटिक (ध्वन्यात्मक) की बोर्ड हिंदी ट्रांसलिट्रेशन का चयन करके आसानी से हिंदी में कार्य कर सकते हैं। जैसे यदि आपको 'भारत' शब्द टाइप करना हो तो आप की बोर्ड पर अंग्रेजी अक्षर bhaarat टाइप करेंगे और स्क्रीन पर आउटपुट 'भारत' आएगा। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि पूरा अक्षर टाइप करने के लिए अर्थात् 'भ' टाइप करने के लिए bha टाइप करना होगा और 'भा' टाइप करने के लिए bhaa टाइप करना होगा तथा इसी प्रकार यदि हमें आधा अक्षर टाइप करना है जैसे 'भ्' तो bh टाइप करना होगा। टाइप करते हुए आपकी सुविधा के लिए helpbar भी स्क्रीन पर दिखाई देती है जिसमें उस अक्षर को विभिन्न मात्राओं के साथ कैसे टाइप करना है दिखाया जाता है। फोनेटिक(ध्वन्यात्मक) की बोर्ड पर कार्य करने के संबंध में तालिका नीचे दी जा रही है।

Vyanjan (Consonants)

क	ka, ca	ख	kha	ग	ga	घ	gha	ङ	Nga
च	cha	छ	chha	ज	ja	झ	jha	ञ	Nja
ट	Ta	ठ	Tha	ड	Da	ढ	Dha	ण	Na
त	ta	थ	tha	द	da	ध	dha	न	na
प	pa	फ	pha,fa	ब	ba	भ	bha	म	ma
य	ya	र	ra	ल	la	व	va,wa	श	sha
ष	Sha	स	sa	ह	ha	क्ष	kSha,X	त्र	Tra
				ज्ञ	Gya				

उक्त तालिका और फोनेटिक की बोर्ड (Hindi Transliteration) पर कार्य करने का ब्यौरा आप अपने सिस्टम के All Programmes के अंतर्गत Indic Input की Userguide के पृष्ठ सं. 7-8 पर भी देख सकते हैं।

इसी प्रकार हिंदी टंकण का ज्ञान रखने वाले सभी साथी settings में जाकर Remington, Inscript की बोर्ड का चयन करके यूनिकोड में कार्य कर सकते हैं। ऐसा करके नॉन यूनिकोड फॉन्ट जैसे कृति देव आदि में किए गए कार्य से होने वाली परेशानी से हम बच सकते हैं। यूनिकोड में कार्य करना बहुत ही आसान है। हम वर्ड के किसी भी फॉर्मेट में कार्य कर सकते हैं। हम प्रेजेंटेशन बना सकते हैं, ई मेल कर सकते हैं, एक्सेल में कार्य कर सकते हैं आदि आदि। जरूरत है इस सुविधा की जानकारी होने और उसका उपयोग करने की।

कभी कभी पुराने कम्प्यूटर सिस्टम Windows xp में HindiIndicInput install करने के बाद भी हिंदी में कार्य नहीं हो पाता है। हिंदी के अक्षरों के स्थान पर बॉक्स (□□□□) दिखाई

देते हैं। ऐसे स्थिति में आपको control panel में जाकर Regional and Language option पर languages पर क्लिक करना होगा और कम्प्यूटर सिस्टम windows xp को check करने के उपरांत Apply को क्लिक करना होगा और इसके बाद CD-Rom drive में Win xp की CD डालनी होगी और languages पर क्लिक करके reboot करना होगा। इसके बाद आप आसानी से कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य कर पाएँगे। यह समस्या कुछ पुराने कम्प्यूटरों में ही आती है, नए कम्प्यूटरों में नहीं क्योंकि उनके ब्राउजर में पहले से ही यूनिकोड स्थापित होता है।

क्या नॉन यूनिकोड में किए गए कार्य को हम यूनिकोड में परिवर्तित कर सकते हैं। जी हाँ। आप नॉन यूनिकोड फॉन्ट में किए गए कार्य को यूनिकोड में बदल सकते हैं। ildc.nic.in की साइट में 'परिवर्तन' सॉफ्टवेयर उपलब्ध है जो इस समस्या का समाधान कर सकता है। इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से आप नॉन यूनिकोड में किए गए कार्य को यूनिकोड में बदल सकते हैं। इसके अलावा एक अन्य सॉफ्टवेयर 'सुविधा' सॉफ्टवेयर भी उपलब्ध है। जिसे install करके हम आसानी से सामग्री को यूनिकोड में परिवर्तित कर सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की वेबसाइट में विभिन्न भारतीय भाषाओं में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है। सॉफ्टवेयर डाउनलोड करने की व्यवस्था है। साथ ही आप इस साइट पर स्वयं को रजिस्टर कराकर इन सभी सुविधाओं युक्त CD निः शुल्क मंगा सकते हैं।

राजभाषा हिंदी से जुड़े नियम, अधिनियम आदि की जानकारी के लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की साइट rajbhasha.nic.in पर जाएँ। इस साइट पर राजभाषा हिंदी से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का ब्यौरा उपलब्ध है। राजभाषा विभाग की साइट के होम पेज पर 'लीला' हिंदी भाषा शिक्षण का लिंक है जिसके माध्यम से हिंदीतर भाषी या हिंदी भाषी, जिन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं है, हिंदी भाषा सीख सकते हैं। हिंदी भाषा शिक्षण तीन स्तर पर दिया जाता है प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ। प्रबोध को 5^{वीं} कक्षा, प्रवीण को 8^{वीं} कक्षा और प्राज्ञ को 10^{वीं} कक्षा तक हिंदी भाषा के ज्ञान के समक्ष माना जाता है। प्राज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत यह माना जाता है कि कर्मचारी को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है अर्थात् वह हिंदी में कार्य कर सकता है।

राजभाषा विभाग की वेबसाइट में 'ई महा-शब्दकोश' की भी सुविधा उपलब्ध है। यह एक ऑनलाइन शब्दकोश है जिसमें लगभग 2.5 से 3 लाख प्रशासनिक शब्दों को शामिल किया गया है। यह द्विभाषी द्विआयामी शब्दकोश है। इसमें अंग्रेजी से हिंदी व हिंदी से अंग्रेजी शब्द खोजे जा सकते हैं। इसकी विशेषता यह है कि तीन अक्षर टंकित करने पर उन अक्षरों से संबंधित शब्दों की सूची आ जाती है। साथ ही खोजे गए शब्द का सही मौखिक उच्चारण और उस शब्द के अर्थ से संबंधित जानकारी भी इसमें दी गई है। शब्द का पदबंध में प्रयोग भी दिया गया है। इसका ऑनलाइन

उपयोग किया जा सकता है और यह काफी लाभकारी है। अन्य ऑनलाइन शब्दकोश Shabdkosh.com, Wordanywhere.com, raftar.com, abhivyakti-hindi.org भी उपलब्ध हैं जिनका उपयोग किया जा सकता है।

एक अन्य बहुत ही उपयोगी साइट वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की साइट cstt.nic.in है जिसमें 40 विषयों से संबंधित शब्दों की शब्दावली उपलब्ध है। इसमें अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी वैज्ञानिक और तकनीकी तथा प्रशासनिक शब्दों की खोज कर सकते हैं। इस साइट में इन विषयों की विषयवार सूची अकारादि क्रम में दी गई है। जो एक ऐसी शब्दावली है जिसका उपयोग हम कभी भी कहीं भी ऑनलाइन कर सकते हैं।

जब हिंदी में कार्य करने की सुविधाओं की बात हो रही है तो यह भी बता दें कि सी डैक द्वारा आई बी एम के सहयोग से एक सॉफ्टवेयर 'श्रुतलेखन-राजभाषा' तैयार किया गया है। अपने नाम के अनुसार श्रुतलेखन की विशेषता यह है कि यह हिंदी में बोली गई ध्वनि को टैक्सट में बदलता है अर्थात् आप हिंदी में जो बोलेंगे कम्प्यूटर पर वह टाइप होता जाएगा। इसकी विशेषता यह है कि यह यूनिकोड में आउटपुट देता है जिसमें आप सुधार कर सकते हैं। इसकी कीमत लगभग 5000/-रु. है। यह माना जा रहा है कि आने वाले समय में कम्प्यूटर में हिंदी में कार्य करने का यह सबसे बेहतर साधन होगा। सी डैक इस पर लगातार कार्य कर रहा है।

कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की एक और बेहतरीन सुविधा अनुवाद करने की मौजूद है। राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर 'मंत्रा राजभाषा' मशीनी अनुवाद (Machine assisted translation) करने की सुविधा है। इसके अलावा google पर भी अनुवाद किया जा सकता है जिसके लिए gmail id होना आवश्यक है। अनुवाद अंग्रेजी से हिंदी व हिंदी से अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में भी कर सकते हैं। अपनी gmail id से लॉगइन करने के बाद More पर क्लिक करके Translate पर जाएँ। Translator toolkit पर क्लिक करें, फिर Upload पर जाकर जिस फाइल का अनुवाद करना है उसे Upload करें। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि फाइल का साइज 1mb तक का हो। फिर Translate का चयन करें। जिस भाषा में अनुवाद करना है उसका चयन करें। अब मूल file और उसका अनुदित पाठ आपके स्क्रीन पर उपलब्ध हो जाएगा , जो यूनिकोड में होगा । आप अनुदित पाठ में आवश्यक सुधार कर सकते हैं। उसे save कर सकते हैं। अनुवाद को यूनिकोड में edit कर सकते हैं। मशीनी अनुवाद की इस सुविधा से समय की बचत होगी। परंतु यहाँ यह समझ लेना जरूरी है कि अनुवाद करने के लिए दोनों भाषाओं अर्थात् जिस भाषा से अनुवाद करना है और जिस भाषा में अनुवाद करना है, दोनों का ज्ञान होना अनिवार्य है क्योंकि मशीन बिना मस्तिष्क लगाए अनुवाद करेगी। यह किसी एक शब्द के किसी भी अर्थ को

लेकर आपके सामने प्रस्तुत कर देगी परंतु अंततः मानव मस्तिष्क का उपयोग करके और दोनों भाषाओं के ज्ञान से ही आप शत प्रतिशत सही अनुवाद को अंजाम दे पाएँगे। अनुवाद में शब्दों और वाक्यों की संरचना और उसमें निहित अर्थ को सही ढंग से प्रस्तुत करना एक जटिल प्रक्रिया है। तथापि यह कहना गलत नहीं होगा कि इसमें समय, श्रम व कागज की निश्चित रूप से बचत होगी।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के विभागीय पोर्टल metnet.ind.gov.in में 'राजभाषा पटल' का लिंक उपलब्ध है जिसमें आपकी सुविधा के लिए विभाग में होने वाली राजभाषा संबंधी गतिविधियों का ब्यौरा उपलब्ध है। राजभाषा पटल में राजभाषा से जुड़े कार्यों का वर्षवार ब्यौरा उपलब्ध कराया गया है। विभागीय हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम मंजूषा', मौसम मंजूषा का काव्य विशेषांक 'मौसमी बयार', निबंध सागर, 'राजभाषा बुलेटिन' जैसे प्रकाशन हैं। साथ ही हिंदी दिवस, हिंदी व्याख्यान, संगोष्ठी के चित्रादि भी हैं। राजभाषा पटल में 'महत्वपूर्ण' के अंतर्गत लिंक्स में राजभाषा विभाग, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग तथा ildc.nic.in के लिंक्स उपलब्ध हैं। इसके अलावा 'महत्वपूर्ण' में 'व्याख्यान' के अंतर्गत कुछ प्रेजेंटेशन आदि हैं। मौसम विज्ञान शब्दावली, राजभाषा नीति सिंहावलोकन, कुछ मैनुअल, फॉर्म, प्रपत्र प्रकाशन आदि भी आपकी सुविधा के लिए उपलब्ध हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कम्प्यूटर आज हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। व्यक्तिगत कार्यों से लेकर सरकारी कार्यों तक के लिए हमें कम्प्यूटर का सहारा लेना पड़ता है। कम्प्यूटर पर आसानी से हम विभिन्न भाषाओं में कार्य कर सकते हैं। इतनी सुविधाओं के चलते कम्प्यूटर में हिंदी में कार्य करना भी अब बहुत ही सरल हो गया है। जरूरत है तो यह जानने की कि कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की क्या क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं और हम उन सुविधाओं का किस प्रकार बेहतर से बेहतर उपयोग कर सकते हैं। हिंदी में कार्य करके भारत सरकार के संविधान में दिए गए प्रावधानों के अनुसार प्रत्येक सरकारी कर्मचारी अपना योगदान दे सकता है और राजभाषा हिंदी को उसके स्थान पर गौरवान्वित कर सकता है।

‘निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को मूल’ भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी की इन पंक्तियों को उद्धृत करते हुए मैं यह अपेक्षा करती हूँ कि गागर में सागर लिए इस लेख में दी गई सुविधाओं की जानकारी से लाभांवित होकर आप अपना सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करना आरंभ करेंगे और संविधान के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह करेंगे ।

पानी की जद्दोजहद

सामान्य
लेख

डॉ संजय ओनील शाँ

वैज्ञानिक-डी

प्रादेशिक मौसम विज्ञान केन्द्र- गुवाहाटी

आज विश्व विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है जैसे खाद्य, ऊर्जा, पानी इत्यादि। इनमें से शुद्ध पानी की समस्या एक गंभीर समस्या बन गयी है। प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता का विकास पानी के स्रोतों के निकट हुआ। इसके अलावा पानी के लिए कई युद्ध भी हुए। जहाँ एक तरफ मानव सभ्यता तरक्की की राह पर अग्रसर है, वहीं दूसरी तरफ पानी की कमी से त्रस्त भी हो रही है। तरक्की के नाम पर जंगलों की अंधाधुंध कटाई के कारण पानी की कमी हो रही है। जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि की वजह से पानी की मांग बढ़ रही है। कुओं तथा तालाबों के पानी का स्तर घट रहा है। नदियाँ सूख रही हैं। ग्लेशियरों का आकार छोटा होता जा रहा है। आज विश्व के अनेक भागों में शुद्ध पानी का संकट छा रहा है, भले ही हम तरक्की की राह पर कितना भी आगे बढ़ जाएँ किन्तु बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण हमारा पिछड़ापन छिपा नहीं रह सकता। शुद्ध पानी आम आदमी की पहुँच से बाहर होता जा रहा है। यदि शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं होगा तो विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होंगी जिसमें स्वास्थ्य की समस्या सबसे प्रमुख होगी। तीसरी दुनिया के देशों की स्थिति तो और भी गंभीर है। पानी जैसी बुनियादी सुविधा के लिए लोगों को अपने दिनभर के समय से कई घंटे पानी की जरूरत को पूरा करने के लिए निकालना पड़ता है। पानी के स्रोत सिकुड़ते जा रहे हैं, इसके लिए आवश्यक है कि पानी के संरक्षण के साथ-साथ उसके संचयन की व्यवस्था भी की जाए। जनसंख्या वृद्धि के कारण पानी की मांग का दबाव बढ़ रहा है। वैश्विक स्तर पर स्वच्छ पानी की कमी तो है ही साथ ही साथ आज पूरा विश्व पानी के संकट से गुजर रहा है। पृथ्वी में भले ही तीन चौथाई हिस्से में पानी उपलब्ध है पर इसमें से उसकी बहुत ही कम मात्रा पादप तथा जीव जंतुओं के लिए उपलब्ध है।

इंसान पानी का अंधाधुंध दुरुपयोग कर रहा है। भूजल, तालाब तथा नदियों आदि में गन्दगी के साथ-साथ रासायनिक तत्व मिल रहे हैं। जब से शक्तिशाली पम्पों का उपयोग शुरू हुआ है तब से भूमिगत पानी तेज़ी से निकाला जा रहा है। नतीजतन भूमिगत पानी का स्तर भी तेज़ी से घट रहा है। ग्लेशियर, जो कि पानी के बड़े स्रोत हैं उनके अस्तित्व पर भी खतरा मंडरा रहा है क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं। स्वच्छ पानी का करीब सत्तर प्रतिशत उपयोग किसी न किसी रूप में कृषि क्षेत्र में होता है। अतः स्वच्छ पानी की मांग को पूरा करने की आवश्यकता है ताकि हमें अन्न भी मिल सके।

इंसान अपने स्वार्थ के लिए पानी के स्रोतों को गन्दा कर रहा है तथा अपनी इस हरकत से अपनी आने

वाली पीढ़ी को पानी की सहज उपलब्धता से वंचित कर देगा। इस बात को समझना चाहिए कि रेगिस्तानी इलाकों में रहने वाले लोग कितनी मुश्किल से अपने रोजमर्रा के कार्यों हेतु पानी का इंतजाम करते हैं। उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी का महत्वपूर्ण हिस्सा पानी का इंतजाम करने में बीत जाता है। स्वच्छ पानी की समुचित व्यवस्था के मामले में नगरों की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। नगरों की मलिन बस्तियों की स्थिति तो और भी बुरी है। पानी नलों में चंद समय के लिए आता है तथा उसके लिए लम्बी कतारों में खड़ा होना पड़ता है। शुद्ध पानी सबके लिए आवश्यक है और यह किसी भी देश की प्रतिष्ठा का भी सूचक है। यदि कोई देश अपनी जनता को साफ़ पानी उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है तो उस देश के लिए शर्म की बात है। शुद्ध पानी उपलब्ध कराने में अभी विश्व के बहुत सारे देश पीछे हैं। शुद्ध पानी के संकट से दुनिया का एक बड़ा हिस्सा जूझ रहा है। आज विश्व में करीब डेढ़ अरब की आबादी को शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं है। एशिया तथा अफ्रीका के लोगों की स्थिति और भी गंभीर है। जहाँ आज भी पानी लाने के लिए इन देशों की महिलाओं को कई किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ता है।

शुद्ध पानी की कमी के कई कारण हैं जिनमें मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन माना जा रहा है। इस कारण वर्षा के वितरण में परिवर्तन देखा जा रहा है, कहीं अधिक वर्षा हो रही है तो कहीं कम वर्षा हो रही है, कहीं बाढ़ आ रही है तो कहीं सूखा पड़ रहा है। जानकारों के अनुसार शुद्ध पानी की अनुपलब्धता का सबसे बड़ा कारण 'ग्लोबल वार्मिंग' है। साथ ही साथ वन क्षेत्र में कमी, वर्षा का असामान्य असंतुलन, बढ़ती आबादी, प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन जैसे कारक शुद्ध पानी की कमी का कारण बन रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार, सन 2027 तक विश्व के तकरीबन 270 करोड़ लोगों को पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है। और तो और करीब 250 करोड़ अन्य लोगों को पानी की उपलब्धता आसानी से नहीं होगी।

पानी के सही ढंग से इस्तेमाल करने के लिए लोगों को शिक्षित करने की आवश्यकता है। पानी संरक्षण प्रौद्योगिकियों को विकसित करना होगा। पुनर्चक्रण तथा पानी के उपचार की प्रणालियों का इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। बेहतर सिंचाई प्रौद्योगिकियों तथा कृषि पद्धतियों का प्रयोग करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना होगा। जिन स्थानों में पानी की कमी है वहाँ व्यापारियों द्वारा लोगों को पानी उपलब्ध कराने के लिए मनमानी कीमत वसूली जाती है, जिसपर उचित नियंत्रण होना चाहिए। पृथ्वी पर उपलब्ध अधिकतर पानी समुद्रों में है जो कि खारा है। ऐसे शोधों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि कम खर्च में खारे पानी से लवण अलग किया जा सके अर्थात् सस्ती दर पर विलवणीकरण संयंत्र उपलब्ध हो सकें। वर्षा के पानी का समुचित तरीके से संचयन होना चाहिए ताकि उसका उपयोग किया जा सके। समाज के निचले स्तर से ही समुदाय आधारित पानी के संरक्षण की व्यवस्था को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। प्रत्येक देश की सरकार को अपनी नीतियों और नियमों को इस ढंग से बनाना होगा जिसके फलस्वरूप पानी के संग्रहण की उचित व्यवस्था हो सके। प्रदूषण पानी की गुणवत्ता को प्रभावित करने में अहम भूमिका अदा करता है। अतः पानी को प्रदूषित

करने वाले कारकों पर नियंत्रण करने की आवश्यकता है। स्वच्छ पानी की उपलब्धता को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक तथा निजी भागीदारी की आवश्यकता है ताकि अनुसंधान और विकास को बढ़ावा मिल सके। विभिन्न देशों को अपनी प्रौद्योगिकी अन्य देशों के साथ बांटनी चाहिए ताकि विकासशील देश भी लाभान्वित हो सकें।

पानी की आवश्यकता सिर्फ आज ही नहीं बल्कि आगे भी युगों-युगों तक बनी रहेगी। अतः इसका सावधानी और समझदारी से उपयोग करते हुए भविष्य के लिए भी इसका संरक्षण करना नितांत आवश्यक है ताकि शुद्ध जल धारा अविरल बहती रहे।

सराहनीय कार्टून - 2013



- श्री सतीश सिंह नेगी
मौसम परिचर, जल मौसम प्रभाग
मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

महिला सशक्तिकरण

सामान्य
लेख

-एम. आर. कालवे

वैज्ञानिक सहायक

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

सम्पूर्ण विश्व में 8 मार्च को महिला दिवस मनाया जाता है। इस दिन को महिलाओं की सुरक्षा और उनके सम्मान तथा समाज में सशक्तिकरण व दशा की बातें अलग अलग ढंगों से विभिन्न अखबारों, मिडिया आदि में प्रचारित व प्रसारित करके बहस का हिस्सा मात्र बनाकर मनाया जाता है। आज हमारे देश की शहरी और देहात की महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों और शोषण आदि को कड़ाई से रोकने के लिए कानून या अधिनियमों को बनाकर क्या महिला सशक्तिकरण हो पाएगा? इस विषय पर सार्थक बहस के साथ निदान की ज़रूरत और महत्व को बल दिया जाना अब जरूरी है। सरकार महिलाओं को हक तो दे सकती है पर जब तक उनके अपनों की सोच में परिवर्तन ना आए या वे खुद अपने अंदर परिवर्तन न लाएँ तब तक उन का चौखट से चौपाल तक आने का सफर आसान नहीं होगा। जब समाज में सामाजिक, पारिवारिक और वैचारिक बदलाव आएगा, तभी शायद औरतों की समस्याएँ कुछ कम हो पाएँगी क्योंकि आज सिर्फ पुरुष ही दोषी नहीं हैं वरन महिलाएँ भी दोषी हैं। एक बहू आज भी अपने ही घर में अपनी सास-ननद से प्रताड़ित होती नजर आती है। आज बहू, बेटी, बहन अपने ही घरों में सुरक्षित नहीं हैं। एक और पहलू यह भी है कि हमारे देश में महिला सशक्तिकरण की बात करने से पहले यह जानना होगा कि क्या वास्तव में महिलाएँ, अशक्त हैं? यह अज्ञानतावश या निहित स्वार्थों के तहत कोई षडयंत्र तो नहीं, महिलाओं को अशक्त बनाएँ जाने का या उसे अशक्त बताने का। मानव सभ्यता जब से पृथ्वी पर पनपने लगी तभी से ऽबलशाली को ही अधिकार के सिद्धांत को अपनाते हुए पुरुषवर्ग ने अपने शारीरिक सामर्थ्य का फायदा उठाते हुए उस पर अपना आधिपत्य जमाना शुरू कर दिया और उसे दोयम दर्जे पर ला खड़ा किया। धीरे-धीरे नारी ने उसे अपना नसीब व नियति समझ स्वीकार कर लिया। किन्तु आज की महती आवश्यकता यह है कि नारी को अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु पुरुष के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर चलना होगा ताकि वे भी गर्व से समाज में अपना स्थान बना सकें, जो देश की उत्तरोत्तर प्रगति में एक विश्वसनीय भूमिका अदा कर सकें।

आज भारत में भी महिला दिवस को विशेष महत्व के साथ मनाकर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए जोरदार ढंग से आंदोलन रूपी अनेक आवाजें उठ रही हैं। वैदिक काल में हमारे देश में नारी

को पूज्यनीय माना जाता था, उसे पुरुष के समान इज्जत दी जाती थी, मातृ देवो भवः कहा जाता था। किन्तु महिलाओं के प्रति भेदभाव और शोषण की नीतियों का सदियों से ही बोलबाला रहा है। इतना जरूर कह सकते हैं कि मापदंड व तरीके भिन्न-भिन्न जरूर रहे हैं। सीता से लेकर द्रौपदी तक को यहां पुरुष सत्तात्मक मानसिकता को झेलना पड़ा है। हर युग में पुरुष के वर्चस्व की कीमत नारी ने चुकाई है या उसे चुकाने पर मजबूर होना पड़ा है। आखिरकार नारी के आदर और सम्मान के बजाय उस पर हो रहे अत्याचार के लिए कौन दोषी है, उस की दिशा और दशा का इस तरह पतन क्यों हुआ, यह भी एक बड़ा विषय है। कारण यह भी था कि मुगल सत्ताधीशों का आतंक इस तरह अपना सिर ऊंचा कर बैठा कि नारी को इस आतंक से बचाने के लिए नर को पर्दा-प्रथा का सहारा लेना पड़ा। पति की मृत्यु के बाद सती बनने की प्रथा लाई गई और देखते ही देखते कुरीतियों की बाढ़ सी आ गई जो नारी चूल्हे-चौखट से चौपाल तक जाने की क्षमता रखती थी वह दहलीज लांघने को भी लाचार हो गई।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि मातृत्व की छाँव में ही हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। माँ ही बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। हमें ये कतई नहीं भूलना चाहिए कि 'सशक्त नारी से ही सशक्त समाज और सशक्त देश का निर्माण हो सकता है और हुआ भी है। शायद इसीलिए शर-शैया पर लेटे हुए भीष्म-पितामह ने अपने अंतिम समय में पांडवों को राजनीति के पाठ पढ़ाते हुए नसीहत दी थी कि किसी राजा की कुशलता इस तथ्य की मोहताज होती है कि उस के राज्य में महिलाओं का सम्मान कितना होता है ? यही कारण है कि आज महिला सशक्तिकरण सरकार की उपलब्धियों का सार्थक मापदंड बना हुआ है। वर्तमान राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने इंदिरा गांधी पुरुस्कार देते समय यह कहा था कि राष्ट्र की आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की उचित भागीदारी के बिना सामाजिक प्रगति की अपेक्षा रखना तर्कसंगत नहीं होगा। आज हमारे देश में भी महिलाएँ आगे बढ़-चढ़कर व्यापार व कॉरपोरेट जगत में अहम भागीदारी कर रही हैं। लेकिन चंद महिलाओं को ऊंचाई पर देख, हम उनमें से एक बड़े प्रतिशत की अशिक्षित महिलाओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते जो आज भी कुपोषण की शिकार हैं, घरेलू हिंसा और तनाकसी से तार-तार हो रही हैं, दहेज के लिए जलाई जा रही हैं, बेटी को जन्म देने के निर्णय के लिए भी वे पुरुष पर निर्भर हैं।

सही अर्थों में देखा जाए तो 8 मार्च को महिला दिवस मनाने का औचित्य यही है कि महिला सशक्तिकरण हो तथा उन्हें उनका आत्म-सम्मान लौटाया जाए। उसे आत्मनिर्भर बनाया जाए। उस के अस्तित्व की रक्षा की जाए। बहुत सह लिया महिलाओं ने, अब प्रताड़नाओं को सहने का समय खत्म करना होगा, जो प्रताड़ना आज से नहीं सदियों से चली आ रही है उसके खिलाफ आवाज बुलंद करनी होगी। महाभारत में अपने ही देवर दुशासन के हाथों द्रौपदी का चीर-हरण भरी सभा में कुटुंब के

महानुभावों और खुद के ही सशक्त पांच पतियों के सम्मुख हुआ था। जब कभी भी हमारे देश में महिला सशक्तिकरण की चर्चाएं होती हैं तब आर्थिक और राजनैतिक उत्थान की ही बातें होती हैं। इसी कारण आज हम एक पढ़ी-लिखी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिला को हर तरह से सशक्त और सफल मान लेते हैं। पर क्या महिलाओं का सशक्तिकरण आर्थिक रूप से सक्षम हो जाने से हो पाएगा? कतई नहीं..। ये सही है कि वे कामकाजी तो बनी हैं पर अपने घर वापस सुरक्षित पहुँचने की गारंटी क्या उन्हें मिल पाई है? महिलाओं का राजनैतिक उत्थान बताने हेतु हमारी सरकारों ने उन्हें मंत्री का स्थान तो दे दिया है तथा ग्रामीण महिलाओं को सरपंच तो बना दिया है पर वे मंत्री/सरपंच महिलाएं अपने ही पुरुषवर्ग के हाथों की मात्र कठपुतलियां ही नहीं बनी रहें, इस बात का भी विशेष ध्यान रखना होगा।

जब तक महिलाओं का सामाजिक, वैचारिक एवं पारिवारिक तौर पर उत्थान नहीं होगा तब तक सशक्तिकरण का ढोल पीटना एक खेल मात्र ही बना रहेगा। सामाजिक उत्थान का आधार-स्तंभ है नारी-शिक्षा। शिक्षित व्यक्ति ही अपनी समानता और स्वतंत्रता के साथ-साथ अपने कानूनी अधिकारों का बेहतर उपयोग कर सकता है। अपने आत्मसम्मान की रक्षा कर सकता है। अपमानित होने से बच सकता है। शायद यही वजह रही है कि हमारे भारतवर्ष में महिला-शिक्षण का प्रतिशत बहुत कम है क्योंकि हमारे देश के शासन में बैठे मनु महाराज के वंशज ये नहीं चाहते थे कि महिला शिक्षित हो। वे जानते थे कि अगर नारी को पढ़ने देंगे तो वह अपना भला-बुरा समझ पाएगी। उन्हें इस बात का भय भी था कि घर को सही ढंग से चलानेवाली नारी कहीं हमें ही न चला बैठे...!! जब-जब नारी को मौका मिला है, उस ने तब-तब अपनी शक्ति का परिचय बखूबी दिया है। सरोजिनी नायडू, मदर टेरेसा, पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, पूर्व पुलिस कमिश्नर श्रीमती किरन बेदी, आई सी आई सी बैंक की निदेशक चंदा कोचर आदि अनगिनत देश-विदेश की महान महिलाओं ने अपने कार्य को बखूबी तथा कर्मठता से करके नारी शक्ति के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

यह एक मिथ्या सोच ही है कि महिला सशक्तिकरण से पुरुषों के अधिकारों का हनन होगा। सशक्तिकरण अधिकारों का बंटवारा नहीं बल्कि परिस्थितियों और मापदंडों के सुधार का पर्यायवाची है। अगर महिलाओं की स्थिति में सुधार होगा तो पुरुष की स्थिति भी कई गुणा अधिक प्रगति की राह पर अग्रसर होती दिखेगी। वह शिव की शक्ति है। शिव शक्ति बिना अधूरे हैं। नारी भी नर की शक्ति ही है। तभी तो उसे अर्धांगिनी माना जाता रहा है...!! अगर इस सकारात्मक सोच को सामने रखेंगे तभी महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिल पाएगा और तभी महिला दिवस जैसे दिन को मनाने की आवश्यकता समाप्त होगी।

स्वतंत्रता के पूर्व की बात को न लें और सिर्फ उसके बाद के वर्षों पर ध्यान दिया जाए तब ही हम समझ पाएँगे कि स्वतंत्रता के छः दशकों के बाद भी नारी का सशक्तिकरण क्यों नहीं हो पाया? कानून तो बहुत बनें किन्तु आजादी के बाद हमारे संविधान के निर्माण के समय हिंदू कोड बिल की भी बात उठी थी। इस बिल को सामाजिक विधि-विधान को सामने रख बनाया गया था। दुर्भाग्यवश कुछ स्वार्थी के चलते पारित नहीं हो पाया था। पर उसके बाद 1974-78 में पंचवर्षीय योजना के तहत महिलाओं की परिस्थिति में सुधार लाने के लिये कानून बनाये गये जो काफी सक्षम भी थे पर सुधार हो नहीं हो पाया। फिर 1990 में राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन किया गया। इसके पश्चात कुछ बात बनी। 2009-11 में सात सूत्रीय कार्यक्रमों के तहत बहुत सी बातों को आगे रखा गया, सुरक्षित मातृत्व, समान पारिश्रमिक इत्यादि महिला उत्थान को ध्यान में रख कायदे बनाए गए थे। वर्ष 2010 में 'मिशन पूर्ण शक्ति' की स्थापना भी हो गई पर नतीजा यह हुआ कि आज 21^{वीं} सदी में भी जब महिला शिक्षा को बढ़ावा मिला तथा उनके सुरक्षा के लिए कई कानून और योजनाएँ बनाई गई किन्तु फिर भी उन पर शोषण और बलात्कार जैसे मामलों की बाढ़ सी आ गई।

आज भी हमारी महिलाओं को घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ रहा है। आज भी कार्यस्थल पर पदोन्नति के लिए पक्षपात को झेलना पड़ रहा है व आज अपने ही घरों में यौन शोषण का शिकार बनी देखी जा रही है। उसे शिक्षा से वंचित रखा जा रहा है और सब से दुःखद तो ये है कि आज भी निर्भया, कामिनी, लज्जा कुछ विकृत मानसिकता वाले भेड़ियों के कुकर्म का शिकार बनती देखी जा रही हैं। चौराहों पर उनके शील का हनन किया जा रहा है, क्या इसे हम नारी सशक्तिकरण मान लें? क्या कानून बनाकर भी हम नारी अस्मिता को नीलाम होने से रोक पाएँ? नहीं। क्यों? क्योंकि मानव बड़ा समझदार प्राणी है। उसने अपनी कथनी और करनी को अलग रखना सीख लिया है। ये भी उतना ही सच है कि जब-जब अति ने सिर उठाया है, उस का तब-तब नाश ही हुआ है। जब कभी धर्म पर अधर्म हावी होने लगता है तो क्रांति का जन्म हुआ है। शायद इसीलिए दिल्ली के गैंगरेप की घटना ने सोए हुए देशवासियों को जगा दिया। प्रशासन में बैठ जनता के हित के ठेकेदारों को चुनौती दे डाली। लेकिन रावण तब भी था और अब भी है। महिलाओं को अपने सम्मान के लिए खुद को एक भारतीय संस्कारों से ओत-प्रोत महिला का गर्वरूपी अमली जामा ओढ़ना होगा तथा अपनी अभिव्यक्ति को जताने का अधिकार लेना होगा और यदि कोई भी आंच आए तब वह माँ दुर्गा और रानी लक्ष्मी बाई का रौद्र रूप लेकर अपनी अधिकारों को रक्षा खुदबखुद कर सके।

मेरा मानना यह भी है कि महिलाओं के प्रत्येक क्षेत्र में उत्थान के लिए कानूनों की बैसाखियों का सहारा तो लेना है पर साथ-साथ अपने आप को शिक्षित कर खुद के अस्तित्व को ऊपर उठाना

है। अपने आत्मसम्मान को बरकरार रखना है और आत्मनिर्भर हो आत्म रक्षा के लिए तैयार होना है। मानसिक तौर पर भले ही हम सशक्त हैं पर शारीरिक तौर पर भी हमें सशक्त बनना होगा तभी सही अर्थों में हम महिलाओं के सशक्तिकरण को सही दिशा दे पायेंगे और तभी महिला दिवस को भी आदर और सम्मान के साथ मनाने का औचित्य पूर्ण हो सकेगा। हमारे देश के 2014 के आम चुनावों में नई चुनी गई सरकार ने अपने घोषणा पत्र में महिलाओं की पूर्ण सुरक्षा और उन पर हो रहे अत्याचारों व शोषणों को समाप्त करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाने का आश्वासन दिया है तथा अपने मंत्रिमंडल में भी उन्हें अधिक संख्या में जिम्मेदारियाँ देकर महिला शक्ति के प्रति विश्वास दिखाया है। इससे यह आशा जगी और बढ़ी है कि आने वाले समय में हमारे देश में महिलाओं की कार्यक्षमता और उनके अधिकारों के लिए उचित सम्मान और इंसोफ मिल सकेगा।

सराहनीय कार्टून - 2013



श्री वेद प्रकाश बावलिया
सहायक मौसम विज्ञानी, उपग्रह मौसम प्रभाग
मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

विकास या विनाश

सामान्य
लेख

-पूनम सिंह

वैज्ञानिक सहायक

प्रादेशिक मौसम केंद्र, नई दिल्ली

विकास, विनाश हैं दो समुदाय, इनमें संतुलन बिठाना है।

इनकी करें यदि अनदेखी, आपदाओं को बुलाना है।

भारतवर्ष प्राचीन काल से ही विद्वानों का देश कहलाता है परन्तु मानवनिर्मित त्रुटियों के कारण उत्तराखण्ड- त्रासदी जैसी आपदा का सामना करना पड़ा।

उत्तराखण्ड त्रासदी के पूर्व क्या विकास के नाम पर वहाँ के मूल निवासियों की परम्परा व संस्कृति “धारी देवी जी” का स्थान परिवर्तन करके उनका अपमान नहीं किया गया? लोगों की भावना, परम्परा और संस्कृति को ध्यान में रखकर ही विकास किया जाना चाहिए।

प्राकृतिक आपदाएँ मानवनिर्मित हैं, इस संबंध में 2005 से पूर्व शोध कार्यो पर चर्चा हुई थी और भारी पैमाने में पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया गया था। हम जाने-अनजाने जिन नदियों को नाले में तबदील कर रहे हैं, वही नदियाँ एक दिन रौद्र रूप धारण करेंगी। उदाहरण के तौर पर उत्तराखण्ड त्रासदी एक छोटा सा बिन्दु मात्र है। अभी इससे भी भयंकर रूप देखना बाकी है। जो लोग आँकड़ों की भाषा में विश्वास रखते हैं उन्हें सुनामी जैसी आपदा का आभास तक नहीं हो पाया, जबकि उन टापुओं में रहने वाले पशु-पक्षी, जीव-जन्तु एवं आदिवासियों ने अपना स्थान परिवर्तन बिना किसी किताबी ज्ञान के ही कर लिया था।

जल, जंगल और जमीन पर कब्जा करने वाली माफिया, खनन माफिया, लीसा माफिया, भवन निर्माण माफिया, तीर्थ स्थलों को पर्यटन में परिवर्तन करने वाली माफिया तथा विकास के नाम पर हिमालय को दहलाने वाली माफिया पर्वतीय क्षेत्रों में सक्रिय रूप से अपना कार्य कर रहे हैं। भारी मात्रा में खनन किए जाने के फलस्वरूप उत्तराखण्ड त्रासदी का भयंकर परिणाम सामने आ गया है। यह त्रासदी मानवनिर्मित नहीं है तो और क्या है?

भारत की सम्पदाओं पर, हर नागरिक का है अधिकार।

जल, जंगल और जमीन से, माफिया को दूर भगाना है।

महानगरों में रहने वाले प्रदूषण को इतनी ज्यादा मात्रा में फैला रहे हैं कि जिससे ओजोन परत भारी मात्रा में वायुमंडल में निर्मित हो रही है। लिहाजा ऊष्मीकरण से पर्वतीय क्षेत्रों में बादल

फट रहें हैं जो इन क्षेत्रों में भारी तबाही मचाते हैं।

भारत देश हुआ आजाद, फिर भी प्रदूषण का हुआ गुलाम।

सच्ची आजादी को पाना है, प्रदूषण को दूर भगाना है।

ऊष्मीकरण से यदि बचना है, कार्बन उत्सर्जन कम करना है।

एक ही नारा हो हम सबका, वृक्षों को लगाना है।

हिमालय की चोटी पर तमाम हिम के तालाब निर्मित हो चुके हैं जो आने वाली आपदा के रौद्र रूप के संकेत हैं। क्या मौसम विज्ञान द्वारा जारी की गई चेतावनी पर्याप्त नहीं थी? हाँ पर्याप्त थी। वहाँ के लोगों द्वारा प्राप्त सूचना के अनुसार घोषणाएँ व सीटी बजाकर जागरूक किया गया था परन्तु पर्यटकों ने इसकी अनदेखी की।

विकास और विनाश में स्वयं मानव को ही चुनना होगा कि वह संतुलन कैसे बिठाए जिसमें सबसे पहले पेड़ों की कटाई की भरपाई आवश्यक है। जल, जमीन, जंगल व आकाश में रहने वाले जीव-जन्तुओं का संरक्षण होना चाहिए। भूमि न खिसक पाए उसके लिए भूसंरक्षण आवश्यक है। मानव पर्वतीय क्षेत्रों में आजादी से सांस ले सके। उसकी परंपरा व संस्कृति का संरक्षण जरूरी है। पर्वतीय क्षेत्रों के तीर्थस्थलों को आबादी मुक्त कराना भी नितांत आवश्यक है। नदियों के तट को भवनों के निर्माण से बचाना भी जरूरी है। बहती नदियों में कोई रुकावट न पैदा हो, इसका हमें ध्यान रखना होगा।

आधुनिक युग के इस दौर में, नित नए कारखाने खुलते हैं।

जो नदियों को दूषित करते हैं, सब जीवों में विष घोलते हैं।

स्वतंत्रता हम सबको मुफ्त में मिली है, क्या देश पर कुर्बान होने वालों ने अपने अधिकारों को सर्वप्रथम रखा था या कर्तव्यों को? आज नागरिकों का इस देश के प्रति क्या कर्तव्य है? जिस प्रकार शहीदों ने इस देश पर कुर्बान होकर हमें आजादी से सांस लेना सिखाया है उसी प्रकार हर देशवासी को यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि पर्यावरण को प्रदूषण रहित बनाएँ जिसमें जल, जंगल, जमीन व आकाश में रहने वाले सभी प्राणियों को स्वतंत्रता से सांस लेने की आजादी हो और इनसे जुड़े माफिया को खत्म करना होगा।

पर्यावरण का संरक्षण हो, यह संकल्प उठाना है।

उत्तम विचारों का पालन करके, इस पृथ्वी को बचाना है।

दहेज - जिम्मेदार कौन ?

सामान्य
लेख

-दिनेश कुशवाहा
मैकेनिक

मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक (उ.वा.उपकरण)

आज तेजी से हो रहे वैज्ञानिक आविष्कारों, तकनीकी बदलावों एवं नित उपलब्धियों से इतना तो स्पष्ट है कि हम विकास की ओर अग्रसर हैं, परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि उसकी दिशा ठीक भी है या नहीं? इक्कीसवीं सदी में विकास का पैमाना तय करने के बावजूद हम तर्कसंगत विकास की अवधारणा प्रस्तुत नहीं कर सके हैं क्योंकि अब भी हमारे सामने कई ऐसी चुनौतियाँ हैं जिन पर काबू पाना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। एक तरफ हम विकास की नई सीढ़ियों पर कदम रख रहे हैं और दूसरी ओर पुरानी प्रथाओं और सामाजिक विसंगतियों को ढो रहे हैं। हमारे देश में ऐसी कई प्रथाएँ हैं जिनके भीतर जाने कितनी बुराइयाँ भरी पड़ी हैं। इन्हीं में दहेज भी एक है।

दहेज का चलन हमारे समाज में इस कदर फैला है कि इससे कोई भी नहीं बच पाया है। दहेज हमारे समाज में व्याप्त एक ऐसी महामारी है जो हमारे समाज को खोखला करती जा रही है। इसके कारण पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में महिलाओं की स्थिति अत्यंत सोचनीय बनती जा रही है। आये दिन ससुराल वालों द्वारा प्रताड़ित करना जैसे अपने मायके से ये सामान लेकर आना या इतने पैसे लेकर आना, तो ही ससुराल आना वरना नहीं, बच्चों से दूर कर देना आदि। पुराने समय में भी शादी-विवाह में लेन-देन का प्रचलन तो था परन्तु उसका उद्देश्य आजकल से बिल्कुल भिन्न था। उस समय लड़की के पिता द्वारा अपनी इच्छा से लड़की को घर का आवश्यक आभूषण समान दिया जाता था तथा लड़के एवं लड़की को कुछ आभूषण दिये जाते थे ताकि भविष्य में उनके दाम्पत्य जीवन में कोई आर्थिक समस्या आए तो उससे निपटा जा सके। परन्तु अब यह तरीका आधुनिक हो गया है। अब शादी से पहले ही बकरे की तरह लड़के की कीमत लगा दी जाती है और जो अधिक कीमत लगाता है उसके साथ शादी तय कर दी जाती है और लड़के वालों द्वारा माँगों की सूची लड़की वालों को थमा दी जाती है। इसकी पूर्ति के लिए चाहे वह कुछ भी करें। आजकल दहेज को लेकर समाज के हर वर्ग में प्रतिस्पर्धा भी हो रही है। समाज के एक ही वर्ग में अक्सर यह देखने को मिलता है कि मैंने अपने लड़के की शादी में इतने लाख लिए तो दूसरा कहता है कि बस इतने सस्ते में शादी कर ली, मैं तो इतने सस्ते में अपने लड़के की शादी नहीं करूँगा। मुझे तो रूपयों के साथ-साथ गाड़ी, घर का सारा सामान भी चाहिए। क्योंकि कुछ लोगों का मानना है कि जो अधिक

दहेज लेकर शादी करता है वह समाज में अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है। लोग भी तारीफों के पुल बाँधते हैं कि फलान् व्यक्ति ने क्या शानदार शादी की, इतनी बड़ी शादी हमने आज तक नहीं देखी। फिर तीसरा व्यक्ति सोचता है कि मैं इससे भी बड़ी शादी करूँगा और समाज में इससे भी अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाऊँगा। इस प्रकार की प्रतिस्पर्धा हमारे समाज में जोरों से चल रही है। परन्तु क्या यह सोचना सही होगा कि दहेज के लिए केवल लड़के वाले ही जिम्मेदार हैं। कहीं न कहीं तो लड़की वाले भी जिम्मेदार हैं क्योंकि लड़के वाले ही लड़के वालों के आगे दहेज का प्रस्ताव रखते हैं जैसे मैं इतना नकद, गाड़ी, सामान आदि देने को तैयार हूँ। इससे लड़के वालों के मन में लालच आ जाता है और यह लालच आगे बढ़ता ही जाता है और कभी समाप्त नहीं होता। इसके दूरगामी परिणाम भविष्य में सामने आते हैं। परिणामस्वरूप लड़की को आजीवन दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता है।

सरकार ने दहेज माँग को लेकर सख्त कानून भी बनाए हैं जिनमें भारतीय दण्ड संहिता का अनुच्छेद 498 (ए) दहेज एक्ट प्रमुख है। इसके तहत तुरंत गिरफ्तारी होती है एवं यह गैर जमानती अपराध है और इस कानून के तहत उम्रकैद की सजा भी हो सकती है। परन्तु इस कानून का उपयोग हो रहा है तो साथ ही दुरुपयोग भी हो रहा है। हमें अक्सर जगह-जगह यह पढ़ने या देखने को मिलता है “दहेज लेना और दहेज देना कानूनी अपराध है” यह पंक्ति केवल विज्ञापनों तक ही सीमित है, आज भी हमारे चरित्र में नहीं उतरी है। आवश्यकता है एक ऐसे साफ सुथरे सामाजिक वातावरण के निर्माण की जहाँ नारी अपने आप को बेवस और लाचार नहीं समझे। वह आत्मनिर्भर हो। उसे नारी होने का अफसोस नहीं गर्व महसूस हो। इस दहेज रूपी महामारी को जड़ से खत्म करने के लिए जहाँ युवाओं को एक सशक्त भूमिका निभाने की आवश्यकता है कि वह दहेज का लालच नहीं रखते हैं अपितु ऐसा जीवन साथी चाहते हैं जो पत्नी और मित्र के रूप में हर कदम पर उसका साथ दे। वहीं युवतियों को भी आत्मनिर्भर बनना है और दहेज जैसी कुरीति को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। जब युवा की अपनी संकीर्ण मानसिकता दकियानूसी विचारधारा और स्वार्थ से ऊपर उठेगा तभी यह अभिशाप दूर हो सकेगा।

गाँधी, बुद्ध, अशोक नाम है बड़े दिव्य सपनों के,

भारत स्वयं मनुष्य जाति की बहुत बड़ी कविता है।

- रामधारी सिंह दिनकर

पग-पग आगे चलता रहा

संस्मरण

विक्रम सेन

सहायक मौसम विज्ञानी

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

जीवन यात्रा में इंसान पग पग आगे चलता रहता है-सुबह का भूला, शाम को लौटता है और रात को विश्राम के समय विवेक मंथन से पाता है; वो यादें, वो सूकन के दिन वापस लौट के नहीं आयेगें। इंसान अपने बुने हुए मकड़ जाल में फँसता चला जाता है।

आज मैं उस दिन को याद करता हूँ जब 23 वर्ष की आयु में भारत मौसम विज्ञान विभाग में मेरी नियुक्ति वरिष्ठ प्रेक्षक के रूप में सरगुजा जिला मुख्यालय, अम्बिकापुर में हुई। सन 1984, महीना फरवरी, तब मोबाइल सेवा आदि कई आधुनिक संसाधनों की सुविधा नहीं थी। मेरे घर लखनऊ से 1000 कि.मी. दूर इस अनजान स्थान के बारे में पूछताछ शुरू की। एक सज्जन ने मुझे बताया कि इलाहाबाद में जाकर पता करो शायद वहाँ से मध्य प्रदेश की ओर जाने वाली राजकीय बस सेवा में उस जगह के लिए साधन मिलें।

मैं अकेला, परिवार को अलविदा कहकर, बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद लेकर चल पड़ा- पग-पग आगे चलता रहा।

इलाहाबाद बस स्टैंड पर एक वृद्ध व्यक्ति आवाज लगा रहा था और पास खड़ी बस में सवारियों को बैठा रहा था। कुछ लोग उसे इस कार्य के लिए पैसा भी दे रहे थे। मैं उसे काफी गौर से देख रहा था- क्योंकि मुझे एक सज्जन ने कहा था कि यह व्यक्ति ही मेरी मदद कर सकता है।

वृद्ध- 'बेटा, क्या बात है'? मैंने सकपका कर उत्तर दिया- "बाबा मुझे अम्बिकापुर जाना है, मध्य प्रदेश में है"। वृद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा (शायद वो मेरी मनोस्थिति एवं अकेलेपन के भय को भाँप गया था) हाँ। बेटा सुबह 4.00 बजे एक बस जाती है और अगर अभी जाना हो तो वो बस खड़ी है। इससे सतना उतर जाना, वहाँ से कटनी को जाने वाली ट्रेन पकड़ कर कटनी उतर जाना। फिर कटनी से मनेंद्रगढ़ की ट्रेन मिलेगी। अम्बिकापुर के लिए बस से 125 कि.मी. की दूरी तय करनी पड़ेगी। मैं भौचक्का रह गया-सोचने लगा क्या इस व्यक्ति ने इतनी यात्राएँ की हैं- फिर कैसे सबका मार्गदर्शन कर रहा है।

उस वृद्ध ने मानो मेरे मन की आवाज को सुन लिया और बोला-"बेटा। मेरी उम्र 80 साल है। 10 साल की उम्र से यहाँ आवाज लगा रहा हूँ। मेरी जीविका है। यहीं आते जाते मुसाफिरों से उनके

अनुमानों से अपने को तैयार किया है। मुझ पर भरोसा करो।

मैं हक्का बक्का रह गया। मैं सोचने लगा शायद इन्हीं लोगों के योगदान से मेरा भारत महान है। मुझे इस वृद्ध से प्रेरणा मिली, शक्ति मिली- पूरे भारत का भ्रमण स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गांधी जी ने किया। पूरे भारत को समझा था और फिर भारत के उत्थान के लिए स्वतंत्रता क्रान्ति में कूद पड़े थे। भारत को समझने के लिए प्रत्येक भारतवासी के हृदय को, उसकी व्यथा को, उसकी कथा को एवं उसके भूत एवं वर्तमान को समझना अत्यन्त आवश्यक है।

मैंने देरी नहीं की- उसकी बताई बस में बैठ गया और एक अनजान राह की ओर चल पड़ा- पग-पग आगे चलता गया।

सतना बस स्टैंड पर रेलवे स्टेशन के लिए रिक्शा वाले सवारियों को आवाज दे रहे थे। एक रिक्शा वाले ने मुझे आवाज दी जबकि उसके रिक्शे में एक व्यक्ति अपनी बिटिया के साथ पहले ही बैठा था। मेरी हामी पर उसने मुझे भी बिठा लिया और हम साथ रेलवे स्टेशन सतना की ओर बढ़ चले। रास्ते में उस व्यक्ति की बातचीत से पता चला कि वो भी मनेन्द्रगढ़ जायेगा। फिर क्या था, मुझे तसल्ली मिली और चलते रिक्शे में लगने वाली हवाएँ मुझे अच्छी लगने लगी।

अब बस क्या था- मैं इस व्यक्ति का अनुसरण करने लगा। रात्रि 11 बजे हम कटनी स्टेशन उतर गए। फिर वहाँ से चल कर दूसरे प्लेटफार्म पर खड़े दो बोगियों वाले डिब्बे में घुस गए। अन्दर घुप्प अन्धेरा था। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अचानक लोगों के खॉसने की आवाज एवं तम्बाकू पीटने की आवाज से यह एहसास हुआ कि अन्दर कई लोग विराजमान हैं।

खैर, हमें भी बैठने का स्थान मिल गया। मैं खिड़की की ओर हाथ रखकर सो गया। शायद आगे क्या होगा यह सोचने की क्षमता अत्यधिक थक जाने के कारण खत्म हो गई थी। एक सपना लेकर चल पड़ा- पग पग आगे चलता रहा।

भोर की पहली किरण एवं पक्षियों की चहचहाहट से मेरी नींद खुल गई। मुझे पता ही नहीं चला कि कब मेरी बोगी मनेन्द्रगढ़ जाने वाली ट्रेन से जोड़ी गई। मैंने देखा सामने कई छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, उनमें बहुत दूर एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर एक सफेद मन्दिर-मानो स्वर्ग लोक से उतर कर उस पहाड़ पर आकर टिक गया हो। मेरे मन में अजीब सी जिज्ञासा जगी। क्या मैं कभी घने जंगलों के बीच बसे उस मन्दिर के दर्शन कर पाऊँगा। वो मंदिर किस भगवान का है। उस मंदिर को किसने बनवाया? शायद मैं इस रमणीय स्थान से खुद को जोड़ने का बहाना ढूँढ रहा था।

शायद कोई रहस्यमयी आवाज उस मंदिर से मुझे बुला रही थी। एक अद्भुत एहसास लिए चल पड़ा- पग पग आगे चलता गया।

ट्रेन धीरे-धीरे चल रही थी। मुझे बचपन के साथी याद आ रहे थे। वो लुका छुपी का खेल मुझे सबसे अच्छा लगता था। अरे! यह क्या वो मंदिर भी मुझसे लुका छुपी का खेल खेल रहा है।

कभी पर्वतों के पीछे, कभी पेड़ों के पीछे और अगर कुछ न मिला तो बादलों के पीछे छिप रहा था। मुझे आनन्द आने लगा। कभी-कभी ऐसा भी लगता था कि शायद अब वो मंदिर सामने ही न आए। लेकिन नहीं! वो देखो वो फिर दिखने लगा। इसी खेल-खेल में मैं मनेन्द्रगढ़ पहुँच गया। मनेन्द्रगढ़ से बस स्टैंड के लिए मुझे फिर रिक्शा करना पड़ा। मैंने उस साथी महोदय को धन्यवाद कहा। उसने मुस्कुरा कर शुभकामनायें दीं। मैं रिक्शे में बैठ कर मनेन्द्रगढ़ शहर के बीच सड़क से गुजरने लगा-तो देखा, वो पहाड़ मेरे सामने है, जिसका सपाट हिस्सा शहर की ओर है और ऊपर शिखर पर वो सफेद मन्दिर। मैंने रिक्शे वाले से पूछा तो उसने बताया कि यह एक शिव मन्दिर है- शायद किसी साधु ने बनवाया है। मैंने प्रणाम किया-यही आशा लेकर कि मैं कभी दर्शन करूँ।

एक दिन मैं फागुन माह में, जब टेसु के फूल लाल रंगो की छटा बिखरे हुए होते हैं, पैदल उस पहाड़ी पर चढ़ा। जिसका रास्ता शहर के पीछे थोड़े से जंगली रास्ते से गुजरता है। शिखर पर पहुँचकर मंदिर के दर्शन किए। तभी एक साधु महाराज की आवाज आई- बेटा मैं जानता था- तुम एक दिन जरूर यहाँ आओगे। तुम अपने पिछले जन्म को नहीं देख सकते- आज तुम इस नए जन्म की अनुभूति में डूबे हो। मैं घबरा गया। मैं बाबा के चरणों में गिर गया- आँख मूंद कर रोने लगा और चिल्ला कर बोला- बोलो बाबा! मैं कौन हूँ! मैं कौन हूँ?

आँखे खुली सामने कोई नहीं-सिर्फ एक साधु की मूर्ति और मेरा माथा उस मूर्ति के चरणों पर।

मन ने चाहा बस! यहीं रुक जाओ, यहीं शान्ति है- लेकिन सामाजिक दायित्वों ने मुझे मजबूर कर दिया। मैं उठा और चलता गया, पग पग, आगे चलता रहा और फिर दुनिया की भीड़ में खो गया।

केवल भारत ही एक ऐसा देश है, जिसका अतीत कभी मरा नहीं, वह बराबर वर्तमान के रथ पर चढ़कर भविष्य की ओर चलता रहा है। भारत का अतीत जीवित है और आगे भी जीवित रहेगा।

-रामधारी सिंह दिनकर

ईस्टर द्वीप

रहस्य रोमाँच

-रेवा शर्मा

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय

ज्ञान विज्ञान के रथ पर आरूढ़ होकर आज मानव अंतरिक्ष में विचरण कर रहा है। अंतरिक्ष में बस्तियाँ बसाने की तैयारी में है, पृथ्वी के गर्भ में मौजूद अनेक रहस्यों से परदा उठा रहा है। नित्य नई दुर्लभ जानकारियाँ सामने ला रहा है। महासागर की अतल गहराइयों में डूबता उबरता नित नए ज्ञान के खजाने दुनिया के सामने ला रहा है। किंतु बावजूद इसके इस पृथ्वी पर अभी ऐसे अनेक रहस्य, अनेक प्रश्न, मौजूद हैं जिनका उत्तर अभी मिलना बाकी है। जितना शोध किया, जितना ज्ञान खंगाला किंतु प्रश्न चिह्न उसके आगे तब भी थे, आज भी हैं। शोध जारी है। इसी परिप्रेक्ष्य में मौसम मंजूषा के 17 वें अंक में हमने नाज़का लाइन्स के बारे में बात की थी।

तो हम इस बार बात करेंगे प्रशांत महासागर के ईस्टर द्वीप के बारे में। ईस्टर द्वीप पर विशालकाय प्रस्तर मूर्तियाँ हैं जिनकी ऊँचाई लगभग 12-15 फुट होगी और उनका भार 20-20 टन होगा। इन विशालकाय पत्थरों को तराशा गया है इंसान के चेहरों के रूप में। ये प्रस्तर मूर्तियाँ वेदी पर स्थापित हैं जिन्हें आहु कहते हैं। इन्हें वहाँ की स्थानीय भाषा में मोआई (MOI) कहा जाता है। सबसे विशाल मोआई 32 फुट लंबा और 90 टन भारी है।



इस भूले बिसरे द्वीप का नाम ईस्टर द्वीप इसलिए पड़ा क्योंकि 1722 के ईस्टर रविवार के दिन हॉलैंडवासी अन्वेषक जैकब रॉंगीवीन ने अपने कदम यहाँ रखे। इसीलिए इस द्वीप का नाम ईस्टर द्वीप पड़ा। इसके बाद 1770 में स्पेनवासी फेलिप गोंजालेज़ का आगमन इस द्वीप पर हुआ और इस के चार वर्ष बाद जेम्स कुक यहाँ आए। 1768 में फांसीसी एडमिरल जीन आए। ला पेराउस भी यहाँ आए। ऐसा माना जाता है कि 18 वीं शती में इन अन्वेषकों को द्वीप पर 3-4 हजार लोग मिले। यहाँ

के बाशिंदों में नरमास का भक्षण करना सामान्य सी बात थी। ये लोग आपस में लड़ते रहते थे। युद्धरत रहते हुए ही द्वीपवासियों में यहाँ बनी हुई विशाल प्रस्तर प्रतिमाओं को उनकी वेदियों से गिराया होगा। पत्थरों को तोड़ा फोड़ा। 19 वीं शताब्दी का मध्य आते आते द्वीपवासियों ने यहाँ मौजूद लगभग सभी प्रतिमाएँ गिरा दी।

19^{वीं} शताब्दी में यूरोपियनों ने ईस्टर द्वीप आकर यहाँ के पिछड़े निवासियों को दास बनाना आरंभ किया। इतिहासकार बताते हैं कि 1805 में नैसी नाम का अमेरिकन 22 द्वीपवासियों को दास बनाकर ले गया। अब कई द्वीपवासी अपनी स्थानीय कला कौशल में निपुण थे। वे उस द्वीप से गए तो उनका ज्ञान भी चला गया। 1859 से 1862 के बीच पेरू के दास व्यापारी, 1000 द्वीपवासियों को दास बना कर ले गए। इतिहासकारों का ऐसा मानना है, इनमें से 100 द्वीपवासियों को ही बचाया जा सका जिनमें से जीवित केवल 15 ही वापस द्वीप पर पहुँच सके। लौटे तो चेचक जैसी गंभीर बीमारियाँ भी साथ ले आए और द्वीप पर रहने वालों की संख्या और भी कम हो गई। ऐसा माना जाता है कि 1877 तक केवल 111 मूल निवासी ही बचे। चिली तथा ईसाई मिशनरी ने अन्ततः इस द्वीप पर रहने वाले लोगों का उद्धार किया। उसी समय से यह द्वीप चिली के प्रभुत्व में है।

अब तक ईस्टर द्वीप पर बनी विशाल प्रस्तर मूर्तियाँ और उनके रहस्यमयी नेत्रों ने दुनिया का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर लिया था। विश्व के अनेक विद्वान इन मूर्तियों के रहस्यों का पता लगाने के लिए खोज करने लगे। इनके पुनरुद्धार के लिए प्रयास किए गए। 1966 में अमेरिका के डब्ल्यू जे थॉमसन; 1914-1915 में इंग्लैंड की कैथरीन राउटलैज; 1934-1935 में फ्रांस के अलफ्रेड, मैट्रक्स एवं वेल्जियम के हेनरी लेवशेरी; 1935-39 जर्मन मिशनरी सेवाश्चियन एललेर्ट; 1955-56 नार्वे के योर हैददाल और अमेरिकी मानव विज्ञानी विलियम मुलोय ऐसे लोग थे जिन्होंने ईस्टर द्वीप की रहस्यमय प्रतिमाओं तथा विलुप्त सभ्यता के बारे में अध्ययन और जानकारीयाँ संगृहीत की। इन्हीं महानुभावों के प्रयासों से जमीन पर लुढ़की हुई विरासत, सभी प्रतिमाओं को दोबारा अपने स्थान पर खड़ा किया गया।

ईस्टर द्वीप के दक्षिणी भाग पर स्थित शनोरा शक् नामक एक ज्वालामुखी स्थित है। इस ज्वालामुखी के ढलानों पर लगभग 300 विशालकाय मूर्तियाँ पड़ी हुई हैं। इनके निर्माण के लिए विभिन्न शैलियों का उपयोग किया गया है। इनमें कुछ ऐसी प्रस्तर प्रतिमाएँ भी थीं जिनके चेहरों को आकृति दी गई या आकृति दी जानी शेष थी। इन मूर्तियों के पास ही इन्हें बनाने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले उपकरण अर्थात् पत्थर की खोदनी और गैतियाँ भी पड़ी हुई मिली हैं। इससे विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इन शिल्पकारों को जल्दबाजी में अपना काम छोड़ छाड़ कर वहाँ से भागना पड़ा होगा।

ज्वालामुखी के आस पास 100 विशालकाय मूर्तियाँ खड़ी हुई हैं। कुछ मूर्तियों के ऊपर तो गोदने के प्रतीक चिह्न भी बने हुए मिलते हैं। इन मूर्तियों की आँखें पूरी तरह बनी हुई नहीं हैं इसलिए इन मूर्तियों को अंधे मोआई कहा जाता है। इन्हें निर्मित करने वाले शिल्पकार मूर्तियों की आँखें सबसे अंत में, यानि उन्हें वेदियों पर स्थापित करने के उपरांत, बनाते थे। इसके अलावा यहाँ पुजारी का घर, रिहायशी गुफाएँ तथा लकड़ी के खुदे हुए आभूषण भी मिले हैं।

किंतु यह पहेली आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है कि इतनी विशाल, भारी भरकम अद्भुत मूर्तियों का निर्माण करने वाले लोग आखिर थे कौन? क्यों उन्होंने इन मूर्तियों का निर्माण किया? हालाँकि कुछ विद्वानों का मानना है कि ये मूर्तियाँ किसी खोई हुई सभ्यता का प्रतीक हैं तो कुछ तो यह दावा भी करते हैं कि इस द्वीप में बाह्य अंतरिक्ष के प्राणी बसे हुए थे। कुछ विद्वान इसका संबंध मिस्र से भी जोड़ते हैं।

अंततः तमाम अध्ययनों के उपरांत आज आधुनिक युग में विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इन मूर्तियों के बनाने वाले पोलीनेसियन लोग थे। ऐसे प्रमाण मिले हैं कि 1110-1205 ईस्वी के बीच, 1650 ईस्वी तक इस द्वीप पर रहने वाले लोग विशालकाय, भारी भरकम प्रस्तर प्रतिमाएँ एवं उनकी वेदियों का निर्माण करते रहे। ऐसा मत है कि उस समय हानाऊ ईसे के नेतृत्व वाले गुट का राज्य था। इस गुट के अत्याचारों से तंग आकर हानाऊ मोमोको के गुट ने विद्रोह कर दिया तो शासकों का दल पोईके ज्वालामुखी के ढलानों की ओर भाग गया और वहाँ खंदक खोद कर मोर्चा बाँध लिया। इस खंदक के अवशेष आज भी ईस्टर द्वीप पर मौजूद हैं।

हैरतअंगेज बात यह है कि शिल्पकारों ने टनों वजनी पत्थरों को कैसे अपने स्थान से सरकाया होगा। उसे सरकाने में कितनी जनशक्ति की आवश्यकता पड़ी होगी। विलियन मुलोय का मानना है कि उस समय द्वीप की जनसंख्या 20,000 तो रही ही होगी। उनका यह भी मानना है कि पेड़ का तना काट कर लकड़ी की स्लेजनुमा किसी चीज पर रखकर सरकाया होगा। उन्होंने वहाँ के बचे खुचे निवासियों पर भी कई प्रयोग किए ताकि उन्हें इन प्रस्तर प्रतिमाओं की शिल्पकला की जानकारी प्राप्त हो सके।

किंतु कोई ठोस जानकारी नहीं मिल सकी। आज भी यह गुत्थी उलझी हुई है कि इतनी विशाल भारी भरकम मूर्तियों के निर्माण की आवश्यकता क्या थी। इन्हें बनाने वाले कौन थे? इन मूर्तियों के शिल्पकार समय के चक्र में कहाँ खो गए? प्रशांत महासागर की रहस्यमय लहरें ईस्टर द्वीप की इन प्रस्तर मूर्तियों की साक्षी अवश्य होंगी और ईस्टर द्वीप पर स्थित प्रस्तर प्रतिमाएँ और उनकी आँखें आज भी महासागर की ओर निहार रहीं हैं; न जाने किसका इंतज़ार है।

यमलोक में जन-आंदोलन

नाटक

-जुगेन्द्र सिंह

वैज्ञानिक सहायक

मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक (उ.वा.उपकरण)

पिछले कुछ दिनों में यमराज के यमदूत जितनी मृत आत्माओं को पृथ्वी लोक से यमलोक लेकर आये हैं, उनमें से कुछ ने आते ही यहाँ एक संगठन बना लिया है क्योंकि उन्हें यहाँ आकर लगता है कि यमलोक की व्यवस्था, कार्यप्रणाली एवं प्रशासन में घपला है और यमराज तथा उनके यमदूतों की निरंकुशशाही कम करने के लिए यमराज को भी जन लोकपाल के दायरे में लाया जाना चाहिए। इसी कारण इन्होंने यहाँ आन्दोलन कर दिया है तथा काफी लोग इनके साथ में मिल गए हैं, इससे यमलोक में सारा काम-काज ठप्प पड़ गया है।

आन्दोलनकारियों ने यमराज को अपनी माँगों की सूची भेज दी है। इसमें तीन बातों का खुलासा किया गया है। एक - मनुष्य को मृत्यु के प्रतिकार का अधिकार मिलना चाहिए तथा यमदूतों की मनमानी बंद होनी चाहिए। दो-यमलोक में भी सूचना के अधिकार का कड़ाई से पालन होना चाहिए। तीन- यमराज को भी जनलोक के दायरे में लाया जाना चाहिए जिससे यहाँ व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अराजकता पर अंकुश लग सके।

इसके बाद यमराज अपने मुख्य यमराज को बुलाकर उसे आन्दोलनकारियों के बारे में आँकड़े एकत्रित करने तथा उनका ब्यौरा तैयार करने को कहकर अपने निवास स्थल की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। अगले दिन वे आन्दोलन स्थल का मुआयना करने के लिए आते हैं यमदूत भी उनके साथ में हैं और----- आगे-----

यमराज: (यमदूत से) अरे ! ये मंच पर बैठे हुए सफेद वस्त्र पहने हुए दो भद्र पुरुष कौन हैं ?
हाँ, हाँ वो जो बीच में एक साथ बैठे हैं !

यमदूत: महाराज, इनमें से एक तो सामाजिक कार्यकर्ता है। ये महाशय ! किसी दूरदराज इलाके में जनलोकपाल लाने के लिए काफी दिनों से धरना प्रदर्शन कर रहे थे। काफी दिनों तक बैठे रहे। अब आपको तो पता ही है कि प्रशासन वहाँ कितना लापरवाह तथा उदासीन है किसी ने कोई सुध नहीं ली। अब महाराज ! हमें तो अपना काम करना पड़ता है, है कि नहीं, ये महाशय जब से यहाँ आए हैं, एक ही रट लगाये हुए हैं, जनलोकपाल लाना है, देश बचाना है। कहते हैं मेरा कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है या तो मुझे वापिस भेजो नहीं तो यमराज को भी इसके दायरे में लाओ यहाँ भी कम घपले नही हैं।

यमराज: अच्छा ! ये बात है ! और ये दूसरे----- ?

यमदूत: महाराज ! इनकी मत पूछिये ! ये साहब कोई सूचना अधिकार विशेषज्ञ हैं, जब से यहाँ आये हैं सबकी नाक में दम कर के रखा है। हमसे बड़ी भूल हो गयी जो हम इन्हें

यहाँ ले आये ना लाते तो अच्छा था।

यमराज: ऐसा क्या ?

यमदूत: जी महाराज ! इनकी वजह से प्रशासन का काम-काज ठप्प पड़ गया है। इन्हें हमारे प्रत्येक कार्य की सूचना चाहिए।

यमराज: (भौचक्का होते हुए) क्या !

यमदूत: जी हाँ महाराज। कितने आदमी प्रति माह मृत्यु लोक से यहाँ आए? किस किस को और क्यों लाया गया? कितने नर्क गए और कितने स्वर्ग ? हर महीने का ब्यौरा चाहिए ।

यमराज: यह तो वाकई मुश्किल कार्य है ! इससे प्रशासनिक कार्यों पर अनावश्यक ऊर्जा खर्च होगी ।

यमदूत: (आगे कहते हुए) इतने तक तो ठीक था महाराज! परन्तु इन्हें भैंसे के रखरखाव से लेकर यहाँ पर यमदूतों के वेतन, उनकी नियुक्ति की प्रक्रिया तथा वर्ष के अन्त में लेखा-जोखा आदि आदि सभी सूचनाएं चाहिए। अगर ऐसा हुआ तो हमें अपना कार्य करना मुश्किल हो जायेगा ।

यमराज: (विचारमग्न होते हुए) फिर तो लगता है, वाकई गलती हो गयी।

यमदूत के साथ थोड़ा और आगे बढ़ते हैं और पूछते हैं।

यमराज: (यमदूत से) और ये गरीब सा व्यक्ति कौन है यमदूत ?

यमदूत: यह बेचारा गरीब किसान है यमराज, शायद आत्महत्या का मामला है ।

यमराज: आत्महत्या !

यमदूत: इस बेचारे की नकली कीटनाशकों के प्रयोग से फसल बरबाद हो गयी थी ।

यमराज: बहुत ही दुःखःद एवं गम्भीर विषय है काफी किसान फसल बर्बाद होने से आत्महत्या कर रहे हैं ।

यमदूत: वो तो सब ठीक है महाराज ! परन्तु इसको तो एक कीटनाशक बेचने वाले दुकानदार ने चालाकी से फँसा कर मारा । अब लोगों को तो यही लगता है महाराज कि इसने आत्महत्या की है ।

यमराज: वो कैसे ?

यमदूत: यह बेचारा हर साल फसल बर्बाद होने से दुखी था और उससे भी ज्यादा इस बात से दुखी था कि कीटनाशक बेचने वाले कुछ दुकानदार इन भोले-भाले अनपढ़ तथा कम पढ़े लोगों को मोटा मुनाफा कमाने के चक्कर में नकली कीटनाशक बेच रहे हैं, इसने इस तंत्र की पोल खोलने तथा लोगों को जागरूक करने का बीड़ा उठाया।

यमराज: फिर क्या हुआ ?

यमदूत: फिर क्या, यह किसान उन्हें खुद खाकर लोगों को बताता कि ये असरदार नहीं है इसलिए फसल बर्बाद हो रही है। दुकानदार बेहद चालाक था, एक बार उसने चाल चली, इसको असली दे दी और यह बेचारा इसे खाते ही

(और थोड़ा आगे बढ़ते हैं और यमदूत से फिर पूछते हैं।)

- यमराज:** और वो दो सुन्दर तरुण युवतियां...
- यमदूत:** कौन सी महाराज !
- यमदूत:** (जारी रखते हुए) अच्छा वो।वो तो महाराज कान पर मोबाइल लगाकर रेल की पटरी पर चल रही थी और चपेट में आ गई ।
- यमराज:** (गुस्से में) इसमें हमारा क्या दोष ! रेल का पटरिया भी भला कोई सैर-सपाटे की जगह हैं, पृथ्वी पर कितने सारे रमणीय स्थल हैं, उद्यान हैं फिर भी लोग रेल की पटरी पर विचरण करेंगे तो खामियाजा तो भुगतना ही पड़ेगा ना, और वो भी कान में मोबाइल लगाकर.....
- यमदूत:** महाराज! पृथ्वीलोक के प्राणी लापरवाही खुद ही करते हैं और मृत्यु के लिए हमें जिम्मेदार ठहराते हैं, अब तो यमराज मेट्रो रेल के आगे भी कुछ लोग जाने दे रहे हैं ।
- यमराज:** अब जैसा बोओगे वैसा ही तो काटोगे ना! परन्तु ये भी आन्दोलन-----
- यमदूत:** इसका कहना है कि रेलवे को खामियों का खामियाजा इसे भुगतना पड़ा है, रेलों में पूर्व चेतावनी यंत्र लगे होने चाहिए, प्रत्येक वर्ष सैकड़ों जंगली बेजुबान जानवर जैसे गैंडे, गाय, भैंस, हाथी आदि इनसे टकराकर मर जाते हैं ।
- यमराज:** बात तो सही है परन्तु मनुष्य कम से कम अपना खयाल तो रख सकता है और ये दूसरी बालिका ?
- यमदूत:** इसने वियोग में आत्महत्या की है महाराज ! अपने प्रेमी की बेवफाई सह नहीं सकी और झूल गई पंखे से।
- यमराज:** (अचंभित होते हुए) क्यों पहेलियाँ बुझा रहे हो साफ कहो ।
- यमदूत:** पहले शुरू शुरू में तो इसका प्रेमी दिन में 100 बार मोबाइल पर संदेश भेजता था बाद में उसने अपने फेस बुक खाते में भी इसका नाम काट दिया। बस इतनी सी बात पर पंखे से लटक कर जान दे दी ।
- यमराज:** कितनी बुरी बात है। आजकल युवा पीढ़ी को क्या होता जा रहा है? जरा जरा सी बात पर आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही , मगर ये आन्दोलनकारियों का साथ क्यों दे रही है।
- यमदूत:** ये युवती, सोशल मीडिया पर प्रतिबन्ध चाहती है महाराज, इसका कहना है इसका काफी दुरुपयोग हो रहा है। फायदा तो सिर्फ नेता और अभिनेताओं को होता है , इसका प्रयोग दहशतगर्दी तथा अफवाह फैलाने के लिए ज्यादा हो रहा है परिणामस्वरूप देश में हिंसा फैल रही है । देश के कई शहरों में दंगे अफवाहों की वजह से फैले।
- यमराज:** अब क्या करें यमदूत ! मानव अपना विवेक और धैर्य दोनों खोता जा रहा है उसने तकनीक के नाम पर जैसे यंत्रों का आविष्कार किया है जिनके दुरुपयोग से समस्त मानव जाति के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है।
- यमराज और थोड़ा आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि एक महिला को जो काफी दुःखी दिख रही है, उसके बारे अपने यमदूत से पूछते हैं-

- यमराज:** अरे भाई यमदूत! इस गरीब महिला को क्यों ले आये?
- यमदूत:** एक तो गरीब, ऊपर से महिला, इससे बड़ा क्या अपराध होगा इस बेचारी का ।
- यमराज:** गोलमोल नहीं साफ साफ बताओ ?
- यमदूत:** ये बेचारी एक अस्पताल से कुछ ही दूर प्रसव पीड़ा से छटपटा रही थी हम वहाँ से गुजर रहे थे हमसे इसका क्रंदन देखा ना गया।
- यमराज:** ठीक है आपने तो उपकार किया इसको पीड़ा से मुक्त कर दिया। परन्तु इसके साथ कोई ना कोई तो घर वाला होगा कि नहीं ।
- यमदूत:** कोई नहीं था महाराज! इसके पहले से ही चार लड़कियाँ थी, घरवालों को शायद पता चल गया था कि पाँचवी भी लड़की ही है इसलिए छोड़ गए होंगे मरने के लिए । आपको तो पता ही है कि दूरदराज इलाकों में औरतों के प्रति----- (बात अधूरी छोड़ते हुए।)
- यमराज:** वो तो ठीक है परन्तु अब ये हमसे क्या चाहती है?
- यमदूत:** इसका कहना है कि यमराज पक्षपात करते हैं। प्रसव के समय लाखों महिलाओं के प्राण चले जाते हैं जबकि पुरुष पत्नी की मृत्यु के तुरंत बाद ही दूसरा विवाह कर लेता है।
- यमराज:** नहीं यह आरोप बेबुनियाद है। हम कोई पक्षपात नहीं करते। इसे समझाओ?
- यमदूत:** महाराज अभी ये बहुत गुस्से में है, कह रही है हमें पहले तो कोख में ही मारने की कोशिश की जाती है। कुछ भाग्यशाली बच जाती हैं तो उम्र भर लिंग-भेद का शिकार होती है--- हिंसा का शिकार होती हैं । इन पुरुषों को जन्म देने में भी और ना जन्म देने के लिए भी जान हमारी ही जाती है ऐसा क्यों ?
- यमराज इस औरत की दुःख भरी कहानी सुनकर भयभीत हो जाते हैं और अपने निवास स्थल चले जाते हैं पत्नी हाल चाल पूछती है परन्तु यमराज कोई जबाब नहीं देते, भैंस के चारे पानी के प्रबन्ध के लिए कहते हैं और उदास मन से घर के आंगन में बैठ जाते हैं और आगे-----)
- पत्नी:** अजी क्या बात है ? कुछ बोलते क्यों नहीं ?
- यमराज:** क्या बताऊँ भाग्यवान, इस बार यमदूत पिछले एक महीने में जिन लोगों को लाए हैं उनमें से 8-9 लोगों ने आते ही यमलोक में आन्दोलन कर दिया है और बाकी लोग भी इन्हीं के बहकाने में आ गए हैं। यमलोक में सारा काम-काज ठप्प हो गया है-----
- पत्नी:** आज तक तो पहले ऐसे कभी हुआ नहीं महाराज । आपके नाम लेने मात्र से ही लोगों के प्राण गले तक आ जाते हैं थर-थर काँपते हैं। आप मुझे भी तो बताइये कि आखिर इतना दुस्साहस करने की किसकी हिम्मत हो गयी ?
- यमराज:** वो हमारी कार्य प्रणाली पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं । हमारे ऊपर गम्भीर आरोप हैं जैसे हमारे यहाँ भ्रष्टाचार है, हम घूस लेकर कुछ को यमलोक ले आते हैं, हम मनमानी करते हैं , हमारे यमदूत ठीक से कार्य नहीं करते, मदिरापान करने के पश्चात नृत्य देखते हैं। सुबह के समय नशे में धुत होकर किसी को भी उठा लाते हैं,

इनकी नियुक्ति भी योग्यता के आधार पर नहीं होती आदि-आदि-----

पत्नी:

अजी जाने भी दो! जैसे वो खुद अपना कार्य बड़े सुचारू ढंग से करते हैं। इनकी लापरवाही से रेलों से लेकर हवाई जहाज तक न जाने कितनी दुर्घटनाएँ होती हैं प्रत्येक वर्ष। रही बात नृत्य करने की तो हमें और इन्हें कोई गृह प्रवेश में या किसी शॉपिंग माल के उद्घाटन करने के लिए तो बुलाने से रहा तो फिर आप ही बताइएँ कहाँ जाएँ ये और फिर आपको तो रोजाना का कोटा पूरा करना है कि नहीं

यमराज:

वो तो ठीक है मगर----- ?

पत्नी:

मगरक्या? बेचारे कभी-कभी एक आधे घूंट पी लेते हैं तो क्या हुआ, 24 घंटे की आपातकालीन सेवा भी तो उपलब्ध कराते हैं। आप देते ही क्या हैं इन्हें और फिर पगार भी कितनी मिलती है इन बेचारों को इस महंगाई के जमाने में घर चलाना कितना मुश्किल है पता है आपको। अगर गलती से किसी कुख्यात अपराधी, मानवता के दुश्मन, देश की एकता अखण्डता के लिए खतरा पैदा करने वाले एक आध व्यक्ति को घूस लेकर ले भी आते हैं तो क्या धरती का बोझ कम नहीं करते, बात करते हैं -

यमराज:

और भी कई गम्भीर आरोप हैं हम पर ।

पत्नी:

क्या-----क्या?

यमराज:

यमदूतों की भर्ती में घोटाला है। वार्षिक लेखा-जोखा का कोई आकलन नहीं होता और खर्च का नियमित रिकॉर्ड नहीं रखा जाना आदि आदि। और तो और अरे भाग्यवान इनका कहना तो यहाँ तक है कि हमारे भैंसे के चारे और रखरखाव पर जितना खर्च होता है इतने में तो एक व्यक्तिगत वायुयान या हेलीकॉप्टर रखा जा सकता है

पत्नी:

हाँ हेलीकॉप्टर वाली बात तो जमती है बराबर। मेरा आधा दिन तो आपके भैंसे को नहलाने धुलाने में ही गुजर जाता है। हेलीकॉप्टर के आने से हम भी सैर सपाटा कर सकेंगे। और अब हमारा युवराज भी तो बड़ा हो गया है। क्रिकेट मैच तथा सवारी का बड़ा शौक है इसे, हेलिकॉप्टर के आने से-----

यमराज:

खामोश ! तुम भी ना बात का बतंगड़ बना देती हो ।

पत्नी:

जब भी कभी सुविधाओं की बात करती हूँ ऐसे ही चुप करा देते हैं आप। आखिर आपने दिया ही क्या है आज तक । आज मैंने 100 के प्राण, कभी 200 के प्राण हरे। लोगों की चीख पुकार दुखड़ा रोने के सिवाय क्या है आपके पास । हम और हमारे बच्चों के हिस्से में लोगों की बददुआ के सिवाय आता ही क्या है ?

यमराज:

अरे भाग्यवान वो तो सब ठीक है। पहले इस लोकपाल से तो छुटकारा मिले। कैसे हम पर निरंकुश भ्रष्टाचार, वंशवाद, पक्षपात और लिंग भेद के गम्भीर आरोप हैं। ये आत्माएँ सूचना के अधिकार, मृत्यु के प्रतिकार के अधिकार की माँग कर रही हैं। जब लोकपाल के दायरे में हम आर्येंगे तो हमारी तो गद्दी ही चली जायेगी।

पत्नी:

अजी ! निरंकुश तो ये मानव हो गया है, जनसंख्या देखो कितनी बढ़ा दी इसने । अब प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है वन, जंगल, पर्वत, नदियाँ किसी को नहीं बक्शा,

सब को निगल गये । आपने देखा है जब कोई जंगली जानवर गलती से इनकी बस्ती में चला जाता है पूरा गाँव कितनी बेरहमी से उसे मारता है तब इन्हें मृत्यु के प्रतिकार का अधिकार याद नहीं आता-----

और जाने दो ऐसी गद्दी । मैं तो कहती हूँ खुद ही छोड़ दो ।

यमराज: नहीं, कदापि नहीं !

पत्नी: हूँ ! (पैर पटक कर) आपके दिमाग में आज तक कोई काम की बात घुसी है जो आज घुसेगी। खाना खाइए और सो जाइए। मैं भी सो जाती हूँ ।

अगले दिन सुबह-----

यमदूत (जल पान के लिए तैयार बैठे हैं) महाराज की जय हो भारत मौसम विज्ञान विभाग से आपके लिए एक प्रस्ताव आया है ।

यमराज: क्या लिखा है इसमें?

यमदूत: आपसे अनुरोध किया है कि प्राकृतिक आपदाओं जैसे चक्रवात, बादल फटने, बाढ़, सूखा और भूकंप आदि में काफी जान माल की हानि होती है। क्यों नहीं आप अपने यहाँ खुद ही दो चार रेडार और मौसम पूर्वानुमान संबंधी उपकरण लगा लें जिससे आपका भी काम आसान हो जाएगा और हमारा भी

यमराज: नहीं नहीं चित्रगुप्त ! अब ऐसा नहीं है, पिछले वर्ष ओड़ीशा में आए विनाशकारी समुद्री तूफान की स्टीक जानकारी देकर, लाखों लोगों की जान बचाकर मौसम विभाग ने अति प्रशंसनीय कार्य किया है। समस्त विश्व ने भारत मौसम विज्ञान विभाग के इस कार्य की सराहना की है। यह कैसे भूल गए चित्रगुप्त !

चित्रगुप्त: हाँ महाराज! यह तो सत्य है----- मगर जनता समझे तब ना-----

यमराज: जनता भी एक दिन समझ ही जायेगी । आप व्यर्थ की चिंता ना करें।

चित्रगुप्त: ठीक है महाराज-----मगर इस आन्दोलन का क्या करें।

यमराज: हम यम हैं----- यमलोक में कोई घोटाला नहीं, कोई अनियमितता नहीं, कोई भेदभाव पक्षपात नहीं, जो यहाँ आता है उसे उसके कर्मानुसार फल या प्रतिफल मिलता है। हम तो मात्र अपना कर्तव्य निभाते करते हैं। विधि के विधान का पालन करते हैं। यमलोक ऐसे ही चलेगा जैसे चलता आया है----- यहाँ किसी आन्दोलन की जरूरत नहीं-----।

हा हा हा , हम यम हैं , हम यम हैं

भारत मौसम विज्ञान विभाग मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस - 2013 की रिपोर्ट

भारत मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक के कार्यालय, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2013 समारोहपूर्वक मनाया गया । इस समारोह के आयोजन के लिए मौसम विज्ञान के महानिदेशक ने डॉ. एल.आर.मीणा, वैज्ञानिक 'एफ' (आई.एस.एस.डी.) की अध्यक्षता में समारोह समिति का गठन किया । इस समिति के सदस्य श्री ए.के.शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' (उपग्रह मौसम), डॉ. ओ.पी. सिंह, वैज्ञानिक 'एफ' (प्रा.मौ.केंद्र, नई दिल्ली), श्री आर.पी.लाल, वैज्ञानिक 'डी', (बजट/वित्त), श्री एस. बी.त्यागी, वैज्ञानिक 'ई' (जल मौसम प्रभाग), श्री यू.पी.सिंह, निदेशक (प्रकाशन/हिंदी) और सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी रहे । समारोह समिति की बैठक दिनांक 02.08.2013 को हुई जिसमें गत वर्ष की भाँति हिंदी पखवाड़ा के दौरान नीचे लिखी सात प्रतियोगिताएं आयोजित करने का निर्णय लिया गया -

क्र.सं. प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगिता की तिथि
1. हिंदी निबंध	02.9.2013
2. हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन	03.9.2013
3. हिंदी टंकण	04.9.2013
4. स्वरचित हिंदी कविता पाठ	05.9.2013
5. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता	06.9.2013
6. हिंदी स्लोगन एवं कार्टून प्रतियोगिता	
7. हिंदी दिवस समारोह	

पहली पाँच प्रतियोगिताओं के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं दो प्रोत्साहन पुरस्कारों हेतु क्रमशः 2500/-रु., 2000/-रु. और 1500/-रु. एवं 1000/-रु. की राशि के दो प्रोत्साहन पुरस्कार नकद देने का निर्णय लिया गया । हिंदीतर भाषी कार्मिकों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करने हेतु

उनके प्रासांकों के 10 प्रतिशत अंक बोनस के रूप में देने का निर्णय लिया गया । इन पाँच प्रतियोगिताओं के अलावा हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता और हिंदी कार्टून प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्रेष्ठ स्लोगन और सर्वश्रेष्ठ कार्टून को 1000/-रु. के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए ।

हिंदी पखवाड़ा 2013 के दौरान आयोजित की गई हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन, हिंदी टंकण, स्वरचित हिंदी कविता पाठ, हिंदी वाद-विवाद, हिंदी स्लोगन और कार्टून प्रतियोगिताओं के संबंध में संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

1. **हिंदी निबंध:-** यह प्रतियोगिता दिनांक 2.9.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता के विषय "(1) प्राकृतिक आपदा प्रबंधन में भारत कितना सक्षम (2) अन्तरराष्ट्रीय परिपेक्ष्य में भारतीय मौसम सेवा का मूल्यांकन (3) आम आदमी तक मौसम की सूचना पहुँचाने में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का योगदान" रखे गए । इस प्रतियोगिता में कुल 26 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकनकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं :-

1. श्री ए.के.शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' (उपग्रह मौसम)
2. डॉ. सुरिन्द्र कौर, वैज्ञानिक 'एफ' (जल मौसम प्रभाग)
3. डॉ. हरि सिंह, वैज्ञानिक 'ई' मौविउमनि (उवाउ) नई दिल्ली

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री रामहरि शर्मा, वैज्ञानिक सहायक, (राष्ट्रीय ओज़ोन केंद्र) ।
- द्वितीय - श्री दिनेश कुशवाहा, मैकेनिक, (मौविउमनि (उवाउ) नई दिल्ली) ।
- तृतीय - श्री राजेश कुमार-1, वैज्ञानिक सहायक, (जल मौसम प्रभाग) ।
- प्रोत्साहन -I श्री एम.आर.कालवे, वैज्ञानिक सहायक, (सूचना प्रणाली एवं सेवाएं प्रभाग) ।
- प्रोत्साहन -II श्री निरंजन कुमार वर्मा, सहायक मौसम विज्ञानी-1, (सूचना प्रणाली एवं सेवाएं प्रभाग)।



2. **हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता:-** यह प्रतियोगिता दिनांक 03.09.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में कुल 31 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता का मूल्यांकन वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती एम.अनुराधा ने किया ।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री रामहरि शर्मा, वैज्ञानिक सहायक, (राष्ट्रीय ओज़ोन केंद्र) ।
 द्वितीय - श्रीमती नीति डी मलहन, सहायक, (आयोजना अनुभाग) ।
 तृतीय - श्री राजकुमार वर्मा, वैज्ञानिक सहायक (प्रकाशन अनुभाग) ।
 प्रोत्साहन -I श्री शंकर प्रसाद, सहायक मौसम विज्ञानी-II (मौविउमनि (उवाउ) नई दिल्ली) ।
 प्रोत्साहन -II श्री कर्मवीर सिंह, सहायक, (संगठन अनुभाग) ।



3. **हिंदी टंकण प्रतियोगिता :-** यह प्रतियोगिता दिनांक 04.09.2013 को आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 14 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता का मूल्यांकन श्रीमती सरिता जोशी, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया ।

इस प्रतियोगिता में नीचे लिखे प्रतियोगी विजयी रहे :-

- प्रथम - श्री सैय्यद मोहम्मद अली, उच्च श्रेणी लिपिक, (स्थापना-II अनुभाग) ।
 द्वितीय - श्री उमाशंकर, उच्च श्रेणी लिपिक (हिंदी अनुभाग) ।
 तृतीय - श्री जय प्रकाश, सहायक, (कल्याण अनुभाग) ।
 प्रोत्साहन -I श्री गोपीचन्द्र, सहायक (प्रकाशन अनुभाग) ।
 प्रोत्साहन -II सुश्री एस.जयालक्ष्मी, अवर श्रेणी लिपिक, मौविउमनि (उ.वा.उ.) नई दिल्ली



4. **स्वरचित हिंदी कविता पाठ :** - यह प्रतियोगिता दिनांक 05.09.2013 को आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 21 प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का मूल्यांकन समिति के सदस्यों द्वारा विवरण इस प्रकार है :-

1. डॉ. ए.के.शुक्ला, वैज्ञानिक 'एफ' (भूकम्प अनुभाग)।
2. श्री आर.बी.वर्मा, निदेशक (उपग्रह मौसम प्रभाग)।
3. श्री यू.पी. सिंह, निदेशक (प्रकाशन अनुभाग)।



इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित प्रतियोगी विजयी रहे :-

- प्रथम - श्री सत्यनारायण ठाकुर, स.मौ.वि.॥, (मौविउमनि (उ.वा.उ.) नई दिल्ली)।
- द्वितीय - श्रीमती सुषमा सिंह, वैज्ञानिक सहायक (आर.टी.एच.यूनिट)।
- तृतीय - श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक सहायक, मौविउमनि (उवाउ) नई दिल्ली)।
- प्रोत्साहन -। श्री बिक्रम सेन, सहायक मौसम विज्ञानी-॥, (राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केंद्र)।
- प्रोत्साहन -॥ श्री सुभाष चंद्र शर्मा, सहायक मौसम विज्ञानी-॥, (प्रकाशन अनुभाग)।

5. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता:- विषय उत्तराखंड त्रासदी-मानवनिर्मित या प्राकृतिक

यह प्रतियोगिता दिनांक 06.09.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 18 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता की मूल्यांकन समिति के सदस्यों का विवरण इस प्रकार है :-

1. श्री सूर्य बली, वैज्ञानिक 'एफ' (केंद्रीय क्रय एकक) ।
2. श्री रविन्द्र विशन ग्रुप कैप्टन (प्रा.मौ.केंद्र,नई दिल्ली) ।
3. श्री एस.बी.त्यागी, वैज्ञानिक 'ई' (जल मौसम प्रभाग) ।

इस प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं :-

- प्रथम - श्री संजय अग्रवाल, वैज्ञानिक सहायक (उपग्रह मौसम प्रभाग) ।
 द्वितीय - श्री सत्यनारायण ठाकुर, स.मौ.वि.॥, (मौविउमनि (उ.वा.उ.) नई दिल्ली) ।
 तृतीय - श्रीमती नीलम, वैज्ञानिक सहायक, (जल मौसम प्रभाग) ।
 प्रोत्साहन -। श्री रामहरि शर्मा, वैज्ञानिक सहायक, (राष्ट्रीय ओज़ोन केंद्र) ।
 प्रोत्साहन -॥ श्री भूपेन्द्र सिंह रावत, मैकेनिक (मौविउमनि (उ.वा.उ.) नई दिल्ली) ।

6. हिंदी स्लोगन एवं कार्टून प्रतियोगिता:- विषय:- 'मौसम पूर्वानुमान के बारे में आम आदमी की अवधारणा'

इन प्रतियोगिताओं में कुल 53 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकनकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं-

1. डॉ. एस.के. पेशिन, वैज्ञानिक 'एफ' (ई.एम.आर.सी.) ।
2. श्री गजेन्द्र कुमार, निदेशक, (आयोजना अनुभाग) ।
3. डॉ. के.के.सिंह, प्रमुख, कृषि मौसम विज्ञान ।

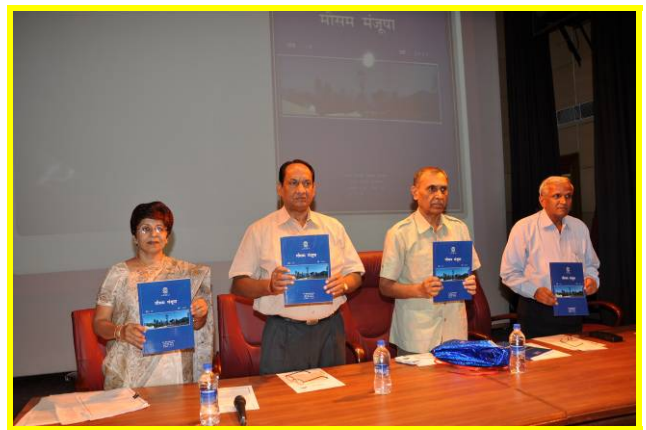
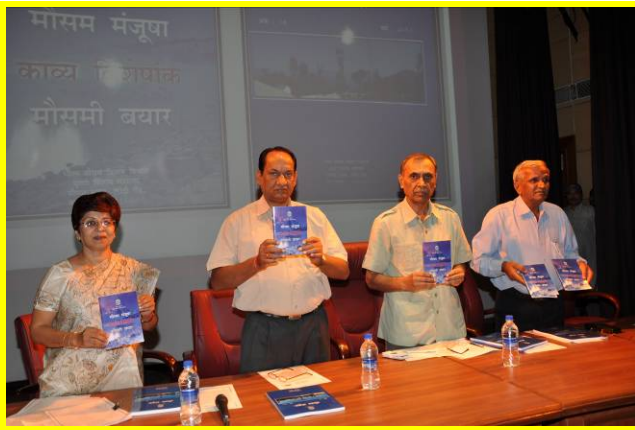
इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ स्लोगन श्री रामहरि शर्मा, वैज्ञानिक सहायक, (राष्ट्रीय ओज़ोन केंद्र) का रहा । हिंदी कार्टून प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ कार्टून श्री प्रवीण कुमार घिल्डियाल, वैज्ञानिक सहायक, जल मौसम अनुभाग का रहा ।

7. हिंदी दिवस समारोह

यह समारोह 16 सितम्बर 2013 को फूलों से सुसज्जित वृष्टि सभागार में आयोजित किया गया । समारोह की अध्यक्षता मौसम विज्ञान के महानिदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड ने की । समारोह में सर्वप्रथम सुश्री रेवा शर्मा, ने अध्यक्ष महोदय तथा सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं सभागार में उपस्थित सभी कर्मिकों का स्वागत किया ।



समारोह का शुभारम्भ महानिदेशक महोदय डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़, डॉ.एल.आर.मीणा, वैज्ञानिक 'एफ' (आई.एस.एस.डी.), श्री ए.के. शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' (उपग्रह मौसम) और डॉ ओ.पी.सिंह, वैज्ञानिक 'एफ' (प्रा.मौ.केंद्र, नई दिल्ली) द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया एवं साथ ही विभागीय कलाकारों ने श्री अशोक कुमार द्वारा रचित सरस्वती वंदना का गायन किया । सरस्वती वंदना के उपरांत डॉ.एल.आर.मीणा, वैज्ञानिक 'एफ' (आई. एस. एस. डी.) ने अध्यक्ष महोदय डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़, का स्वागत करते हुए भाषण दिया । हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री सुशील शिंदे द्वारा भेजे गए संदेश को सुश्री रेवा शर्मा ने सभागार में पढ़कर सुनाया और हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दी । इसके बाद विभागीय हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम-मंजूषा' के 18 वें अंक और पहले काव्य विशेषांक 'मौसमी-बयार' का महानिदेशक महोदय द्वारा विमोचन किया गया ।



वर्ष 2012-2013 में हिंदी में सबसे अधिक पत्राचार करने के लिए मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक, प्रादेशिक मौसम केंद्र नई को राजभाषा चल-शील्ड प्रदान की गई । डॉ. ओ.पी.सिंह मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक, प्रादेशिक मौसम केंद्र, नई दिल्ली को महानिदेशक महोदय ने राजभाषा चल-शील्ड प्रदान की । हिंदी पखवाड़ा 2013 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए । अखिल भारतीय विभागीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्र दिए गए ।

प्रतियोगिताओं के मूल्यांकनकर्ताओं को महानिदेशक महोदय ने स्मृति चिह्न भेंट किए ।

तभी अचानक सभागार बादलों की गरजना से गूंज उठा, तेज हवाएं चलने लगी, दिन में अंधेरा जैसे हो गया बिजली की चमक और मूसलाधार वर्षा होने लगी । इन सबका मंच पर लगे हुए स्क्रीन पर इतना जीवंत प्रभाव था कि श्री कालवे और श्री विक्रम सेन जी ने महानिदेशक महोदय एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को छाते में घनघोर बारिश से सुरक्षित निकालकर श्रोताओं के बीच ले आए। श्री कुंवर अजय सिंह द्वारा तैयार किया गया स्क्रीन पर यह दृश्य सभागार में इतना सजीव हो उठा था कि पूरा सभागार गगनभेदी बादलों की गर्जना के साथ साथ श्रोताओं की तालियों से गूंज उठा और फिर रुकती थमती सी वर्षा की बूंदों में सुश्री रेवा शर्मा ने मंच पर प्रवेश किया और साथ ही बारिश से बचती बचाती आती सरिता जोशी ने वर्षा पर, मेघ पर कविता की पंक्तियां पढ़कर कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए ।



श्रीमती एम.अनुराधा से ऐसी बारिश के होते हुए भी हिंदी दिवस मनाने का कार्यक्रम आरम्भ करने का अनुरोध किया और इसी के साथ श्री बिक्रम सेन, सहायक मौसम विज्ञानी द्वारा रचित गीत “आओ हम सब मिलकर हिंदी दिवस मनाएं” हॉल में कोरस स्वर में गूंजने लगा ।

इस सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत विभाग के कलाकारों द्वारा गीत ‘आओ हम सब मिलकर हिंदी दिवस मनाएं’ प्रस्तुत किया । बाल कलाकारों द्वारा गणपति स्तुति ‘एकदंताय वक्रतुंडाय’ मनोहर नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया गया । स्क्रीन पर गणपति भगवान का मनोहर चित्र सकारात्मक ऊर्जा बिखेर रहा था । इसके बाद ‘देश भक्ति गीत ‘हे जन्मभूमि भारत’ पर एक गीत प्रस्तुत किया गया ।



हिंदी साहित्यकार उपेन्द्रनाथ अशक का नाटक 'जोंक' का मंचन किया गया। श्री एम. आर. कालवे और आदित्य कालवे ने नज्म 'मौसम आएंगे जाएंगे' गाई। जिसमें बारिश, सर्दी और गर्मी के मौसम का सुन्दर वर्णन किया गया। हास्य झलकी 'आधुनिक शास्त्रार्थ' का मंचन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के इस रंगारंग प्रोग्राम के अंत में समूह गीत 'घिर घिर आई रे बदरिया' का सभी कलाकारों द्वारा सामूहिक रूप से मंचन किया गया। उपर्युक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम का मंच संचालन श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी, श्रीमती एम.अनुराधा, वरिष्ठ अनुवादक और श्री बीरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ अनुवादक ने किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के संचालन समिति के सदस्य थे:-

श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी, श्री एम.आर. कालवे, वैज्ञानिक सहायक, श्री अशोक कश्यप, वैज्ञानिक सहायक और श्रीमती पूनम सिंह वैज्ञानिक सहायक।

डॉ. एल.आर.मीणा, वैज्ञानिक 'एफ' (आई.एस.एस.डी.) द्वारा कलाकारों एवं बाल कलाकारों को पुरस्कार प्रदान किए गए।



अध्यक्ष महोदय डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस के आयोजन का मुख्य उद्देश्य सरकारी कार्य में हिंदी को बढ़ावा देना है। यद्यपि हमारे विभाग में वैज्ञानिक और तकनीकी तरह का कार्य अधिक होता है लेकिन प्रतिदिन के कार्यालय के कार्य में हम सभी अधिकतर विचार विमर्श हिंदी में ही करते हैं। हमारे विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को फाइलों पर हिंदी में लिखने का प्रयास करना चाहिए। अध्यक्ष महोदय ने विभाग के सभी कर्मिकों को कार्यालय का कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करने की सलाह दी तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास करने का अनुरोध किया एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान देने पर भी जोर दिया।

अंत में सुश्री रेवा शर्मा ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। समारोह के समापन पर वृष्टि सभागार राष्ट्रीय गान से गूंज उठा। वातावरण संगीतमय, राजभाषा के प्रति सकारात्मक तरंगों से तरंगित रहा।

विभिन्न उपकार्यालयों में हिंदी दिवस/ हिंदी पखवाड़ा- 2013 का समारोहपूर्वक आयोजन – रिपोर्ट

संकलन-श्री प्रमोद कुमार

सहायक

हिंदी अनुभाग

प्रादेशिक मौसम केंद्र, गुवाहाटी में दिनांक 02.09.2013 से 13.09.2013 तक हिंदी पखवाड़ा/ हिंदी दिवस 2013 समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रा.मौ.केंद्र, गुवाहाटी के उपमहानिदेशक की अध्यक्षता में इस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. डी.के.मेधी, हिंदी विभागाध्यक्ष, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी और विशिष्ट अतिथि डॉ. इन्द्रजीत सिंह, प्रधानाचार्य, केंद्रीय विद्यालय, बोरझार, गुवाहाटी को आमंत्रित किया गया।



दिनांक 02.09.2013 से 04.09.2013 तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान नीचे लिखी छह प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

क्र.सं. प्रतियोगिता का नाम

प्रतियोगिता की तिथि

- | | |
|-------------------------------|------------|
| 1. श्रुतलेख प्रतियोगिता | 05.09.2013 |
| 2. सुलेख प्रतियोगिता | 06.09.2013 |
| 3. निबंध लेखन प्रतियोगिता | 09.09.2013 |
| 4. वाद-विवाद प्रतियोगिता | 10.09.2013 |
| 5. तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता | 11.09.2013 |
| 6. कविता पाठ प्रतियोगिता | 12.09.2013 |



प्रा.मौ.केंद्र, गुवाहाटी में दिनांक 13.09.2013 को समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रा. मौ. केंद्र, गुवाहाटी के उपमहानिदेशक द्वारा समारोह समापन के दौरान उक्त प्रतियोगिताओं के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कारों हेतु क्रमशः 700/-रु., 600/-रु., 500/-रु. एवं 50/-रु. की राशि के 20 प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए।

प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2013 समारोहपूर्वक मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें निम्नलिखित कार्मिकों ने भाग लिया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, स्वरचित हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई।

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री रास बिहारी बनर्जी, सहायक मौसम विज्ञानी-॥
- द्वितीय - श्री विपिन कुमार देव, उच्च श्रेणी लिपिक
- तृतीय - श्री शुभेन्दु कर्मकार, वैज्ञानिक सहायक
- प्रोत्साहन - श्रीमती कृतिदीपा बनर्जी, वैज्ञानिक सहायक

2. हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री विपिन कुमार देव, उच्च श्रेणी लिपिक
- द्वितीय - श्री शुभेन्दु कर्मकार, वैज्ञानिक सहायक
- तृतीय - श्री सुशांत साहा, उच्च श्रेणी लिपिक
- प्रोत्साहन - श्रीमती मोनिका कर, रेडियो मैकेनीक

3. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम - श्रीमती मोनिका कर, रेडियो मैकेनीक

द्वितीय - श्री शुभेन्दु कर्मकार, वैज्ञानिक सहायक

तृतीय - श्री देवव्रत बंधोपाध्याय, वैज्ञानिक सहायक

प्रोत्साहन -। श्री प्रणव कुमार मुखोपाध्याय, सहायक मौसम विज्ञानी-।।

4. हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम - श्री शंकर कुमार साहा, क्लीनर

द्वितीय - श्री सिद्धार्थ चक्रवर्ती, मौसम विज्ञानी

तृतीय - श्री विपिन कुमार देव, उच्च श्रेणी लिपिक

प्रोत्साहन -। मोहम्मद असलम, चपरासी



प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस समारोह मनाया गया । श्रीमती सुमना चटर्जी, वैज्ञानिक सहायक द्वारा सरस्वती वंदना एवं मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम आरंभ किया गया । श्री देवेन्द्र प्रधान, मौविउमनि तथा उनकी सुपत्री सुश्री प्रतीक्षा प्रधान ने मंगलगान भी प्रस्तुत किया । हिंदी पखवाड़ा 2013 के दौरान माननीय गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे का संदेश श्री नीलोत्पल चतुर्वेदी, कनिष्ठ अनुवादक द्वारा पढ़कर सुनाया गया । हिंदी पखवाड़ा 2013 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

प्रादेशिक मौसम केंद्र, मुम्बई, मौसम कार्यालय सांताक्रुझ में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 13.09.2013 से 30.09.2013 तक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता, गीत-गायन, अंताक्षरी एवं तात्कालिक भाषण आयोजित की गई ।

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री के.एस.होसालीकर, उपमहानिदेशक
द्वितीय - श्री महादेव देशमुख
तृतीय - श्री एस.पी.सिंह, वैज्ञानिक सहायक

2. सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री श्रीमती गीता बचवानी, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय - श्री श्रीमती प्रतिभा बने, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय - श्रीमती शीका अब्राहम, वैज्ञानिक सहायक

3. हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री एन.एम.तिवरेकर, मैकेनिक
द्वितीय - श्री विनायक पटवर्धन, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय - श्री आर.बी.एस.नारायण, वैज्ञानिक सहायक

4. हिंदी टंकण प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री शेखर आग्ने, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय - श्री प्रणय राजपूत, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय - श्री राजीव कृष्णमूर्ति, वैज्ञानिक सहायक

5. हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्रीमती तृप्ती डोंगरे, प्रशा. अधिकारी
द्वितीय - श्री आर.बी.एस. नारायण, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय - श्रीमती मनाली परब, वैज्ञानिक सहायक

6. गीत-गायन :-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री एम.शेख, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय - श्रीमती सीमा विश्वकर्मा, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय - श्री राजीव कृष्णमूर्ति, वैज्ञानिक सहायक

7. हिंदी तात्कालिक भाषण :-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री संजय अढागले, प्रशा. सहायक
 द्वितीय - श्री एस.जी.कांबले, वैज्ञानिक सहायक
 तृतीय - श्री एस.एन.सातव, मैक

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री के.एस.होसालीकर जी, मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में केंद्र में हुई हिंदी की प्रगति, माननीय संसदीय राजभाषा द्वारा निरीक्षण के दौरान किए गए प्रशंसा का उल्लेख श्रोतागण के समक्ष रखें तथा हिंदी में हुई प्रगति की सराहना की। वर्ष 2012-13 में हिंदी की गतिविधियों से संबंधित एक पत्रिका का विमोचन अध्यक्ष महोदय के कर-कमलों द्वारा किया गया ।

वर्ष 2012-13 के दौरान केंद्र में हिंदी की प्रगति के लिए आशीवार्द संस्था, मुम्बई ने दिनांक 27.09.2013 को दूरदर्शन केंद्र, मुम्बई में आयोजित कार्यक्रम में श्री के.एस.होसालीकर जी, मौसम केंद्र के उपमहानिदेशक को इस केंद्र के लिए विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया । केंद्र में कार्यरत श्रीमती शुभांगी भुते,मौ.वि.। को राजभाषा सम्मान पुरस्कार तथा मुख्यालय के हिंदी पत्रिका मौसम मंजूषा के लिए सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी को भी पुरस्कृत किया गया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मुम्बई पुलिस के कमिशनर माननीय सत्यपाल सिंह जी ने की ।

मौविअमनि (अनु.) पुणे में हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2013 समारोहपूर्वक मनाया गया ।



खगोल विज्ञान केंद्र, कोलकाता में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2013 का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध, टिप्पण मसौदा लेखन, कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें विभिन्न कार्मिकों ने भाग लिया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता और हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

खगोल विज्ञान केंद्र, कोलकाता में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री देवेन्द्र प्रधान, वैज्ञानिक ई, प्रा.मौ.केंद्र, कोलकाता अतिथि के रूप में उपस्थित रहे । प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

मौसम केंद्र, जयपुर में दिनांक 06.09.2013 से 19.09.2013 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2013 मनाया गया । इस समारोह के आयोजन पर मुख्य अतिथि श्री शिव शंकर सिंह, निदेशक एवं वैज्ञानिक 'एफ' मौसम केंद्र, जयपुर की अध्यक्षता में समापन समारोह का आयोजन किया गया । हिंदी दिवस/ हिंदी पखवाड़ा-2013 के दौरान हिंदी टिप्पण/मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

1. हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री देवदास मीणा
द्वितीय	श्री अजय भारद्वाज
तृतीय	श्री मुकेश चौहान
प्रोत्साहन	श्री आर.सी.गुप्ता

2. हिंदी निबंध प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री मुकेश चौहान
द्वितीय	श्री अजय भारद्वाज
तृतीय	श्री आर.सी.गुप्ता
प्रोत्साहन	श्री अशोक कुमार शर्मा

3. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता :-

इस प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं :-

प्रथम	श्री पवन वशिष्ठ
द्वितीय	श्री आर.सी.गुप्ता
तृतीय	श्री मनोज शर्मा
प्रोत्साहन	श्री विष्णु कुमार

4. हिंदी टंकण प्रतियोगिता :-

इस प्रतियोगिता में नीचे लिखे प्रतियोगी विजयी रहे :-

प्रथम	श्री राजेन्द्र कुमार
द्वितीय	श्री महेन्द्र सिंह
तृतीय	श्री ओम प्रकाश कुमावत
प्रोत्साहन	श्री अजय भारद्वाज

5. स्वरचित हिंदी कविता पाठ : -

इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित प्रतियोगी विजयी रहे :-

प्रथम	श्री मुकेश चौहान
द्वितीय	श्री महेन्द्र सिंह
तृतीय	श्रीमती लता अय्यर
प्रोत्साहन	श्री अजय भारद्वाज

मौसम केंद्र, जयपुर में दिनांक 19.09.2013 को समापन समारोह आयोजित किया गया । समापन समारोह के दौरान कर्मिकों ने हिंदी से संबंधित गीत, कविता आदि प्रस्तुत किए । उसके उपरांत प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि महोदय द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए ।

मौसम केंद्र, ग्वालियर में दिनांक 01.09.2013 से 14.09.2013 तक हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमें हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, शुद्ध लेखन, मसौदा लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए ।

मौसम केंद्र, ग्वालियर में हिंदी दिवस दिनांक 14 सितम्बर, 2013 को मनाया गया जिसके दौरान श्री रामस्नेही साहू साहित्यकार के कर कमलों द्वारा चारों प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं दो प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

हाईड्रोजन फैक्ट्री आगरा में दिनांक 01.09.2013 से 14.09.2013 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2013 मनाया गया जिसकी अध्यक्षता कार्यवाहक प्रभारी अधिकारी श्री प्रकाश चन्द्र, सहायक मौसम विज्ञानी-1 द्वारा की गई जिसमें दिनांक 10.09.2013 को हिंदी टंकण प्रतियोगिता, दिनांक 11.09.2013 को हिंदी चित्रकला प्रतियोगिता, दिनांक 13.09.2013 को हिंदी अन्ताक्षरी प्रतियोगिता, दिनांक 14.09.2013 को हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता और दिनांक 14.09.2013 को हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

1. हिंदी टंकण प्रतियोगिता :-

इस प्रतियोगिता में नीचे लिखे प्रतियोगी विजयी रहे :-

प्रथम	श्री अरूण शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक
द्वितीय	श्री प्रेम सिंह, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री तारा चन्द राठौर, वैज्ञानिक सहायक
प्रोत्साहन	श्री जवाहर लाल, मौसम परिचर

2. हिंदी चित्रकला प्रतियोगिता :-

इस प्रतियोगिता में नीचे लिखे प्रतियोगी विजयी रहे :-

प्रथम	श्री सलाहउद्दीन, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री सुरेश चन्द, मैकेनिक ग्रेड-I
तृतीय	श्री राज कुमार, सफाई वाला
प्रोत्साहन-I	श्री पूरन चन्द, मौसम परिचर
प्रोत्साहन-II	श्री राजेन्द्र कुमार, मौसम परिचर
प्रोत्साहन-III	श्री राम देव, मजदूर

3. हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता :-

इस प्रतियोगिता में नीचे लिखे प्रतियोगी विजयी रहे :-

प्रथम	श्री अरविन्द कुमार वर्मा, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री बैजनाथ, सफाई वाला
तृतीय	श्री दीवान सिंह, मौसम विज्ञानी
प्रोत्साहन-I	श्री कुशलपाल शर्मा, मैकेनिक ग्रेड-I
प्रोत्साहन-II	श्री मुंशी राम, मौसम विज्ञानी

4. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता :-

इस प्रतियोगिता में नीचे लिखे प्रतियोगी विजयी रहे :-

प्रथम	श्री सुरेश चन्द्रा, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री पप्पू सिंह, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री महेश चन्द, वैज्ञानिक सहायक
प्रोत्साहन	श्री हरी चन्द, मौसम परिचर

5. हिंदी अन्ताक्षरी प्रतियोगिता :-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री शिवनाथ गोयल, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री अशोक कौशिक, मैकेनिक ग्रेड-।
विशेष	श्री प्रकाश चन्द्र, सहायक मौसम विज्ञानी-।

हा.फै.आगरा में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2013 पर उक्त पाँचों प्रतियोगिताओं के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कारों हेतु क्रमशः 500/-रू., 400/-रू., 300/-रू. एवं 200/-रू. की राशि के सात प्रोत्साहन पुरस्कार तथा 650/-रू., का एक विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया ।

मौसम केंद्र, रांची : में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2013 समारोहपूर्वक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री ज्ञानेन्द्र कुमार मोहन्ती, वैज्ञानिक 'ई' ने की । हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी भाषण प्रतियोगिता ,हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता और हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

1. हिंदी भाषण प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री ओस्कर कूजूर, ए.ओ.-।।।
द्वितीय	श्री उपेन्द्र श्रीवास्तव,वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री कुमार रविरतन सिंह,वैज्ञानिक सहायक

2. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री लक्ष्मी कांत गिरि,सहायक मौसम विज्ञानी-।
द्वितीय	श्री के.आर.आर.सिंह,वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री संजय कुमार सिंह,वैज्ञानिक सहायक

3. हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता:-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री रतन कुमार महत्तो, सहायक मौसम विज्ञानी-।।
द्वितीय	श्री लक्ष्मी कांत गिरि,सहायक मौसम विज्ञानी-।
तृतीय	श्री उपेन्द्र श्रीवास्तव,वैज्ञानिक सहायक

मौसम केंद्र, रांची में दिनांक 16.09.2013 को समापन समारोह मनाया गया । इस आयोजन के दौरान इन तीनों प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री रतन कुमार महत्तो, सहायक मौसम विज्ञानी-।। द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए ।

मौसम केंद्र, रायपुर में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 02.09.2013 से 16.09.2013 तक समारोहपूर्वक मनाया गया । इस समारोह के आयोजन की अध्यक्षता वैज्ञानिक 'ई', श्री एम.एल.साहू ने की । हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता और हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । मौसम केंद्र, रायपुर में दिनांक 12.09.2013 से 13.09.2013 तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । दिनांक 16.09.2013 को श्री प्रोफेसर दीनानाथ पांडे सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य मुख्य अतिथि की उपस्थिति में समापन समारोह मनाया गया । विजेताओं को पुरस्कार वितरण किए गए ।

मौसम केंद्र, देहरादून में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 01.09.2013 से 14.09.2013 तक समारोहपूर्वक मनाया गया । इस समारोह के अवसर पर श्री अशोक कुमार, वै.'जी', वाडिया हिमालयन भू-विज्ञान संस्थान, देहरादून को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया तथा समारोह में श्री ओ.पी. त्रिपाठी, निदेशक, उत्तराखंड एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र एवं सुश्री चरणजीत कौर, पुस्तकालय अध्यक्ष, जी एण्ड आर.बी., भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून भी आमंत्रित किए गए । हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 05.09.2013 को हिंदी निबंध, दिनांक 13.09.2013 को हिंदी वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

मौसम केंद्र, देहरादून में हिंदी दिवस समापन समारोह मनाया गया । समारोह समापन के दौरान मुख्य अतिथि ने व्याख्यान दिया । उसके उपरांत प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार मुख्य अतिथि की उपस्थिति में प्रदान किए गए ।

मौसम केंद्र, भोपाल में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 13.09.2013 से 30.09.2013 तक समारोहपूर्वक मनाया गया ।

1. **स्वरचित हिंदी कविता पाठ** : - यह प्रतियोगिता दिनांक 13.09.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 10 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकन समिति के सदस्य रहे :-

1. श्री एम.के. रैक्वापर्ण, सहायक मौसम विज्ञानी-।
2. श्री डी.के.दास, सहायक मौसम विज्ञानी-।
3. श्री ए.के.शुक्ला सहायक मौसम विज्ञानी-।।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री तुलसी राम, मौसम परिचर
द्वितीय	श्री अभिजीत चक्रवर्ती, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्रीमती खुशनुमा हुसैन, वैज्ञानिक सहायक

2. हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता : - यह प्रतियोगिता दिनांक 16.09.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 16 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकन समिति के सदस्य रहे :-

1. डॉ. एम.के.पी दुबे, निदेशक
2. श्री एम.के.रैक्वापर्ण, सहायक मौसम विज्ञानी-।
3. श्री डी.के.दास, सहायक मौसम विज्ञानी-।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री ए.के.शुक्ला, स.मौ.वि.।। एवं श्री योगेश श्रीवास्तव, स.मौ.वि.।।
द्वितीय	श्री के.के.देवांगन स.मौ.वि.।। एवं श्री पी.के.,साहा वै.स.

3. हिंदी टंकण प्रतियोगिता : - यह प्रतियोगिता दिनांक 18.09.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 07 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकन समिति के सदस्य:-श्री डी.के.दास, सहायक मौसम विज्ञानी-।। रहे ।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्रीमती स्वाति दुबे, उच्च श्रेणी लिपिक
द्वितीय	श्रीमती सुरभी पुरोहित, उच्च श्रेणी लिपिक
तृतीय	श्री व्ही. एस.यादव, वैज्ञानिक सहायक

4. हिंदी निबंध प्रतियोगिता : - यह प्रतियोगिता दिनांक 19.09.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 06 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकन समिति के सदस्य रहे :-श्री के.के.देवांगन, सहायक मौसम विज्ञानी-।।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्रीमती सुरभी पुरोहित, उच्च श्रेणी लिपिक
द्वितीय	श्री आर.के.सिंह, सहायक
तृतीय	श्री अमितेश यादव, वैज्ञानिक सहायक

5. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता : - यह प्रतियोगिता दिनांक 23.09.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 16 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकन

समिति के सदस्य रहे :-

1. श्री डॉ.डी.पी.दुबे, निदेशक
2. श्री एम.के. रैक्वापर्ण, सहा.मौ.वि.।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री मोहम्मद रफीक, मौसम परिचर
द्वितीय	श्री जी.डी. मिश्रा, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री आर.के. अग्रवाल, वैज्ञानिक सहायक

6. हिंदी शुद्धलेखन (टिप्पणमसौदा) प्रतियोगिता : - यह प्रतियोगिता दिनांक 25.09.2013 को आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में 12 प्रतियोगियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता के मूल्यांकन समिति के सदस्य रहे :-श्री डी.के. दास, सहायक मौसम विज्ञानी-।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री एच.एस.पाण्डेय, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	कु. अपूर्वा सिंहल, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री व्ही. एस. यादव, वैज्ञानिक सहा

सभी प्रतियोगिताओं में प्रोत्साहन पुरस्कार इस प्रकार रहे :-

श्री ई.आर.चिन्ताल्लू,स.मौ.वि.।, श्री यू.के.पाण्डेय, स.मौ.वि.।।, श्री एस.के.नायक,स.मौ.वि.।।, श्री एस.एन.साहू,वै.स., श्री बी.डी.अहिरवार,वै.स., श्री सुमित परोहा, वै.स., श्री लक्ष्मी नारायण, मौ.परि., श्री ए.के. उडके, मौ.परि., श्रीमती पी.सी.लडियाभृत्य, श्री नौशाद अहमद मंसूरी,एस. आर.एफ. । मौसम केंद्र, भोपाल में दिनांक 26.09.2013 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

मौसम केंद्र, भोपाल में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2013 समापन समारोह मनाया गया । समापन समारोह के दौरान मुख्य अतिथि डॉ पी.के. नंदनकर उपमहानिदेशक एवं डॉ. डी.पी.दुबे, निदेशक की उपस्थिति में सर्व प्रथम दीप प्रज्ज्वलन किया गया । स्वागत भाषण डॉ.जी.डी.मिश्रा वै.स. द्वारा पढ़ा गया । कार्यक्रम का संचालन श्री वाहिद खान वै.स. द्वारा एवं धन्यवाद भाषण श्री डी.के.दास स.मौ.वि.-। हिंदी संपर्क अधिकारी द्वारा किया गया । मुख्य अतिथि के उद्बोधन के बाद पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किए गए ।

मौसम केंद्र, अहमदाबाद में दिनांक 13.09.2013 से 27.09.2013 तक हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमें हिंदी निबंध प्रतियोगिता और गीत-गायन प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण/मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी स्वरचित कविता पाठ

प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । दिनांक 27.09.2013 को समापन समारोह मनाया गया जिसके दौरान विजेताओं को प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं दो प्रतिभागियों को उनके सराहनीय प्रयासों के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए । हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया।

मौसम केंद्र, पटना में हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2013 मनाया गया ।

मौसम केंद्र,लखनऊ में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 16.09.2013 से 30.09.2013 तक समारोहपूर्वक मनाया गया ।

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता:- (दिनांक 17.09.2013)

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्रीमती ऋतु बोस, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय- श्री डी.डी.आर्या, सहा.मौ.वि.-।।
तृतीय - श्री अनवार हुसैन वारसी, वैज्ञानिक सहायक

2. समूह 'ग' हेतु हिंदी निबंध प्रतियोगिता:- (दिनांक 19.09.2013)

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री दिनेश कुमार, मौ.परि.
द्वितीय- श्री श्यामा कुमार, मौ.परि.
तृतीय - श्री नन्द किशोर, फराश

3. हिंदी टंकण प्रतियोगिता :- (दिनांक 20.09.2013)

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम - श्री काली प्रसाद, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय - श्रीमती अंजुलता विक्रम शर्मा,वैज्ञानिक सहायक
तृतीय - श्री सी.पी.वर्मा, वैज्ञानिक सहायक

4. हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता:- (दिनांक 23.09.2013)

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

- प्रथम श्री आर.सी.द्विवेदी, उ.श्रे.लि.
द्वितीय श्री पंकज पाण्डेय, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय श्री महेन्द्र सिंह, स.मौ.वि.-।।

5. समूह 'ग' हेतु सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता: - (दिनांक 24.09.2013)

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री एस.के.पाल, मौ.परि.
द्वितीय	श्री राजेश कुमार सिंह, मौ.परि.
तृतीय	श्री श्यामा कुमार, मौ.परि.

6. हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता : - (दिनांक 25.09.2013)

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्रीमती अंजुलता विक्रम शर्मा, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री विजय हेमकर, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री राम बचन, सहा.मौ.वि.-।

7. हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता :- (दिनांक 26.09.2013)

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री शान्ती स्वरूप,, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री आर.सी.द्विवेदी, उ.श्रे.लि.
तृतीय	श्री संजीव चौहान, वैज्ञानिक सहायक

8. हिंदी स्लोगन/कार्टून प्रतियोगिता :-

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

1. श्री अनवर हुसैन वारसी, वैज्ञानिक सहायक
2. श्री सी.पी.वर्मा, वैज्ञानिक सहायक

मौसम केंद्र, लखनऊ में 16 सितम्बर, 2013 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया । इस समारोह का शुभारम्भ कार्यालय के प्रभारी निदेशक एवं वैज्ञानिक 'ई' श्री जे.पी.गुप्ता की उपस्थिति में सर्वप्रथम दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया ।



समारोह का शुभारम्भ वन्दना के साथ श्री पंकज पाण्डेय के द्वारा किया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किए गए ।

मौसम कार्यालय, पंतनगर में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 14.09.2013 को मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा-2013 के दौरान हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, शुद्ध लेखन, मसौदा लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी अधिकारी ने की ।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :-

प्रथम	श्री दीपेन्द्र बहादुर, वैज्ञानिक सहायक
द्वितीय	श्री पूरन चंद्र, मौसम परिचर
तृतीय	श्री अमित शर्मा, मौसम परिचर

मौसम कार्यालय, पंतनगर में दिनांक 14 सितम्बर 2013 को समापन समारोह मनाया गया जिसके दौरान तीनों प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री संजय सक्सेना, प्रभारी अधिकारी द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

मौसम कार्यालय पालम में दिनांक 16.09.2013 से 30.09.2013 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2013 कार्यालय के प्रभारी डॉ. रा.कु. जैनामणी, प्र.वै.'ई' की अध्यक्षता में मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी टिप्पण/मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता दिनांक 20.09.2013 को आयोजित की गई जिसका विषय: “प्राकृतिक आपदा प्रबंधन में भारत कितना सक्षम” । हिंदी निबंध प्रतियोगिता के मूल्यांकन के लिए गठित की गई समिति द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार हिंदी निबंध प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है :-

प्रथम	श्री ए.के.सेहगल, स.मौ.वि.-II
द्वितीय	श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक सहायक
तृतीय	श्री समय सिंह मीणा, स.मौ.वि.-II

मौसम कार्यालय पालम में हिंदी पखवाड़ा 2013 के दौरान आयोजित की गई हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन, हिंदी वाद-विवाद, स्वरचित हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताओं के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रभारी निदेशक द्वारा प्रदान किए गए ।

मौसम कार्यालय, ग्वालियर में दिनांक 01.09.2013 से 14.09.2013 तक हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमें हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी शुद्ध लेखन, मसौदा लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । दिनांक 14.09.2013 को समापन समारोह मनाया गया जिसके दौरान विजेताओं को प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं दो प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

केंद्रीय भूकंप वेधशाला शिलांग में हिंदी दिवस दिनांक 23.09.2013 को समारोहपूर्वक मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, आकस्मिक भाषण, प्रश्नोत्तरी, अंग्रेजी से हिंदी शब्द प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । दिनांक 23.09.2013 को समापन समारोह के दौरान पांचों प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार मुख्य अतिथि श्री महेश मिश्र, कुल प्रभारी अधिकारी, हिंदी शिक्षक प्रकल्प, निदेशालय जनगणना प्रचालन शिलांग द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एस.सी.लिंगदोह,वैज्ञानिक 'सी' ने की ।

पंडितजी (मदनमोन मालवीय) का अंग्रेजी भाषण चाँदी की तरह चमकता हुआ कहा जाता है, किन्तु उनका हिंदी भाषण इस तरह चमका है, जैसे मानसरोवर से निकलती हुई गंगा का प्रवाह सूर्य की किरणों से सोने की तरह चमकता है।

-महात्मा गाँधी

प्रादेशिक मौसम केन्द्र, गुवाहाटी द्वारा आयोजित हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी की रिपोर्ट

प्रादेशिक मौसम केन्द्र, गुवाहाटी में दिनांक 26.06.14 को “हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी” का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री श्याम लाल सिंह पूर्ति, उप निदेशक (पूर्वोत्तर), हिन्दी शिक्षण योजना, गुवाहाटी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने प्रादेशिक मौसम केन्द्र, गुवाहाटी को इस कार्यक्रम को आयोजित करने पर बधाई दी तथा हिन्दी में सुचारु ढंग से कार्य करने की सराहना की।



मुख्यालय, नई दिल्ली से आयीं सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने प्रादेशिक मौसम विज्ञान केंद्र, गुवाहाटी को हिन्दी में कार्य करने में हर संभव सहायता प्रदान करने का भरोसा दिलाया। उपमहानिदेशक श्री महेश कुमार गुप्ता ने सभी उपस्थित अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करने के लिए बधाई दी।



इसके बाद डॉ. संजय ओनील शॉ, वैज्ञानिक-डी/ निदेशक ने अतिथियों का परिचय कराया। इस अवसर पर विभिन्न स्कूलों के छात्रों के लिए हिन्दी में भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसका विषय था-‘मौसम विज्ञान की महत्ता’।

इसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया संत क्लैर्स स्कूल, एस. ओ. एस. रोड की सुश्री सुकन्या गोस्वामी, दूसरा स्थान प्राप्त किया केंद्रीय विद्यालय, बोरझर की सुश्री सौम्या तिवारी तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया संत जोसफ स्कूल, अज़रा की सुश्री बनश्री दास।



द्वितीय सत्र में डॉ. संजय ओनील शॉ, वैज्ञानिक-डी/ निदेशक ने 'मौसम विज्ञान की सेवाओं में हिंदी की महत्ता' विषय पर व्याख्यान दिया। भारत मौसम विज्ञान विभाग मुख्यालय नई दिल्ली की वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने "मौसम भविष्यवाणी से आर्थिक लाभ" विषय पर पावर प्वाइंट प्रदर्शन दिया। आमंत्रित अतिथियों में से श्री अजय नारायण, पी.जी.टी., केंद्रीय विद्यालय, बोरझर ने भी अपने भाषण में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए खुशी व्यक्त की। इसके बाद प्रादेशिक मौसम केन्द्र, गुवाहाटी के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भी मौसम विज्ञान सम्बंधी विभिन्न रोचक विषयों में हिन्दी में भाषण दिए।



प्रादेशिक मौसम विज्ञान केन्द्र, गुवाहाटी के कर्मचारियों तथा विभिन्न स्कूलों से आए छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया।



अंत में प्रादेशिक मौसम विज्ञान केन्द्र, गुवाहाटी के हिन्दी सम्पर्क अधिकारी श्री उत्पल कलिता ने सभी का धन्यवाद किया। इस तरह का कार्यक्रम हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उपयोगी साबित हुआ।

खास खबर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक

- दिनांक 24.10.2013 को आयोजित नराकास (दिल्ली मध्य) की वर्ष 2013 की दूसरी बैठक में वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा और श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी ने भाग लिया। इस अवसर पर 'मौसम मंजूषा' और 'मौसमी बयार' की प्रतियाँ समिति के अध्यक्ष आकाशवाणी के महानिदेशक श्री लीलाधर मंडलोई को भेंट की गईं।

मुख्यालय के कार्मिकों द्वारा राजभाषायी निरीक्षण

- वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा और हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने दिनांक 25.11.2013 से 29.11.2013 तक प्रादेशिक मौसम केंद्र - चेन्नै , डॉप्लर मौसम रेडार- चेन्नै, आर.एस आर डब्ल्यू चेन्नै और विमानन मौसम कार्यालय- चेन्नै का राजभाषायी निरीक्षण किया । श्रीमती सरिता जोशी ने प्रादेशिक मौसम केंद्र - चेन्नै में एलीमेंट्री प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थियों को कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य करने का प्रशिक्षण भी दिया।
- सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने दिनांक - 27-06-2014 को प्रादेशिक मौसम केंद्र - गुवाहाटी का राजभाषायी निरीक्षण किया और कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य करने के बारे में बताया ।

हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम मंजूषा ' का प्रकाशन

- विभागीय हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम मंजूषा ' के 18^{वें} अंक का प्रकाशन किया गया । 'मौसम मंजूषा ' के 18^{वें} अंक की प्रतियाँ लेखकों, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों, मंत्रालय, राजभाषा विभाग

व विभिन्न मंत्रालय/ विभागों के अधिकारियों ,कुछ सेवानिवृत्त अधिकारियों तथा दिल्ली और दिल्ली से बाहर के सभी उपकार्यालयों के प्रमुखों को भेजी गई ।

काव्य-विशेषांक 'मौसमी बयार'

- विभागीय हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम मंजूषा' के पहले काव्य विशेषांक 'मौसमी बयार' का प्रकाशन किया गया जिसमें विभाग के कार्मिकों की मौसम से जुड़ी कविताएँ शामिल की गईं। हिंदी दिवस समारोह के सुअवसर पर महानिदेशक महोदय द्वारा 'मौसमी बयार' का विमोचन किया गया।

राजभाषा बुलेटिन का प्रकाशन

- विभाग में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार और विभिन्न गतिविधियों से संबंधित समाचार बुलेटिन 'राजभाषा बुलेटिन' के अंक-02 का विमोचन दिनांक 07-08-2014 को मुख्यालय की राजभाषा कार्यालय समिति की 128वीं बैठक में महानिदेशक महोदय डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ द्वारा किया गया ।

'निबंध सागर' का प्रकाशन

- भारत मौसम विज्ञान विभाग की अखिल भारतीय विभागीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के अन्तर्गत वर्ष 2011 से 2013 तक के दौरान प्रथम तीन पुरस्कृत निबंधों को 'निबंध सागर-2014 अंक -02' में संकलित किया गया ।इसका विमोचन माननीय मंत्री महोदय द्वारा विभाग के 139^{वें} स्थापना दिवस के अवसर पर किया गया ।

उपकार्यालयों द्वारा निकाले गए हिंदी प्रकाशन

- प्रादेशिक मौसम केंद्र - मुम्बई द्वारा ऋतु -चक्र हिंदी गृह पत्रिका के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया गया ।
- प्रादेशिक मौसम केंद्र - चेन्नै द्वारा हिंदी गृह पत्रिका [पवन दूत] का अंक:5, वर्ष:2013 निकाला गया जिसका विमोचन महानिदेशक महोदय डॉ लक्ष्मण सिंह राठोड़ द्वारा किया गया।

व्याख्यान

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य डॉ. दुर्गादत्त ओझा का 'पर्यावरण में व्याप्त अदृश्य प्रदूषण' विषय पर दिनांक 17.12.2013 को वृष्टि सभागार में व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता विभाग के उपमहानिदेशक डॉ. एल. आर. मीणा ने की । हिंदी दिवस कार्यक्रम में पूर्ण निष्ठा और रुचि से उत्साहपूर्वक कार्य करने के लिए समिति के सदस्यों और अन्य कलाकारों व सहयोगियों को महानिदेशक महोदय द्वारा जारी किए गए प्रशंसा-पत्र हिंदी दिवस समारोह समिति के अध्यक्ष डॉ. एल. आर. मीणा द्वारा इस कार्यक्रम के दौरान प्रदान किए गए ।



- प्रादेशिक मौसम केंद्र नई दिल्ली द्वारा चलाए जा रहे मौसम प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 14.11.2013 ,06.02.2014 को इंटरमीडिएट प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थियों को और दिनांक 19.11.2013, 17.01.2014

को एलीमेंट्री प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थियों को तथा प्रादेशिक मौसम केंद्र-चेन्नै द्वारा चलाए जा रहे एलीमेंट्री मौसम प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 25.11.2013 को वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने 'राजभाषा हिंदी' विषय पर व्याख्यान दिया तथा हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने 'कम्प्यूटर और हिंदी - सुविधाएँ व उपयोग' विषय पर प्रेजेंटेशन दिया और कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य करना सिखाया ।

हिंदी संगोष्ठी / कार्यशाला

- प्रादेशिक मौसम केंद्र, चेन्नै में दिनांक 27 नवंबर 2013 को हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया । डॉ. वाई. ई. ए. राज, मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक ने हिंदी सेमिनार कार्यक्रम का उद्घाटन किया । चेन्नै के विभिन्न विद्यालयों से आए विद्यार्थियों ने प्रस्तुति दी। इस संगोष्ठी में मुख्यालय की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा और हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने भी भाग लिया ।
- मौसम कार्यालय सफदरजंग द्वारा दिनांक 28.03.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा, हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी और कनिष्ठ अनुवादक श्री बीरेन्द्र कुमार ने व्याख्यान/प्रेजेंटेशन दिए।
- विमानन मौसम कार्यालय, मोहनबाड़ी में दिनांक 18 जून 2014 को हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया । मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक, प्रादेशिक मौसम केंद्र - गुवाहाटी मुख्य अतिथि रहे। इसमें अधिकारियों ने व्याख्यान दिए और स्कूल के छात्रों के लिए निबंध और कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

- नराकास सचिव, प्रसार भारती नई दिल्ली के अनुरोध पर प्रस्तुति (इंडिया) प्रा. लिमिटेड द्वारा दिनांक 31 मई 2014 को आयोजित एक दिवसीय राजभाषा प्रशिक्षण शिविर में मुख्यालय की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा तथा हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने भाग लिया।
- भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आई आई टी एम) द्वारा 30-31 जुलाई 2014 को 'जलवायु परिवर्तन, मॉनसून परिवर्तिता एवं पूर्वानुमान तथा जलवायु सेवाएँ: वैज्ञानिक दृष्टिकोण' विषय पर एक राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में विभिन्न विभागों/संस्थानों के वैज्ञानिकों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। भारत मौसम विज्ञान विभाग की ओर से भी इस संगोष्ठी में वैज्ञानिकों ने भाग लिया और अपनी प्रस्तुतियाँ हिंदी माध्यम से प्रस्तुत की।

पूर्व-महानिदेशक ए.वी.एम. डॉ. अजित त्यागी ने "जलवायु सेवाओं के लिए फ्रेमवर्क पर पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन दिया। डॉ. जगदीश सिंह पूर्व-उपमहानिदेशक ने 'भारत में ताप लहरों की प्रचंडता', प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै के सहायक मौसम विज्ञानी श्री के.वी. बालसुब्रमनियण, चंदन सिंह अवर श्रेणी लिपिक ने 'दक्षिण पश्चिमी मॉनसून की स्थायी और अर्द्धस्थायी विशेषताएं', रामहरि शर्मा वैज्ञानिक सहायक ने 'उत्तरी भारत में वायुविलय के गुण धर्म', श्री राजेश कुमार ने 'वायुमंडलीय एवं महासागरीय परिसंचरण में दीर्घकालिक परिवर्तन' विषयों पर पोस्टर प्रेजेंटेशन दिए जिन्हें बहुत सराहा गया। इन्हें प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।

प्रशंसा-पत्र

- हिंदी दिवस समारोह 2013 के उपलक्ष्य में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में पूर्ण निष्ठा और रुचि से उत्साहपूर्वक कार्य करने के लिए समिति के सदस्यों और अन्य कलाकारों व सहयोगियों को महानिदेशक महोदय द्वारा प्रशंसा-पत्र जारी किए गए । ये प्रशंसा-पत्र हिंदी दिवस समारोह समिति के अध्यक्ष डॉ. एल. आर. मीणा द्वारा दिनांक 17.12.2013 को वृष्टि सभागार में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रदान किए गए ।
- मौसम-मंजूषा के काव्य विशेषांक 'मौसमी बयार' के रचयिताओं को महानिदेशक महोदय की ओर से प्रशंसा-पत्र जारी किए गए ।
- प्रादेशिक मौसम केंद्र, चेन्नै द्वारा 'मौसम विज्ञान के आयाम' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए डॉ. वाई.ई. ए. राज, उपमहानिदेशक और श्री कु.वै. बालसुब्रमणियन, सहायक मौसम विज्ञानी को महानिदेशक महोदय की ओर से प्रशंसा पत्र भेजा गया।

पुरस्कार

- विभागीय शोध पत्रिका 'मौसम' में "पश्चिमी राजस्थान के लिए पवन चक्कियों द्वारा विद्युत उत्पादन हेतु वायु विश्लेषण" विषय पर हिंदी में शोध पत्र लिखने के लिए मौसम कार्यालय-जैसलमेर के वैज्ञानिक [ई] श्री बद्रीनारायण बिश्नोई को माननीय मंत्री महोदय द्वारा स्थापना दिवस के अवसर पर मौसम शोध पुरस्कार के रूप में 20000/-रु. नकद और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।



आपकी पाती मिली

आपके गुणात्मक एवं सर्जनात्मक सतप्रयास से 'मौसम-मंजूषा' के अठारहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार। पत्रिका में प्रकाशित वैज्ञानिक, जीवनोपयोगी, तकनीकी एवं ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डालने वाले आलेख एवं कविताओं व अन्य जानकारियों को संजोकर आपने इसे संग्रहणीय बनाया है, जिसकी जितनी तारीफ की जाए कम है।



डॉ. बी.एम.तिवारी

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं

सचिव, नराकास भिलाई-दुर्ग (छत्तीसगढ़)

मौसम मंजूषा के 17^{वें} एवं 18^{वें} अंक तथा मौसमी बयार की एक एक प्रति प्राप्त हुई। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख तथा कविताएं अत्यंत ज्ञानवर्धक, मनोरंजक तथा मर्मस्पर्शी हैं। इन्हें पढ़कर मन आनंदित हो उठा है। इनके माध्यम से न सिर्फ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायता मिलेगी बल्कि पाठकों में हिंदी साहित्य के प्रति रुचि भी उत्पन्न होगी।

विषयों के उत्कृष्ट चयन और पत्रिका के सुंदर प्रस्तुतिकरण के लिए संपादक-मंडल बधाई का पात्र है।



उदय शंकर श्रीवास्तव

संयुक्त निदेशक (प्रशासन)

सीमा सड़क महानिदेशालय

दिल्ली छावनी नई दिल्ली

हिंदी गृह पत्रिका मौसम मंजूषा के 18^{वें} अंक व मौसमी बयार के सफल प्रकाशन हेतु आपको तथा आपके समस्त अनुभाग को बहुत बहुत बधाई।

आपके द्वारा भेजी गई हिंदी गृह पत्रिका मौसम मंजूषा का 18^{वें} अंक व मौसमी बयार मुझे मिले। पढ़कर बहुत आनन्द की अनुभूति हुई। आपने मेरे द्वारा रचित कविता 'योगदान' को इसमें स्थान दिया इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप हमें इसी प्रकार प्रोत्साहित करते रहेंगे।



कालूराम शर्मा

वैज्ञानिक सहायक

बेतार ध्वनि/बेतार वायु वेधशाला

जोधपुर

मौसम मंजूषा से हाल ही में रूबरू होना एक सुखद एहसास रहा मेरे लिए। पत्रिका का कलेवर देख लगा कि उससे दोस्ती लाजमी है। अतः बातचीत शुरू की तब पाया कि पत्रिका तो गागर में सागर है। उसने कहा कि 'मैं हूँ गागर में सागर'। और यह सत्य है। अंक 18 से मुखातिब हूँ मैं, मुख्य पृष्ठ के विहंगम प्रकृति चित्र से लेकर अंत तक यह पत्रिका कुछ कहती प्रतीत होती है। वैज्ञानिक व तकनीकी पृष्ठभूमि लिए ज्ञानवर्द्धक व रोचक लेख-सरल भाषा में। इन्द्रधनुषी, कानों में फुसफुसाती प्रेरणा से भरी कविताएं एवं गुनगुनाते संस्मरण, व्यंग्य व साक्षात्कार, यादें साथ लिए। स्थान-स्थान पर सूक्तियाँ हिंदी के प्रति प्रेम जगाती एवं कुछ कहती-राजभाषा की गतिविधियों की रिपोर्ट, सकारात्मक लेख, वैज्ञानिक दृष्टिकोण लिए पर रोचक। साधुवाद सभी लेखकों को जनमानस तक वैज्ञानिक जानकारी पहुँचाने के लिए सरल भाषा में। है यह कार्य कठिन पर रहे सभी सफल इसमें। लेख-चाहे पर्यावरण पर हो या वायुमंडल, क्षोभमंडल, भूमंडल, बादलों में बिजली, जल संकट, राष्ट्रीय पंचांग, वास्तु कला, रानी चौरी या राष्ट्रीय जज्बे का यादगार दिन-सभी अपने में श्रेष्ठ हैं। अपनी बात हम तक पहुँचाते हुए सभी लेख हमारा ज्ञान बढ़ाते हैं और उस पर सोने पे सुहागा है साक्षात्कार ओ.पी.सिंह साहब का अनुराधा जी के द्वारा लिया गया। स्वामी विवेकानंद बहुत ही प्रेरणादायक। कश्मीर की यात्रा झकझोरने वाली पर बहुत प्यारी। नोमोफोबिया आजकल किस में नहीं है। यादों के झरोखें मुस्कुराते हुए। हिंदी दिवस की रिपोर्ट बताती है हिंदी विभाग के अथक सार्थक प्रयास व प्रयत्न। पत्रिका में मैत्री से मुहब्बत, मेरे पप्पू, जल ही जीवन, काश, लहरें, समुद्र, लक्ष्य आदि कविताएं गुदगुदाती ही नहीं वरन ठहरा देती है पाठक को कुछ सोचने के लिए। साधुवाद संपादक रेवा शर्मा को एवं उनके सभी सहयोगियों को एक स्तरीय, ज्ञान से भरपूर रोचक व संग्रहणीय पत्रिका के प्रकाशन पर।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम, चित्र इसमें खिलखिलाते हैं और सूक्तियाँ हिंदी से जुड़ने को प्रेरित करती हैं। संरक्षक व संपादक मंडल इसी प्रकार भविष्य में भी हम तक नयी-नयी जानकारी पहुँचाते रहें इसके लिए उन्हें ढेर सारी शुभकामनाएं। भविष्य उज्ज्वल हो ऐसी कामना है। आओ हिंदी में लिखें, हिंदी से जुड़ें आओ हिंदी पढ़ें।



उमेश मेहता

3380, बका स्ट्रीट

हौज काजी, दिल्ली

आपके द्वारा प्रेषित निबंध सागर-2014 का अंक-2 प्राप्त हुआ है। मौसम विज्ञान विभाग की पत्रिका का यह अंक वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी को जन साधारण तक पहुँचाने का सार्थक प्रयास है। पत्रिका में प्रकाशित निबंध, लेख एवं अन्य सामग्री रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। कलेवर, संकलित सामग्री और प्रस्तुति प्रशंसनीय है। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में यह योगदान प्रशंसनीय है।

मैं पत्रिका के समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।



एस. सी. झा.

प्रबंधक(मा.सं.)

**ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड
नई दिल्ली**

आपके विभाग द्वारा निबंध सागर- 2014 पत्रिका को 01 प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

उक्त पत्रिका में अखिल भारतीय विभागीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता योजना के अंतर्गत पुरस्कृत निबंधों को संकलित कर प्रकाशित किया गया है। खासकर 'मौसम विज्ञान का विकास-आदिकाल में आधुनिक काल तक' प्रकाशित निबंध पाठकों के लिए ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी है।



डॉ. बी.एम.तिवारी

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं

सचिव, नराकास भिलाई-दुर्ग (छत्तीसगढ़)

‘निबंध सागर’ 2014 के अंक 2 की एक प्रति अकादमी को प्राप्त हो गई है। इसमें संकलित निबंध ज्ञानवर्धक, रोचक, प्रासंगिक और व्यवहारिक हैं। इस अंक से हमें अक्षय ऊर्जा और इसके भविष्य में स्रोतों की भूमिका, मौसम में बदलाव, ग्रीन हाउस गैसों के दुष्प्रभाव, लुप्त हो रहे प्राणी तथा मौसम पूर्वानुमान एवं मौसम विज्ञान के इतिहास की गहन जानकारी प्राप्त हुई है। यह पुस्तक हमें बहुत अधिक पसंद आई है। उम्मीद है कि भविष्य में भी आप हमें पुस्तकें भेजना जारी रखेंगे।



जगदीश कुमार

अनुभाग अधिकारी (अनुवाद एवं राजभाषा)

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली

‘निबंध सागर का अंक- 2 बेहतरीन है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर अनेक ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक निबंधों से सुशोभित इस संकलन की अपनी अलग उपयोगिता एवं महत्व है। अपने कार्मिकों द्वारा लिखित और पुरस्कृत निबंधों का इस प्रकार से संकलन किए जाने और उसे पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय है। इसके लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।



सूर्यभान गौतम

संयुक्त महाप्रबंधक(राजभाषा)

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

कविताओं से मुझे है बचपन से प्यार, तो क्यों न पढ़ूँ ‘मौसमी बयार’। साधुवाद भारत मौसम विज्ञान विभाग को एक सकारात्मक साहित्यिक पहल के लिए। ‘मौसमी बयार’ छोटी सी पुस्तिका है कविताओं की, पर पर्यावरण और मौसम को जमीन बना जो कविताएं इसमें हैं वे कह जाती हैं बहुत कुछ। झकझोर जाती हैं मन और तन और कहती है अभी है वक्त संभलो नहीं तो आने वाली नस्ले तुम्हें दोष देंगी, उनके तकलीफदेह भविष्य के लिए किताब की भूमिका ही बहुत कुछ आगाह कर देती है। फिर कविताएं तो मर्म हैं ही जिन्दगी का। ओम प्रकाश सिंह की कविताएं बेजोड़ बन पड़ी हैं अपनी जगह। एक मुट्ठी चांदनी, और ‘थोड़ी सी धूप’ के लिए तरस रहे हैं वे जिन्होंने भरी थी ऊँची उड़ान या अग्नि की गोद में पला और अंगारों से खेला ‘सूर्य अपनी काया जलाकर दूर करता है तमस। इसी तरह सभी कविताएं संदेश देती हैं। ‘क्यों ठहर गया मौसम, सूखे की कहानी, सुनामी, एंटार्कटिका यात्रा, अन्नदाता, मेघा तू जल बरसा, फितरत, मौसम, धूप, हवाएं बहती हैं एवं अन्य। धूप बीते, मौसम की याद दिलाती है। हवाएँ लेकर जा रही हैं गुलाबी धूप को।

एक बेहतरीन सजी संवरी छोटी सी किताब- मौसम के मर्म व महत्व को समझाती हुई- भावनाओं से, मेरी, आपकी व कवि की। जिंदगी है न, कविता पढ़ो गुनगुनाओ और उम्मीद है निकट भविष्य में एक और काव्य विशेषांक से होगी मुलाकात। कुछ मौसम की, कुछ अपनी और कुछ आपकी।

सभी कवियों के लिए शुभकामनाएं। और उम्मीद कि जब उठ खड़े हैं दो हाथ, तो कुछ कर दिखाएंगे आप। किताब का शीर्षक ‘मौसमी बयार’ बहुत सटीक बन पड़ा है।



उमेश मेहता

3380, बका स्ट्रीट

हौज काजी ,दिल्ली

सांस्कृतिक कार्यक्रम (हिंदी दिवस- 2013)

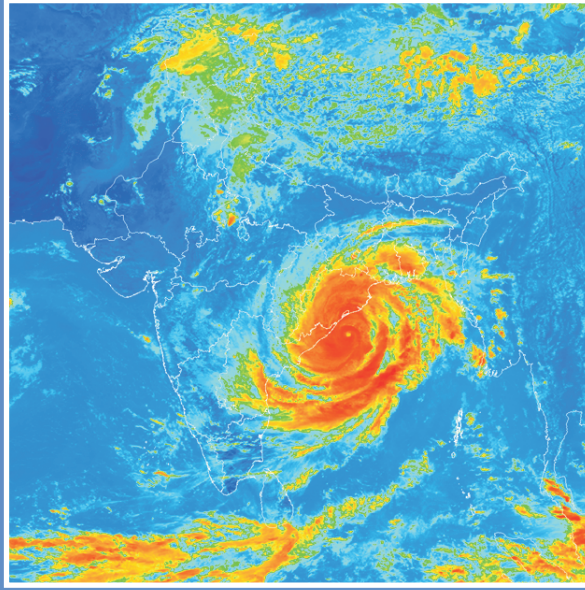




मौसम-संजूषा

संस्करण : 19

वर्ष : 2014



परिकल्पना एवं मुद्रण,
मौसम कार्यालय मुद्रणालय,
अपर महानिदेशक (अनुसंधान), कार्यालय
पुणे.